

**Press Information Bureau
Government of India
Prime Minister's Office**

16-January-2016 23:55 IST

Text of PM's speech at the launch of Start-Up India, Stand-Up India programme

आज Saturday है, सरकार का स्वभाव छुट्टी का होता है और 6 बजने का बाद तो सवाल ही नहीं उठता है। अगर कोई आपको पूछे कि फर्क क्या है, तो फर्क यही है। मैं भी कभी सोचता हूँ कि मुझे भी आप जैसी कोई ताकत दी होती। जब रितेश को सुन रहा था तो मुझे विचार आ रहा था कि एक चाय बेचने वाले ने Hotel Chain का विचार क्यों नहीं किया लेकिन हो सकता है कि मेरे नसीब में, नरेंद्र मोदी चाय बेचने वाला कुछ कर पाए या न कर पाए लेकिन देश के करोड़ों नौजवान कुछ कर पाएं ये उम्मीद तो मेरे दिल में भरी हुई है। जब मैंने 15 अगस्त को लालकिले से कहा Start-Up India, Stand-Up India तो ऐसे ही हवा के झोंके की तरह बात आई और चली गई, कहीं Registry नहीं हुई लेकिन आज शायद सौ, सवा सौ दिन के बाद अब ये Register होगी कि Start-Up India है क्या।

Seeing is believing आज देशभर के IIT's में नौजवान आपको देख रहे हैं। देश के कई स्थानों पर युवा सुबह से इस कार्यक्रम को, वे भी आपके साथ हिस्सेदार हैं। ज्यादातर लोगों को लगता है कि सरकार ये करेगी तो ये होगा, सरकार ये करेगी तो ये होगा। मेरी सोच थोड़ी अलग है। मेरी सोच है कि सरकार ये न करेगी तो इतना सारा होगा और इसलिए आज आप सबको इसलिए आपको इकट्ठा किया है कि आप हमें बताइए कि क्या-क्या नहीं करना है। 70 साल तक बहुत कुछ किया हमने और हम कहां पहुंचे और मैं कहता हूँ कि एक बार हम न करने का निर्णय करें तो ये लोग 10 साल में देश को कहां से कहां पहुंचा सकते हैं। देश के हर इंसान के दिल में एक ख्वाब होता है, उस ख्वाब के साथ उसके दिल में कुछ विचार भी होता है, ideas भी होते हैं। कुछ लोगों को ideas हर दिन होते हैं और शाम होते-होते बाल मृत्यु हो जाता है। लेकिन कुछ लोग होते हैं जो ideas के साथ involve हो जाते हैं, वो उससे बाहर नहीं निकलते हैं और पूरा परिवार परेशान हो जाता है कि ये कुछ करता नहीं है, बस इसी में लगा रहता है, किसी से बात नहीं करता है, यार-दोस्तों से नहीं मिल रहा है, क्या हो गया है इसको, कहीं पागल तो नहीं हो गया है लेकिन वही एक दिन कुछ कमाल करके दिखा देता है। तब पूरे परिवार को लगता है नहीं-नहीं साहब इसमें तो पहले से ही ऐसा था। आपके सबके जीवन में से एक अनुभव आया होगा। जो सर्वनाश आपने सुना किसी मां ने कहा हो या न कहो लेकिन कम-अधिक मात्रा में सबको अनुभव आया ही होगा क्योंकि ज्यादातर ये first generation entrepreneur है whole Start-Up और जब कुछ सोचोगे तो नहीं बेटे, अपना काम नहीं तू कहीं नौकरी कर ले। शुरू में जब दोस्तों ने सुना होगा बहुत मजाक उड़ाया होगा, उपहास किया होगा, जाते-आते आपको उसी नाम से सुनाते होंगे, ये कुछ करने वाला है, ये कुछ करने वाला है फिर एक पल आया होगा सारी ओर विरोध हुआ होगा, सब दूर, परिवार के लोगों ने विरोध किया होगा, ये नहीं करना है, जाओ, कमाओ, नौकरी कर लो, देखो उसका पहचान है, वो नेताजी को जानते हैं, जाओ उसको मिल लो। उस विरोध के बावजूद भी जो टिके होंगे, आज सब लोग कहते होंगे यार, इसने तो कमाल कर दिया, कुछ ऐसा मुझे भी करना है। हर किसी के Start-Up की जिंदगी की यही कहानी है। एक भीतर से ऊर्जा होती है, भीतर से सपने होते हैं, भीतर से उसके साथ खप जाने का इरादा होता है तब जाकर के परिस्थितियां पलटती हैं और दुनिया में हर किसी ने यही किया होगा। कभी आज हम सोचें कि उन्होंने 1423, I think 1423 है, कोलंबस जब निकला होगा क्या मिलने वाला था लेकिन उसको लगा होगा कोई एक नया route मुझको खोजना है, विश्व को मुझे जोड़ना है और वो चल पड़ा, चलने से पहले उसने ढेर सारी चीजों का अध्ययन किया होगा। Technology develop की होगी और नया एक spice route दुनिया को दिया होगा। आज, आज जो

space में काम कर रहे हैं, शुरू जब हुआ होगा तो लोग मजाक उड़ाते होंगे, यार ये क्या कर रहे हैं। हर चीज की कहीं शुरूआत होती है तो जो करता है, उसी को दिखता है, क्या होने वाला है औरों को वही दिखता है कि ये पागल है और इसलिए जिन्होंने यह सफलता पाई है, वे सिर्फ entrepreneur नहीं है। एक प्रकार से adventure उनकी प्रकृति का हिस्सा है तब जाकर के होता है। Start-up की success सिर्फ entrepreneurship की quality से नहीं है। risk taking capacity, adventure करने का इरादा ये उसके साथ जुड़ता है और तब जाकर के हम दुनिया को कुछ दे सकते हैं।

Start-up, मैं कल Adam से बात कर रहा था। वो बड़ा interesting है, उसको मिलने जैसा है। उसको हिन्दु स्टारन की spiritual दुनिया में बड़ा interest है, लेकिन उसने मुझे एक बात अच्छीज बताई। वो कह रहा है जो पैसे कमाने के इरादे से आता है वो कभी Start-up कर ही नहीं सकता। जो कुछ करने के इरादे से आता है, पैसे उसके लिए by product होते हैं और आप सब ने देखा होगा कि आप लोगों ने जब शुरू किया होगा तब आपने bank balance क्या होगा, ये कभी नहीं सोचा होगा लेकिन किसकी जिन्दगी में क्या बदलाव लाता हूँ यह सोचा होगा, तब हुआ होगा। उबर कुबेर बन गया। हमारे यहां कुबेर भंडारी होते थे न पहले। मैं नहीं मानता हूँ कि उसने पहले सोचा होगा। उसने पहले यही सोचा होगा कि भई लोगों की समस्या का मैं समाधान कैसे करूँ, सस्ते में कैसे करूँ और उसमें से एक व्यवस्थी विकसित हो गई।

जब Start-up की चर्चा होती है तो ज्यादातर IT के आस-पास ही सोचा जाता है और अब हर कुछ कितने कदम दूर है, बस App के पास पहुंच गए, हो गया। हर समस्या का समाधान App. खैर मैं उससे बहुत beneficiary हूँ क्योंकि मैंने Narendra Modi App शुरू किया है। मुझे इतने नए युवा विचार मिलते हैं। इतने लोगों से जानने को मिलता है और मैं आपसे भी आग्रह करता हूँ। देश भर के इस प्रकार के Start-up और दुनिया भर के लोगों से मैं कहता हूँ आप मेरे App के साथ जुड़कर के अपनी success story बताइए, मैं दुनिया को बताऊंगा क्योंकि यही viral होने वाला है। success story ही viral होने वाली है और लोगों का मन मन्दिर जो है वो सफलता को जकड़ने वाला है। निराशा का माहौल चला गया है, गया वो दिन पूरे हो गए। आशा, विश्वास, कर गुजरने का इरादा ये समय नज़र आ रहा है और वही स्थिति को बदलता है। वही परिस्थितियों को परिवर्तित करने की ताकत रखता है और वो मैं अनुभव कर रहा हूँ और आज मैं जैसे ही यहां enter हुआ, सब ने मुझे एक ही रिपोर्ट किया, साहब क्या energy है इस कार्यक्रम में। ये विज्ञान भवन कोई पहली बार भरा नहीं है लेकिन energy पहली बार भरी है और ये सभागृह में वो energy होगी लेकिन ये पूरे हिन्दु स्टाहन के नौजवानों के मन मन्दिर का प्रतिबिम्ब है यहां पर, उनकी आशा-आकांक्षाओं की प्रतिध्वनि है यहां पर। और उस अर्थ में इसका अपना एक महत्व है।

जो App बनाता है या जो Start-up की दुनिया में enter होता है या कोई नई चीजों को innovate करता है उसके मूल में कुछ नया करने का इरादा होता है, adventurous nature होता है। हर चीज की गहराई में जाने का स्वभाव होता है लेकिन सबसे बड़ी बात होती है उसके अंदर एक संवेदना होती है। बहुत कम लोग इस बात को अनुभव कर पाएंगे, उसके अंदर एक संवेदना होती है और जब वो कोई बुरे हाल देखता है, कोई समस्या देखता है, वो उसे सोने नहीं देती। समस्याओं उसकी नहीं है, किसी और की है लेकिन वो उसे सोने नहीं देती। उसका मन करता है मैं कोई रास्ता खोजूँ, मैं कुछ करूँ इसके लिए।

मैं अभी बाहर आपका virtual exhibition देख रहा था। वहां मुझे एक simple चीज किसी ने बताई। एक ऐसा ही pad था hardboard का और build था। अब इतने बड़े Start-up की दुनिया में उसको कहां रखा होगा वहां, मैंने पूछा। बोले साहब हमारे देश में बहुत सारे accidents होते हैं। accident होने के बाद जो injured व्यक्ति है उसकी हड्डी तो टूटती ही टूटती है। उसको ले जाना है तो medical services के लोग आएंगे तब तक क्या करे? तो उन्होंने एक hardboard पर एक सामान्य चीज बनाई है, उसके पैर के नीचे लगा दो, पट्टी कैसे बांधें, उस पर सब लिखा हुआ है। बोले कोई खर्चा नहीं है। अब इसका मतलब कि उसके दिल में आग लगी होगी। कि एक accident होता है, बेचारा कितना परेशान होता है। ले जाते ही दो हड्डियां

और टूटती हैं। उसमें से उसने सोचा और वो एक innovation बन गया। किसी के लिए जो दर्द होता है, जो हमें दुआ देने की ताकत दे या न दे, हमारे भीतर एक ऐसी अवस्था पैदा करते हैं जो इन लाखों-करोड़ों के दर्द को दूर करने का कारण बन जाती है और तब Start-up होता है और इसलिए आपका ये Start-up का अभियान, ये bank balance, और रुपए-पैसे कितने हैं, उसके साथ जुड़ा हुआ नहीं है, जन सामान्य को समस्याओं से मुक्ति दिलाना, सुविधाओं को सरल करना, इस एक महत्वपूर्ण काम को करने की ताकत रखता है। और इसलिए अगर हम हमारे आस-पास बारीकी से देखे तो हमें लगेगा यार, भगवान ने मुझे बुद्धि दी है, मैं पढ़ा हूँ, मैं technology जानता हूँ। मैं सोचू इसका समाधान, मैं खोजू कुछ और फिर वो शुरू कर देता है। हर कोई, सामान्य मानविकी क्या करेगा, बेचारा उससे जूझेगा या तो व्यवस्था को कोसेगा। कहेगा ये नहीं किया, वो नहीं किया। मीडिया वाला होगा तो रिपोर्ट कर देगा। समस्या वैसी की वैसी रह जाएगी। लेकिन जिसके मन में ये जो चेतना पड़ी हुई है वो उसका उपाय खोजेगा और वो Start-up का कारण बनता है।

अब यहां इतने नौजवान हैं। मेरे मन में आता है कि आप लोग सोचिए। हमारे देश का किसान इतनी मेहनत करता है, इतनी मेहनत करता है और जो अनाज की पैदावार होती है, बहुत मात्रा में वो waste जाता है, बर्बाद होता है। अब पुराने जमाने के infrastructure, उसके लिए पैसे, ये व्यवस्थाएं, क्योंकि मेरा कोई नौजवान उस पर दिमाग लगाकर के ऐसी व्यवस्थाएं विकसित कर सकता है कि जो affordable हो और इतना बड़ा हमारा जो wastage है वो बच जाए। हो सकता है शायद दुनिया के अनेक गरीब देशों का पेट भर सकते हैं, इतना wastage. हमारे फल-फूल, सब्जी, फल पैदा करने वाला किसान पहाड़ियों में रहता है, शहर में आने तक बेचारे का माल खराब हो जाता है। हम वो क्या technology दे, क्या, व्यवस्था दे आधुनिक।

मैं अभी एक दिन कुछ ये aerated water बनाने वाली कंपनियों से मिला था। मैंने कहा आप इतना बढ़िया-बढ़िया बनाते हो, पेप्सी और कोला और न जाने क्या-क्या है, नाम भी मुझको मालूम नहीं। क्योंकि ने आप 2%, 5% natural fruit juice, compulsory उसका हिस्सा बना दे, हिन्दुस्तान के हर किसान जो पैदावार करता है अपने आप बिक जाएगी। अगर इस पर कोई सोचे। अब देखिए आज हमारे ही देश के वैज्ञानिकों ने pharmaceuticals के द्वारा हमारे ही लोगों ने vaccine पर काम किया। आज दुनिया के अधिकतम देशों में, अधिकतम गरीब लोगों को, सस्ते में सस्ता बालकों को जो vaccine कहीं से पहुंचता है वो भारत के वैज्ञानिकों के द्वारा किया हुआ होता है।

और इन दिनों जितने भी लोग मुझे मिलते हैं वो कहते हैं साहब हमारी मांग बहुत है, इसके production के लिए और क्या रास्ता निकाले। लोग अपना donation देने के लिए तैयार होते हैं कि हम, हमने जो भारत के लोगों ने vaccine की दिशा में कितने करोड़ों-करोड़ों बालकों की जिन्दगी बच रही है। जिसने lab में बैठकर के काम किया होगा, जिसने concept सोचा होगा, उसकी तो उस समय पहचान नहीं हुई होगी लेकिन आज लगता है कि उसने कितनी बड़ी मानवता की सेवा की है।

हम ऐसी कौन-सी चीजें करें जिसके कारण हमारे यहां अब जैसे हमारे यहां atomic energy वालों ने onion को लंबे समय तक बचाने के लिए काफी व्यवस्थाएं विकसित की हैं क्योंकि प्याज के दाम कभी ऊपर-कभी नीचे चले जाते हैं तो सरकारों की सांस भी ऊपर-नीचे हो जाती है। क्यों, क्योंकि वो लंबे समय तक रहता नहीं है, खराब हो जाता है। उत्पादन ज्यादा हुआ तो भी किसान मरता है, उत्पादन कम हुआ, लेकिन उसको preserve करने की व्यवस्थाएं जब विकसित होती हैं। atomic energy वाले इस पर काफी काम कर रहे हैं लेकिन वो इतना costly होता है।

क्या हमारे Start-up की दुनिया के नौजवान ऐसी चीजों में जाएं। IT के दायरे से बाहर निकलकर के हम और ऐसे छोटे-छोटे पुर्जे, अब भारत में जुगाड़। मैं समझता हूँ शायद ऐसा innovative India दुनिया में कहीं नज़र नहीं आएगा। आज हर व्यक्ति के पास कोई न कोई innovation है। मैंने ऐसे लोग देखे हैं कि बिजली नहीं है तो अपनी मोटरसाइकिल से पंप चलाते हैं और

पानी निकालते हैं और खेत में पानी पहुंचा देते हैं। उसने अपने तरीके से ढूंढा होता है। ऐसे जुगाड़ करने वाले लोगों की कमी नहीं है। लेकिन वो जुगाड़ करता है, अपनी व्यावस्था को संभाल लेता है। लेकिन अगर हमारे पास उस प्रकार की दृष्टि हो, दर्शन हो। देखे तो हमें spark होता है यार इसको मैं scalable करूँ, ऐसी व्यवस्था मैं बना दूंगा।

हम जब 'मेक इन इंडिया' कहते हैं तो 'मेक फॉर इंडिया' भी हैं क्यों कि सवा सौ करोड़ का देश है, इतना बड़ा मार्केट है। लेकिन हम चाहते हैं कि वो full proof कैसे बने, आसान कैसे हो और सामान्या मानविकी के लिए वो easily accessible कैसे हो। ये अगर व्यवस्था एं देने में हम सफल हो और मैं मानता हूँ कि हमारे देश का नौजवान हमारी अपनी समस्याओं को। यहां किसी ने कहा कि मैं अगर उस देश को उसकी समस्याओं को समझूंगा, शायद तिवारी ने कहा। मैं अपनी समस्याओं को समझूंगा तब जाकर के मुझे रास्ते खोजने का सूझेगा और ये जितना हमारा बढ़ेगा देश के विकास के लिए बहुत संभावनाएं हैं। उन संभावनाओं को लेकर के छोटी-छोटी आवश्यकताओं से लेकर के बड़ी-बड़ी।

और Start-up का मतलब ये तो नहीं है कि हर किसी के पास बिलियन डॉलर का काम हो रहा है और दो हजार लोग काम करे, जरूरी नहीं है। पांच लोगों को भी अगर मैं रोजगार देता हूँ तो मेरा Start-up मेरे देश को आगे बढ़ा रहा है। एक psychological change लाना है कि youth के दिमाग में job seeker की मानसिकता से उसको बाहर लाना है। वो job creator बने। और एक बार उसके दिमाग में आ गया कि मुझे, मुझे दो लोगों की जिन्दगी को संभालना है, वो कर लेगा।

हमारे देश में education, infrastructure पर बल दिया जाता है, teacher की appointment पर बल दिया जाता है, वो काम हो भी रहा है। लेकिन समय की मांग है quality education की। गरीब से गरीब दूर-सुदूर जंगलों में रहना वाला व्यक्ति हो, पहाड़ों में रहने वाला व्यक्ति हो। मैं ऐसे कैसे चीजों को खोज के निकालूँ कि उसी quality का education जो कि अमीर घरानों के बच्चों को मिलता है, उस technology के द्वारा गरीब से गरीब तक मैं कैसे पहुंचाऊँ? और देश तब बदलेगा कि हम समाज के आखिरी इंसान को इन सुविधाओं से लाभान्वित करके उसकी जिन्दगी बदलने का अवसर दे। हमें उसको feed करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। अगर उसको quality education मिलता है तो वहां भी ऐसे spark वाले बच्चे होंगे जो उठकर के खड़े हो जाएंगे और दुनिया को बदल देंगे।

Health sector, आज health sector ज्यादातर डॉक्टरों पर dependent कम है, technology पर dependent है। डॉक्टर भी खुद technology पर dependent है। मशीन तय करता है कि तुम्हें क्या तकलीफ है फिर डॉक्टर कहता है ठीक है, किताब देखकर के, लो ले लो। इसका मतलब health sector में technology, innovation की संभावनाएं बढ़ती चली जा रही है लेकिन भारत जैसे देश में ये affordable कैसे हो, ये हमारे सामने चुनौती है। सस्ते में सस्ता व्यवस्था कैसे बने, इस पर हम सोचे, नयेपन से सोचे। और इसलिए Start-up कहने के बाद कुछ लोगों की सोच होती है, ये तो बड़ा हाई-फाई होगा, लैपटॉप के बाहर दुनिया कुछ नहीं होगी, मोबाइल से जुड़े होंगे। ऐसा नहीं है। ये लोग हैं जिन्होंने कोई न कोई कमाल किए हैं। यहां हर प्रकार के लोग हैं।

आप देखिए handicraft. भारत का handicraft दुनिया में अपना डंका बजाए, ऐसी आप App बनाकर के दुनिया में प्लेटफॉर्म क्यों न खड़ा करे। सिर्फ ई-कॉमर्स नहीं, हम उससे दो कदम आगे कैसे जाए और उसमें जैसी global requirement हो वैसी designing भी provide करे ताकि हमारा जो गरीब आदमी गांव में बैठकर के छोटी चीजें बनाता है उसको भी idea मिले कि नहीं ऐसा नहीं, ऐसा करो। यहां stitch मत करो, यहां करो, लकड़ी ऐसे मत रखो, लकड़ी ऐसे रखो। वो अपने आप बदलता रहेगा और आपकी requirement को पूरा करेगा। इसके लिए connectivity चाहिए, ये बड़ी requirement है और ये, ये काम आप नौजवानों के दिमाग से हो सकता है और इसलिए मैं जब कहता हूँ Start-up तो मैं ये मानकर चलता हूँ कि Stand up

India. इसके लिए मुझे अलग सोच करने की जरूरत नहीं है। जिस देश के पास 800 मिलियन 35 से कम आयु के नौजवान हो, जिस देश के नौजवानों के पास talent हो, हाथ में हुनर हो, अपरमपार सपने हो और पूरी दुनिया में अवकाश ही अवकाश हो, क्याह नहीं हो सकता।

आज मैं IT professionals से कहना चाहूंगा। विश्व के दुनिया के किसी भी देश के नेताओं से मैं मिलता हूं, दुनिया का कोई भी delegation आता है, उनकी जो बातें होती हैं उसमें एक चिन्ताम हर एक को सता रही है और वो है cyber security. हर कोई परेशान है cyber security को लेकर के। क्याह भारत cyber security provider के रूप में authority बन सकता है। एक बार हिन्दुस्तान का brand का cyber security का software मिल गया तो दुनिया की कोई ताकत उसको हिला नहीं सकती है, कर सकते हैं क्या? मानव जाति के लिए चुनौतियां आवश्यक हैं क्यों कि सिर्फिरे लोग तो है जो तबाही करने पर तुले हुए हैं लेकिन हम मानवता को बचा भी तो सकते हैं। हमारे पास इस प्रकार के लोग हैं और ये भी सही है भारत के पास millions of millions problem है, कोई इंकार नहीं कर सकता है। लेकिन at the same time मुझे इस बात का भरोसा भी है कि billions of billions mind भी है। अगर million problem है तो billion mind भी तो हमारे देश में है। हर Start-up के पीछे कोई न कोई समस्या के समाधान का इरादा रहना चाहिए और जब किसी Start-up के पास समस्या के समाधान का इरादा होगा तो उसके संतोष का level भी कहीं कुछ और होगा। जब किसी की जिन्दगी में बदलाव लाता है तो उसको एक satisfaction मिलता है और इसलिए मैं वो कुछ करके दिखाऊं जिसमें मैं job creator बनूं, मैं वो कुछ करके दिखाऊं जिसके कारण किसी की जिन्दगी में मैं काम आऊं, मैं वो कुछ करके दिखाऊं कि मेरे देश को एक कदम आगे ले जाने में मेरा भी कोई योगदान हो। इतना भी अगर सपना लेकर के हम चलते, हम बहुत कुछ कर सकते हैं।

आज यहां हमारे सामने एक action plan प्रस्तुत हुआ है। उस action plan की कुछ विशेषताएं हैं जो मैं आपके सामने प्रस्तुत करना चाहूंगा ताकि आप सुबह से सारी बातें सुन रहे हैं लेकिन आखिरकार ये भी तो हो कि क्या होने वाला है। सबसे पहला मेरा घोष वाक्य है कि सरकार बीच में न आए बस, बहुत कुछ हो जाएगा और उसी विचार के आस-पास जो भी चीजें बनाई हैं एक तो हमने महत्वपूर्ण निर्णय किया है वो है, self-certification आधारित compliance की व्यवस्था। Start-ups के लिए नौ श्रम और पर्यावरण कानून जो आपको प्रभावित करते हैं के संबंध में self-certification को हमने introduce किया है और एक बात 3 साल तक कोई inspection नहीं होगा और आप समझ सकते हैं कि जब Inspector नहीं आएगा तो कितनी सुविधा रहती है। दूसरी बात है Start-Up India hub, single point up contact, ये हम व्यवस्था खड़ी करने जा रहे हैं और hand holding की व्यवस्था है। Start-Up में जैसे इन नौजवानों में मैंने एक व्यवस्था देखी है, उनसे मैं कल से बातें कर रहा हूं, काफी कुछ मैं इनसे सीख रहा हूं। हर एक के दिमाग में एक चीज रही है कि वो अपना तो कर रहे हैं लेकिन Guardian के नाते, mentor के नाते बहुत अच्छा काम करे है, हर कोई कुछ न कुछ कर रहा है, ये अपना social contribution के रूप में कर रहे हैं, mentor के रूप में वो औरों को प्रोत्साहित कर रहे हैं और इसलिए Hand holding की व्यवस्था, उस पर हम बल देना चाहते हैं, एक मित्र के रूप में, एक सलाहकार के रूप में, एक साथी के रूप में सरकार कैसे आपके साथ काम करे। Mobile App और Portal इस वर्ष की पहली अप्रैल से Start-Up के लिए Online Portal और एक Mobile आधारित App के जरिए संचारित होने वाला एक छोटा सा form शुरू किया जाएगा। वरना हमारे यहां तो address भी लिखते हैं तो 10 line का होता है। फलां गांव, फलां गली के सामने, फलां मौहल्ले से गुजरते हुए, पिछली खिड़की में, मूलतः लोगों का स्वभाव हर चीज को बड़ा करना, लंबा करना है तो इसको एक Mobile Phone पर छोटा सा एक Form बन जाए, उस दिशा में हम काम कर रहे हैं और इसको Registration की व्यवस्था भी उसी प्रकार से होगी।

एक और problem रहता है Start-Up के लोगों के लिए.... patent का Intellectual property right सबके लिए ये एक बात रहती है आखिरकार वो ही तो पूंजी है Start-Up वालों की, अगर उसको protection नहीं मिला लेकिन कभी-कभी हमारे यहां

patent के लिए महीनों लग जाते हैं process में, ये चिंताजनक व्यवस्था को बदलना है और patent registration का शीघ्र पता लगाना एवं कानूनी सहायता। हम नए प्रयोगों को protect, कानूनी सहायता देने का आवश्यकता समझते हैं। हम Start-Up के IPR Services की Scheme ला रहे हैं। जिसमें Start-Up के आवेदन की File शीघ्र करने की सहायता मिलेगी और ये भी सही है कि Intellectual property की दुनिया में, विश्व में जितने registration हुए हैं, उसमें काफी पीछे हैं हम लोग। IP में नहीं है लेकिन YP में है। हमारे पास Youth Property है YP और वो मुझे YP और IP को मिलाना है ताकि हमें कुछ ज्यादा परिणाम मिलें। हम ये भी एक सोच रहे हैं कि भारत के प्रमुख शहरों में एक इस काम के लिए facilitation की व्यवस्था हो, स्थानीय Chamber of Commerce हो और लोगों के साथ मिलकर के, इस विषय के वकीलों का एक समूह हो। इन सबको जोड़कर के कैसे निशुल्क व्यवस्था हो ताकि इस field में काम करने वाले वकीलों की संख्या बहुत कम है और Fee भी बहुत ज्यादा है और उसको लगता है कि भई इस काम के लिए मैं इतने रूपए दूं और करता रहूं, करता रहूं और उतनी, उसकी property चोरी हो जाती है, बेचारा कहीं का रहता नहीं है तो इसलिए बिना पैसे उसको ये व्यवस्था मिले। उसी प्रकार से Fees में भी, आज जो Fees है patent के लिए उसमें हम 80 percent reduction करेंगे क्योंकि देखिए भारत का भविष्य भी Innovation और creativity में है और Innovation और creativity को जितना हम बल देंगे, उतना ही हमें परिणाम मिलेगा। हम Start-Up के लिए सार्वजनिक खरीद की शर्तों में भी छूट देने का निर्णय कर रहे हैं। सरकारी खरीद में Start-Up को बढ़ावा देने के लिए हम Experience Turn over के आधार पर भी छूट देंगे। हमारे देश में क्या problem है, कोई भी काम है तो पूछते हैं कितना Turn over है, वो कहता है मौका दोगे तभी तो Turn over शुरू होगा या कोई काम देते हैं तो पूछते हैं कि भई कितना experience है तो वो कहता है कि भई experience की शुरूआत तो करो कहीं से और इसलिए नए के लिए दरवाजे बंद करने की व्यवस्था है, हम उसमें छूट देने की व्यवस्था में आगे बढ़ने चाहते हैं ताकि quality को, हां उसमें compromise नहीं होना चाहिए लेकिन नया है इसलिए उसको मौका न मिले ये स्थिति तो बदलनी है तभी नौजवानों को अवसर मिलेगा लेकिन मेरा आग्रह है Zero defect and Zero effect तो इस पर हम जरूर बल देंगे।

एक और चिंता का विषय है हमारे देश में exit के लिए कोई व्यवस्था ही नहीं है। एक बार pipe में आ गए और इसलिए Start-Up के लिए सबसे पहले हम exit की व्यवस्था कर रहे हैं। हम ये भलीभांति समझते हैं कि एक विशाल और सफल कारोबार का निर्माण करने के लिए असफलताओं से बचा नहीं जा सकता है। असफलताएं होंगी और मैं सबसे ज्यादा असफलताओं के लिए हिम्मत करने वालों को promote करना चाहता हूं। जो पानी से भागता है, वो कभी तैरना नहीं सीख सकता है। एक बार तो डूबना ही पड़ता है तब जाकर के तैरना शुरू होता है और इसलिए इस बात को ध्यान में रखते हुए 90 दिन के भीतर Start-Up exit कर पाए, हम ऐसी व्यवस्था करने के लिए संसद में Bankruptcy Bill, 2015 हम लाए हैं और बाकी मुसीबत तो आप जानते हैं। अब आम नौजवान, अपनी twitter, Facebook की दुनिया में message दीजिए, काम अटका पड़ा है Parliament में, हो सकता है अब समझेंगे कुछ लोग। Fund of Funds, Start-Up की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अगले 4 वर्षों में 2500 crore रुपए की प्रतिवर्ष आवंटन के साथ 10,000 crore रुपए का dedicated फंड बनाया जाएगा। वैसे आपने देखा होगा, पिछले दिनों इस काम को शुरू किया है। Start-Up के लिए credit guarantee एक फंड आपके फंड संबंधी आवश्यकताओं में सहायता करने के लिए हम अगले 4 वर्षों में प्रतिवर्ष 500 crore रुपए की निधि के साथ आपके लिए credit guarantee scheme लाएंगे और इसके कारण मैं समझता हूं काफी सुविधाएं आपकी बढ़ जाएंगी। उसी प्रकार से Tax incentive, Start-Up के लिए वित्तीय संसाधनों को बढ़ाने के लिए हम सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त Funds के लिए निवेश किए जाने वाले Capital gain tax की छूट देना चाहते हैं, अब बाकी बात तो Finance Minister करेंगे लेकिन मैंने उनकी हाजिरी में बोल दिया है तो गाड़ी आगे चलेगी। कोई व्यक्ति अपनी संपत्ति को बेचने से आए हुए धन को, अपने ही Start-Up में लगाए तो Capital gain से उसको मुक्ति दी जाएगी। Start-Up से profit को 3 साल के लिए Income Tax से मुक्ति दे दी जाएगी।

Women entrepreneur की संख्या बढ़ रही है Women Start-Up की, मैं सरकार से कहूंगा कोई विशेष योजना उनके लिए बना सकते हैं क्या, हम Fair market value के ऊपर investment पर लगने वाले tax से संबंधित आपकी समस्याओं का समाधान भी करेंगे। Incubation and Industry Academia ये एक बहुत महत्वपूर्ण व्यवस्था है क्योंकि इसके बिना इस विषय को develop नहीं किया जा सकता है और उसके लिए Atal Innovation Mission (AIM) विश्वस्तरीय Innovation hub को बढ़ावा देने, technology आधारित Start-Up को competitive बनाना और उसके लिए एक Atal Innovation Mission प्लेटफॉर्म की शुरुआत कर रहे हैं। इसका उद्देश्य प्रतिभा, उपयोग की उद्यमियता को बढ़ावा देना तथा Incubators के Network को सुधार करना। इसके तहत sector specific Incubators को निर्माण करना है। 500 incubating labs तैयार होंगे, pre Incubation की अलग व्यवस्था की जाएगी, मौजूदा जो Incubation center हैं, उनको और बलवान बनाया जाएगा और Start-Up को seed capital भी दिया जाएगा।

Innovation को एक राष्ट्रीय स्तर पर award देने की दिशा में भी सोचा जाएगा, जिसके कारण इस बात को प्रोत्साहन मिले, उसके लिए अलग से व्यवस्था की जाएगी। वर्तमान में already 35 नए Incubation center तैयार करने का काम तो चल ही रहा है। Public Private Partnership का भी model इसमें लिया है और करीब 35 Public Private Partnership नए Incubation center बन रहे हैं। राष्ट्रीय जो संस्थाएं हैं उसमें 31 center of Innovation, 13 Start-Up centers और 18 Technology business Incubators की स्थापना का भी काम चल रहा है। अभी आपने IIT मद्रास का देखा, उन्होंने research park में जिस प्रकार से काम खड़ा किए, 100 से ज्यादा कंपनियां उस पर काम कर रही हैं। इसी प्रकार से हम 7 और center खड़े करना चाहते हैं देश में और उसके लिए करीब 100 crore rupees भारत सरकार देगी ताकि ये काम आगे बढ़े।

Bio technology भी एक बहुत बड़ा क्षेत्र है जिसमें हम जितना बल दें, उतना कम है और bio technology में entrepreneurship को बढ़ाने के लिए 5 नए bio clusters, 50 नए bio Incubators, 150 technology transfer offices और 20 bio connect offices बनाने का निर्णय किया है। विद्यार्थियों में भी एक talent रहती है इस विषय में even स्कूल के बच्चों में भी कुछ न कुछ स्वभाव innovation का रहता है, इसको बढ़ावा देना है क्योंकि भारत ने innovation में कुछ न कुछ कर दिखाना होगा तो छात्रों के लिए innovation आधारित कार्यक्रम शुरू किया जाएगा क्योंकि उनके अंदर ये जो spark पड़ा हुआ है, उसको अगर channelize करे तो देश को बहुत कुछ मिल सकता है। स्कूली छात्रों के लिए Innovation के core programme शुरू किए जाएंगे और 5 लाख स्कूलों में 10 लाख बच्चों पर focus करके इस काम को बढ़ावा दिया जाएगा। Incubator grant challenges, सरकार 10 ऐसे Incubator center की पहचान करेगी जो World class बनने की क्षमता रखते हैं, इनमें से प्रत्येक को सरकार की तरफ से 10 करोड़ रुपए की सहायता दी जाएगी।

Start-Up के लिए कोई न कोई event करने रहेंगे ताकि क्या हो रहा है इसका भी परिचय होना जरूरी है और इसलिए Start-Up fest इसकी एक परंपरा हमारे देश में बननी चाहिए। मैं जब 10 September में US गया, हमारे शुक्ल जी यहां बैठे हैं तो, काफी मित्र थे उस समय वहां US में Start-Up की दिशा में भारतीय लोगों ने बहुत कुछ काम किया है तो मैं हिंदुस्तान से 40 ऐसे Start-Up के लोगों को लेकर गया था और वहां पर एक joint event किया था। इतना inspiring था मैं काफी देर हर चीज को देखा था, भारत में भी हम Start-Up fest को परंपरागत रूप से खड़ा करना चाहते हैं, सरकार उसमें जितना भी मदद कर सकती है, वो करेगी ताकि हमारे नई पीढ़ी के लोगों को देखने को भी मिले और जैसा आपने कहा सर्व विनाश के सामने, उन्होंने कहा आज इस event से मुझे नए सपने देखने की ताकत मिली है। अब ये अपने-आप में एक बहुत बड़ा संदेश है। अगर हम लगातार इस बात को करते रहते हैं तो हमारे नए लोगों को भी, जो उनके मन में कुछ पड़ा होगा तो उसको वो एक अवसर मिल सकता है और उसका एक networking भी अच्छा कर सकता है तो जो योजना को आज मैंने आपके सामने प्रस्तुत किया है, इसके कुछ पहलू मैंने आपके सामने रखे हैं। मुझे विश्वास है कि ये event आने वाले दिनों में भारत की युवा

पीढ़ी को, भारत के talent को, भारत के लिए, मानवता के लिए कुछ न कुछ नया करने की ताकत देगी, प्रेरणा देगी। मेरी सभी नौजवानों को हृदय से बहुत बहुत शुभकामनाएं हैं। विश्व के अनेक भागों से जो लोग आए हैं, मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूं क्योंकि उन्होंने आकर के सबका हौंसला बुलंद किया है और भारत बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है, आगे बढ़ने वाला है और उसमें आप लोगों की अहम भूमिका रहने वाली है। बहुत-बहुत शुभकामनाएं, बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल तिवारी/हिमांशु सिंह/मुस्तकीम खान/मनीषा

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

29-फरवरी-2016 19:30 IST

बजट 2016-17 पर प्रधानमंत्री का वक्तव्य

इस बजट के लिए हमारे वित्त मंत्री श्रीमान अरुण जेटली जी को हृदयपूर्वक बहुत बहुत बधाई देता हूँ। गाँव, गरीब, किसान, महिलायें और युवा इस बजट का हमारा सबसे बड़ा फोकस है। इनके जीवन में qualitative change लाने के लिए इस बजट में कई योजनायें रखी गयी हैं।

यह बजट गरीबी से मुक्ति दिलाने के लिए समयबद्ध और व्यापक रूपरेखा प्रस्तुत करता है। किसानों की आया को दोगुना करने की दिशा में इस बजट में कई अहम कदम उठाये गए हैं। उनमें से एक महत्वपूर्ण कदम है - प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना जिसके तहत निवेश में अभूतपूर्व बढ़ोतरी की गयी है और हर खेत को पानी पहुंचाने की दिशा में एक बहुत बड़ा प्रयास है।

गाँव के विकास में बिजली और सड़क ...इस महत्व को मैं और आप हम सब जानते हैं। इस बजट में 2019 तक देश के हर गाँव को सड़क से जोड़ने का एक बहुत बड़ा अहम् संकल्प है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना में अब तक की सबसे बड़ी धनराशि का आवंटन किया गया है साथ ही साथ 2018 तक हर गाँव में बिजली की सुविधा देने की व्यवस्था भी इस बजट में स्पष्ट रूप से है।

इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को एक नयी ऊर्जा मिलेगी, गति मिलेगी, और सामान्य मानविकी जीवन में बहुत बड़ा बदलाव आएगा। हम यह साफ़ जानते हैं गरीब से गरीब को पूछो, सामान्य से सामान्य व्यक्ति को पूछो उसका एक सपना होता है अपना घर। हर गरीब का सपना है अपना घर। मिडल क्लास हो निओ मिडल क्लास हो उसका सपना कैसे पूरा करेंगे। सरकार की मदद के बिना यह संभव नहीं है और इसलिए इस बजट में वह सारे प्रावधान किये गए हैं जिसके कारण हाउसिंग सेक्टर को बल देगा और सामान्य से सामान्य मानवी को घर देगा।

इसके अलावा, किराए के घर में रह रहे लोगों को किराए की राशि के ऊपर भी इनकम टैक्स में छूट में बढ़ोतरी की गए हैं। पाँच लाख तक की आय वाले व्यक्तियों के लिए आयकर में कमी हुई है।

हमारे देश में गरीबों के नाम पर राजनीति बहुत हुयी। आप यह जानकर के चौंक जायेंगे कि एक गरीब माँ अपने बच्चों का खाना बनाने के लिए जो चूल्हा जलाती है उसके कारण उसके और उसके बच्चों के स्वास्थ्य पर गंभीर खतरा पैदा होता है। जो इस विषय के एक्सपर्ट हैं, जानकार लोग हैं उनका कहना है कि चूल्हे के कारण, उस धुएँ के कारण गरीब महिला के शरीर में एक दिन में 400 सिगरेट का जो धुआ होता है उतना धुआ उसके शरीर में जाता है। ऐसे गरीबी की रेखा के नीचे जीने वाले करोड़ों परिवारों को इस से मुक्ति दिलानी है और इसलिए ऐसे गरीब परिवारों को मुफ्त में गैस कनेक्शन देने का एक बड़ा ही महत्वपूर्ण निर्णय हमने किया है।

5 करोड़ गरीब परिवार जो आज चूल्हा जलाते हैं उन्हें धुएँ से मुक्ति मिलेगी। गरीब के स्वास्थ्य को लाभ होगा और पर्यावरण की भी सुरक्षा होगी। स्वास्थ्य के क्षेत्र में हमारी सरकार कई महत्वपूर्ण कदम उठा रही है।

कभी कभी एक आध बीमारी भी माध्यम वर्गीय परिवार, नव माध्यम वर्गीय परिवार और गरीब की जिन्दगी तबाह कर देती है और इसलिए बीमारी के समय उस परिवार के साथ खड़े रहने का इस सरकार ने निर्णय किया है। खासकर के सीनियर सिटिजन्स, वरिष्ठ नागरिक जिनको इसकी सबसे ज्यादा आवश्यकता होती है हमने उसके लिये भी योजनाएं प्रस्तुत की हैं। हमारा देश सुरक्षित रहे हर देशवासी सुरक्षा का एहसास करे, इन बातों को ध्यान में रखते हुए सुरक्षा क्षेत्र में हमारी सेना सक्षम बने, सैनिक सबल बनें और आधुनिक सुरक्षा संसाधनों से लैस हों, रिटायरमेंट के बाद वन रैंक वन पेंशन मिले। भारत के अन्दर defence manufacturing को और बल मिले और सेना को आधुनिक बनाने की दिशा में अनेक महत्वपूर्ण काम हों वह इस बजट में स्पष्ट किया गया है।

इस बजट में आपने देखा होगा कि infrastructure में करीब करीब दो लाख करोड़ रुपये से भी अधिक प्रावधान किया गया है। उसका फायदा जो सीमावर्ती क्षेत्र हैं जहाँ हमारे सेनायें तैनात हैं, उनको जरूर मिलेगा। भारत का युवा आगे बढ़ रहा है। उसके रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए दो नयी पहल formalizing the informal और employing the unemployed. इसे हम शुरू करने जा रहे हैं। साथ ही साथ starts ups क्योंकि मेरा तो मंत्र है Start Up India-Stand Up India. Starts ups के लिए एक अनुकूल ecosystem तैयार करने के लिए taxes में प्रावधान रखे गए हैं। हमारे देश

का दलित, आदिवासी अब entrepreneur बनना चाहता है। उसके सपने हैं वह Job Seeker नहीं job Creator बनना चाहता है। उस सपने को साकार करने के लिए सरकार ने एक विशेष entrepreneur hub स्थापित करने का निर्णय किया है। देश का युवा वैश्विक चुनौतियों का सामना करे और उसे शिक्षा और तालीम के क्षेत्र में वैश्विक स्तर के अवसर मिलें इसके लिए पुराने कानूनों के नियमों को और बंधनों से हमारी शिक्षा दब गयी है। उसे ऊपर उठाकर सरकारी और निजी क्षेत्र में 10-10 institutions को वैश्विक स्तर पर लाने के लिए एक चैलेन्ज रूट के द्वारा चुना जाएगा। शिक्षा और higher के क्षेत्र में यह बहुत बड़ा अहम् सुधार है। उनको आर्थिक मदद भी दी जायेगी और एक बार उच्च शिक्षा संस्थान का competition का माहौल बनेगा, आप कल्पना कर सकते हैं कि कितना बड़ा परिवर्तन आएगा।

लेकिन साथ साथ प्राथमिक शिक्षा इसका भी उतना ही महत्व है। इतने सालों तक ज्यादातर सरकारों का प्राथमिक शिक्षा के प्रसार की तरफ ध्यान रहा जो आवश्यक भी था लेकिन आज की चुनौतियों का अगर सामना करना है तो शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले , दूर सुदूर गाँव में रहने वाले बालकों को भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले उस पर हम बल दे रहे हैं और उसके लिए इस बजट में गुणवत्ता पर बल देने वाले विषयों को प्राथमिकता दी गयी है। हमारी सरकार हमेशा देश की जनता पर भरोसा रखने के पक्ष में रही है। हमें देश के नागरिकों पर आशंकाएं नहीं करनी चाहिए। इनकम टैक्स विभाग के लोगों ने उनके प्रति सम्मान का भाव रखना चाहिए और इसलिए इनकम टैक्स विभाग की जटिल प्रक्रियाओं से सामान्य नागरिक को जो गुजरना पड़ता है , उस से उसको मुक्ति मिलनी चाहिए। व्यापारियों और प्रोफेशनल्स को जो तकलीफ हो रही है उससे हमें मुक्ति दिलानी है। इस बजट में सामान्य आय वाले इस वर्ग को turn over पर presumptive tax भरने से इन प्रक्रियाओं से मुक्ति मिल जायेगी। यह एक बहुत बड़ा सरलीकरण है इस बजट में किया गया है।

मैं फिर एक बार श्रीमान अरुण जेटली जी को बधाई देता हूँ, और देशवासियों को विश्वास दिलाता हूँ कि यह बजट आपके सपनों के करीब है। आपके सपनों को साकार करने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को पूरी ताकत के साथ, योजना के साथ प्रस्तुत किया है।

बहुत बहुत धन्यवाद

अतुल कुमार तिवारी / हिमांशु सिंह

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

13-फरवरी-2016 14:38 IST

मुंबई में मेक इन इंडिया सप्ताह के उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री का भाषण

महामहिम, स्वीडन के प्रधानमंत्री,

महामहिम, फिनलैंड के प्रधानमंत्री,

महामहिम, पोलैंड के प्रथम उप प्रधानमंत्री,

मंत्रियों, महानुभावों और अन्य देशों के गणमान्य व्यक्तियों ,

महाराष्ट्र के राज्यपाल,

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री,

वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री,

आमंत्रित व्यक्तियों, उद्योग जगत की हस्तियों, देवियों और सज्जनों !

मैं 'मेक इन इंडिया सप्ताह' के समारोह का एक हिस्सा बनने पर बहुत खुश हूँ। मैं भारत की वाणिज्यिक राजधानी मुंबई में आप सभी का स्वागत करता हूँ। मैं विशेष रूप से विदेश से आए अपने मित्रों का स्वागत करता हूँ और उन्हें उनकी सक्रिय भागीदारी के लिए धन्यवाद देता हूँ। मैं इस आयोजन की मेजबानी के लिए महाराष्ट्र सरकार और अन्य राज्यों को उनकी सक्रिय भागीदारी के लिए भी धन्यवाद देता हूँ।

दोस्तों,

मैं जब एक साल पहले मेक इन इंडिया पहल की शुभारंभ की ओर देखता हूँ तो मैं अपने युवाओं की आकांक्षाओं का भी स्मरण करता हूँ। भारत की 65 प्रतिशत आबादी 35 साल की उम्र से भी कम की है। यह युवा ऊर्जा हमारी सबसे बड़ी ताकत है।

हमने युवाओं के लिए रोजगार जुटाने और स्व- रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए मेक इन इंडिया अभियान की शुरुआत की है। हम भारत को वैश्विक विनिर्माण केंद्र बनाने की दिशा में जोरदार तरीके से काम कर रहे हैं। हम अपने सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में विनिर्माण का हिस्सा निकट भविष्य में 25 प्रतिशत तक करना चाहते हैं।

हम यह भी जानते हैं कि इस अभियान के दबाव में सरकारी मशीनरी को अपने नीतिगत मोर्चे में अनेक सुधार करना जरूरी हो जाएगा।

हम दुनिया के सामने भारत में विनिर्माण डिजाइन, अनुसंधान और विकास के लिए आधार के रूप में मौजूद बड़े अवसरों को प्रस्तुत करना चाहते हैं।

मेक इन इंडिया सप्ताह हमारे प्रदर्शन का जायजा लेने का एक अवसर प्रदान करता है और यह बताता है कि आगे की स्थिति किस प्रकार होगी।

हमने जो प्रगति की है उसके विभिन्न पहलुओं का इस आयोजन में प्रदर्शन किया जाएगा। यह सबसे बड़ा बहु-क्षेत्रीय आयोजन और देश में आयोजित सबसे बड़ी प्रदर्शनी है।

मैं आप सबको यह देखने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ कि वे उस दिशा में देखें जिस ओर भारत आगे बढ़ रहा है।

मुझे इस अवसर पर अपने विचारों को साझा करना है। एक साल के अंदर मेक इन इंडिया भारत द्वारा सृजित एक सबसे बड़ा ब्रांड बन गया है। देश के भीतर और देश के बाहर इसने जनता, संस्थानों, उद्योग, मीडिया और राजनीतिक नेतृत्व का ध्यान आकर्षित किया है।

यह इसलिए है क्योंकि:

- यह उत्पादक गतिविधियों में शामिल करने के लिए हमारी सामूहिक इच्छा को दर्शाता है,
- यह कम लागत पर वस्तुओं का उत्पादन करने की वैश्विक जरूरत को दर्शाता है।
- यह सुधार करने और कार्यकुशलता बढ़ाने के लिए हमारे ऊपर जोर दे रहा है।
- इसने समान शर्तों पर दुनिया के साथ एकीकृत करने के लिए हमें प्रोत्साहित किया है।

हमने जो काम किया है मैं उसके कुछ ठोस उदाहरण आपको देना चाहता हूँ

आज भारत शायद एफडीआई के लिए सबसे अच्छा देश है। अधिकांश एफडीआई क्षेत्रों को स्वतः मंजूरी के मार्ग पर डाल दिया गया है।

मेरी सरकार द्वारा कार्यभार संभालने की तिथि से हमारा एफडीआई प्रवाह बढ़कर 48 प्रतिशत हो गया है। वास्तव में, दिसंबर, 2015 में एफडीआई प्रवाह देश में सबसे अधिक था। ऐसा उस समय हो रहा है जब वैश्विक एफडीआई में भारी गिरावट हो रही है।

हमने कराधान मोर्चे पर भी अनेक सुधारात्मक कदम उठाए हैं। हमने कहा है कि हम पूर्वव्यापी कराधान का आश्रय नहीं लेंगे। हम अपनी कर व्यवस्था को पारदर्शी, स्थिर और पूर्व अनुमान योग्य बनाने की ओर भी तेजी से कार्य कर रहे हैं। हमने कारोबार को आसान बनाने के लिए हर संभव प्रयास किया है। विनिर्माण क्षेत्र में प्रक्रियाओं को सरल बनाने और प्रावधानों को युक्तिसंगत बनाने के लिए निर्णायक कदम उठाए हैं।

इन प्रयासों में लाइसेंसिंग, सीमा पार से व्यापार, सुरक्षा और पर्यावरण मंजूरी भी शामिल हैं। हमने इलेक्ट्रॉनिक्स और कपड़ा सहित अनेक क्षेत्रों में आकर्षक योजनाओं की घोषणा की है।

हमने रक्षा क्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण नीति सुधार किए हैं। हमने रक्षा उद्योग को वह सब दिया है जिसकी वह मांग कर रहा था।

एक अन्य उदाहरण प्राकृतिक संसाधनों का सरल और पारदर्शी आवंटन है। इसके दोहरे लाभ हैं। एक ओर ऐसे संसाधनों का उत्पादन बढ़ गया है और दूसरी ओर हमने पारदर्शी व्यवस्था स्थापित की है जो उपयोगकर्ता और हितधारकों को समान अवसर उपलब्ध करा रही है। इस वर्ष देश में कोयले का सर्वोच्च रिकार्ड उत्पादन होगा। वर्ष 2015 के दौरान देश में सबसे अधिक विद्युत का उत्पादन हुआ था।

संपत्तियों और अधिकारों की सुरक्षा के मुद्दों पर हमने पहले ही मध्यस्थता कार्यवाही को तेजी से निपटाने के लिए कानून बनाया है। हम उच्च न्यायालयों में समर्पित वाणिज्यिक अदालतों और वाणिज्यिक प्रभागों की स्थापना कर रहे हैं। कंपनी कानून न्यायाधिकरण का गठन अंतिम चरण में है।

हम जल्दी ही एक प्रभावी आईपीआर और पेटेंट व्यवस्था लागू करने जा रहे हैं। हमें दिवालियापन कानून पास होने की उम्मीद है जिसे संसद के पटल पर रखा गया है।

नीति और प्रक्रिया के बारे में हमने अपनी प्रणालियों को साफ, आसान, सक्रिय और व्यापार के अनुकूल बनाया है।

में न्यूनतम सरकार और अधिकतम शासन में विश्वास करता हूँ। इसलिए हम निवेश और विकास को प्रभावित करने वाली बाधाओं को दूर करने का प्रयास कर रहे हैं।

हो रहे परिवर्तनों और सुधारों को न केवल संघीय सरकार के स्तर पर देखना अच्छा लगता है बल्कि राज्य स्तर पर भी इससे खुशी मिलती है। राज्य व्यापार को सरल बनाने और बुनियादी ढांचे के संबंधों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा प्रदान करने की स्थिति में हैं।

इनके परिणाम उत्साहजनक रहे हैं।

भारत विश्व में सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बन गया है। इस वित्तीय वर्ष के अंत में देश में जीडीपी की वृद्धि दर 7 प्रतिशत से अधिक होगी। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक, ओईसीडी, एशियाई विकास बैंक तथा अन्य संस्थानों में आने वाले दिनों में और बेहतर विकास दर का अनुमान लगाया है।

2014-15 में भारत ने वैश्विक विकास में 12.5 प्रतिशत योगदान दिया है। विश्व की अर्थव्यवस्था में अपने हिस्से की तुलना में भारत का वैश्विक विकास में 68 प्रतिशत अधिक योगदान है।

मुझे कुछ अन्य संकेतों का भी उल्लेख करना है। भारत को अनेक वैश्विक एजेंसियों और संस्थानों ने सबसे आकर्षक निवेश स्थान का दर्जा दिया है।

व्यापार को सरल बनाने के मामले में विश्व बैंक द्वारा तैयार नवीनतम वैश्विक रैंकिंग में भारत ने 12 रैंक ऊपर पहुंच गया है।

- भारत ने निवेश आकर्षित करने के मामले में अपनी अंकटाइ रैंकिंग सुधार कर 15वीं से 9वीं कर ली है।
- भारत ने विश्व आर्थिक फोरम के वैश्विक आर्थिक सूचकांक पर 16 अंकों का सुधार किया है।
- मूडी'ज ने भी भारत की रैंकिंग को अपग्रेड कर सकारात्मक कर दिया है।

मेक इन इंडिया की गति ने हमें भरोसा प्रदान किया है। यह हमें अपनी नीतियों और प्रक्रियाओं को सरल और मैत्रीपूर्ण बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

इस पृष्ठभूमि के साथ मैं आपको भारत का आपका कार्यस्थल और आपका घर भी बनाने के लिए आमंत्रित और प्रोत्साहित करता हूँ।

मित्रों,

हम विशेष रूप से अगली पीढ़ी के बुनियादी ढांचे में निवेश को बढ़ाने के प्रति इच्छुक हैं। इसमें सड़कें, बंदरगाहें, रेल, हवाई अड्डे, दूरसंचार, डिजिटल नेटवर्क्स एवं स्वच्छ ऊर्जा शामिल हैं।

हम अपने लोगों को बेहतर आय एवं जीवन स्तर देने के लिए अपने सामाजिक, औद्योगिक एवं कृषि ढांचागत क्षेत्र में भी निवेश कर रहे हैं।

अभी तक हमारी क्रियान्वयन क्षमता हमारी सबसे बड़ी बाधा थी। हमने यह प्रक्रिया तेज की है। इसका परिणाम परियोजनाओं के तेजी से पूर्ण होने के रूप में सामने आ रहा है। भारत के अब तक के सर्वाधिक किलोमीटर के नए राजमार्ग के अनुबंध को 2015 में मंजूरी दी गई थी।

ठीक इसी प्रकार, रेल पूंजी व्यय में इस वर्ष सबसे अधिक वृद्धि दर्ज की गई।

इस प्रकार चाहे यह भौतिक ढांचागत क्षेत्र हो या सामाजिक बुनियादी ढांचा, हम इसे पहले की तुलना में सबसे अधिक कुशलता के साथ क्रियान्वित कर रहे हैं।

अगली बाधा वित्त पोषण की थी। वित्त पोषण में वृद्धि करने के लिए हम अभिनव कदमों का प्रयास कर रहे हैं। हम सार्वजनिक-निजी साझेदारी के लिए अपनी ग्रीनफील्ड एवं ब्राउनफील्ड परियोजनाओं को खोल रहे हैं। अधिक मजबूत

राजकोषीय अनुशासन के साथ और राजस्व रिसाव को रोकने के जरिये हम बुनियादी ढांचे के लिए अधिक संसाधन मुहैया कराने का प्रयास कर रहे हैं।

हमने राष्ट्रीय निवेश एवं बुनियादी ढांचा फंड की भी स्थापना की है। हम रेल, सड़क और सिंचाई क्षेत्रों में परियोजनाओं के लिए कर मुक्त इन्फ्रास्ट्रक्चर फंड लेकर आए हैं। हम इन वित्तीय योजनाओं पर कई देशों, वित्तीय बाजारों एवं फंडों के साथ काम कर रहे हैं।

देवियों एवं सज्जनों,

भारत बेशुमार संभावनाओं वाला देश है। हमारे 50 नगर मेट्रो रेल प्रणालियों की स्थापना के लिए तैयार हैं। हमें 50 मिलियन घरों का निर्माण करना है। सड़क, रेल एवं जलमार्गों की भारी आवश्यकता है। वृद्धिशील परिवर्तनों के लिए कोई समय नहीं है। हम बहुत बड़ी छलांग लगाना चाहते हैं।

हमने इसे एक स्वच्छ एवं हरित प्रकार से करने का फैसला भी किया है। यही कारण है कि हमने पेरिस में हाल में आयोजित सीओपी-21 बैठक में विश्व समुदाय के प्रति एक प्रतिबद्धता की है। हम 175 गीगावाट के विशाल स्तर पर नवीकरणीय ऊर्जा उपयोग करेंगे।

मैं त्रुटिहीन और किफायती विनिर्माण पर बहुत जोर देता हूं। हम ऊर्जा कुशलता, वॉटर रिसाइकिलिंग, अपशिष्ट से ऊर्जा, स्वच्छ भारत, नदी की सफाई पर काफी जोर देते हैं। इन कदमों का लक्ष्य नगरों एवं गांव में जीवन स्तर को बेहतर बनाना है। ये कदम आपको प्रौद्योगिकीयों, सेवाओं और मानव संसाधनों में निवेश के लिए अतिरिक्त अवसर प्रदान करते हैं।

मित्रों,

भारत को तीन 'डी' का सौभाग्य प्राप्त है। ये हैं : डेमोक्रेसी यानी लोकतंत्र, डेमोग्राफी यानी जनसंख्या और डिमांड यानी मांग। इसमें हमने एक और डी- डिरेगुलेशन यानी विनियमन भी जोड़ दिया है। आज का भारत इस प्रकार चार आयामों वाला भारत है। हमारी न्यायिक प्रणालियां स्वतंत्र एवं समय की कसौटी पर खरी उतरी हैं।

आप किसी अन्य देश में ये सभी तत्व नहीं पायेंगे।

इन ताकतों के साथ भारत आपको अपनी निर्माण एवं डिजाइन की क्षमताओं की जांच करने तथा उन्हें प्रारंभ करने का एक ठोस मंच प्रस्तुत करता है। इसके अतिरिक्त, हमारे सामुद्रिक स्थल कई अन्य महादेशों में उत्पादों के विपणन को सरल बनाते हैं।

हम पथ प्रदर्शक पहलों के साथ इस विशाल संभावना को और सक्षम बनाने तथा उनका दोहन करने का प्रयास कर रहे हैं। डिजिटल इंडिया एवं स्मिल इंडिया जैसे अभियानों की रूपरेखा लोगों को इस प्रक्रिया में शामिल होने के लिए तैयार करने के लिए बनाई गई है। हमने वित्त पोषण योजनाएं प्रारंभ की हैं जो उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के प्रति समर्पित हैं। हम बिना किसी आनुषंगिक के मुद्रा बैंक के माध्यम से ऋण दे रहे हैं। मैंने विशेष रूप से अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों से जुड़े युवा उद्यमियों तथा महिला उद्यमियों को वित्त पोषित करने को लेकर बैंकों को भी समझाया है।

- केवल इसी से महात्मा गांधी के स्वपन साकार होंगे जो चाहते थे कि उद्योगों का संचालन गांवों एवं कुटियों में किया जाए।
- केवल इसी से डॉ. भीम राव अम्बेडकर के स्वपन साकार होंगे जिन्होंने अधिशेष श्रम को कृषि से अन्य व्यवसायों की तरफ मोड़ने की जरूरत की वकालत की थी।

हम जल्दी ही इस प्रक्रिया को स्टैंड अप इंडिया के बैनर के तहत और मजबूत बनाने जा रहे हैं।

मैं महसूस करता हूं कि आज हमारे घरेलू उद्योग एवं निवेशक एक अनिश्चित वैश्विक स्थिति के बावजूद काफी आत्मविश्वासपूर्ण एवं आशावादी महसूस कर रहे हैं।

जब हमने मेक इन इंडिया अभियान की शुरुआत की थी, उस वक्त देश में विनिर्माण वृद्धि दर 1.7 की थी। इस वर्ष इसमें उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है। चालू तिमाही के दौरान विनिर्माण वृद्धि दर के 12.6 प्रतिशत के आसपास करने की उम्मीद है।

- संयुक्त पीएमआई उत्पादन सूचकांक उत्पादन जनवरी, 2016 में उछल कर 11 महीनों के उच्च स्तर 53.3 प्रतिशत पर पहुंच गया है।
- पिछले 8 महीनों के दौरान निवेश प्रस्तावों की कुल संख्या में 27 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है।
- 2015 में हमने मोटर वाहनों का अब तक का सबसे अधिक उत्पादन दर्ज किया है।
- पिछले 10 महीनों के दौरान देश में 50 नई मोबाइल फैक्ट्रियों की स्थापना हुई है।
- इलेक्ट्रानिक मैन्यूफैक्चरिंग 6 गुनी बढ़कर 18 मिलियन तक पहुंच गई है।
- ईएसडीएम इकाइयों के नाम से विख्यात 159 इलेक्ट्रानिक सिस्टम डिजाइन एवं मैन्यूफैक्चरिंग इकाइयों की 2015 में स्थापना हुई।
- कुछ विशेष एजेंसियों के अनुमान के अनुसार भारतीय रोजगार बाजार एक मजबूत धरातल पर है। उदाहरण के लिए, भारत के माँस्टर रोजगार सूचकांक जनवरी, 2016 में 229 रहा जो कि पिछले वर्ष जनवरी की तुलना में 52 प्रतिशत अधिक है।

ठीक इसी प्रकार व्यापार के मोर्चे पर :

- भारत ने 2015 में अब तक सर्वाधिक निर्यात दर्ज करवाया।
- 2015 में ही हमारे बड़े बंदरगाहों ने अब तक की सर्वाधिक माल ढुलाई मात्रा का संचालन किया है।

ये सब बहुत अच्छे संकेत हैं। मैं अपने उद्योग जगत को कुछ मैत्रीपूर्ण परामर्श देना चाहूंगा। प्रतीक्षा न करें। विश्राम न करें। भारत में प्रचुर अवसर हैं। आपको भारत में काम करने के प्रति वैश्विक कंपनियों की फिर से पैदा हुई दिलचस्पी का लाभ उठाना चाहिए। उनमें से कई भारतीय साझेदारों के साथ प्रौद्योगिकीय एवं गठबंधन करने की उम्मीद कर रहे हैं। इनमें रक्षा उत्पादन जैसे उच्च - प्रौद्योगिकी एवं उच्च मूल्य क्षेत्र शामिल हैं। मैं आपको भरोसा दिलाता हूं कि अगर आप एक कदम उठाएंगे तो हम आपके साथ दो कदम चलेंगे।

एक प्रतिस्पर्धी विश्व में प्रबंधकीय एवं प्रौद्योगिकीय क्षमता को बेहतर बनाना उत्तरजीविता एवं विकास के लिए अनिवार्य है। अंतरिक्ष यानों से लेकर प्रदूषण नियंत्रण तक; शिक्षा से स्वास्थ्य तक; कृषि से सेवाओं तक; हमारे युवा उद्यमी एवं स्टार्ट-अप्स हमें उद्यमशीलता एवं आपूर्ति के नए - नए और त्वरित रास्ते दिखा रहे हैं। मेरी सरकार उन्हें सहायता देने और उनकी क्षमता का पूर्ण रूप से उपयोग करने के लिए प्रतिबद्ध है। मैं चाहता हूं कि हमारे युवा रोजगार मांगने वाले नहीं बल्कि रोजगार का निर्माण करने वाले बनें। यही वजह है कि हमने स्टार्ट-अप इंडिया अभियान प्रारंभ किया है।

हमारी दिलचस्पी ऐसे रास्तों की खोज करने में है जिनमें :

- हमारे दिमाग हाथों को अधिकार संपन्न बनाने में सक्षम हों।
- हमारे हाथ मशीनों पर नियंत्रण करने में सक्षम हों।
- हमारे मशीन सर्वश्रेष्ठ का निर्माण करने में सक्षम हों।

मेक इन इंडिया आम आदमी की पूरी न हुई मांगों को पूरा करने वाला अभियान है। यह बेरोजगारों को शामिल करने और सतत बनाने का एक प्रयास भी है। मैं भी मेक फॉर इंडिया पर जोर देता हूं ताकि मानवीय और क्षेत्रीय जरूरतों को पूरा किया जा सके। मैंने सुना है कि अनेक वैश्विक कंपनियां अपनी स्थानीयकरण योजनाओं के बारे में बात करती हैं। इस प्रकार इस अभियान में भारतीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने और वैश्विक परिदृश्य को सशक्त बनाने की क्षमता है।

दोस्तों,

मैं अक्सर यह कहता हूं कि यह सदी एशिया की सदी है। मेरी आपसे यही सलाह है कि अगर आप इस सदी को अपनी सदी बनाना चाहते हैं तो मेक इन इंडिया को अपना केंद्र बनाएं। मैं यहां बैठे और यहां न आए हर व्यक्ति को भारत की

विकास की कहानी का हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित करता हूं।

- यह भारत में होने का सबसे अच्छा समय है,
- और उससे भी बेहतर मेक इन इंडिया होने का है।

धन्यवाद

आईपीएस/एसकेजे/एनआर/सीएस-933

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

28-मार्च-2016 20:04 IST

ब्लूमबर्ग इण्डिया फोरम-2016 में प्रधानमंत्री के भाषण का मूलपाठ

श्री मिक्लेथवेट,

विशिष्ट अतिथियों,

देवियों और सज्जनों

मैं भारत में ब्लूमबर्ग की उपस्थिति के बीस वर्ष होने के अवसर पर यहां आकर बड़ा प्रसन्न हूं। इस अवधि के दौरान, ब्लूमबर्ग ने बुद्धिमान व्याख्या और भारत की अर्थव्यवस्था के समग्र विश्लेषण को उपलब्ध कराया है। यह अब वित्त परिदृश्य का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है।

इसके अलावा हमारे स्मार्ट सिटी कार्यक्रम को डिजाइन करने में श्री माइकल ब्लूमबर्ग से हमें जो मूल्यवान सलाह मिली है मैं उसके लिए आभारी हूं। विश्व के महान शहरों में से एक के मेयर के रूप में, श्री ब्लूमबर्ग ने शहर का निर्माण करने वाले व्यक्तिगत परिज्ञान का परिचय दिया है। उनके विचारों ने हमारे स्मार्ट सिटी कार्यक्रम के डिजाइन को समृद्ध किया है। इस कार्यक्रम के तहत हम सौ शहरों का निर्माण करने की उम्मीद करते हैं जो पूरे देश में शहरी विकास के रोल मॉडल बन जाएंगे।

आज विश्व भारत से वैश्विक विकास में योगदान देने की उम्मीद करता है। मैं इसके लिए आपके सामने अपने विचार रखना चाहूंगा कि कैसे भारत इन चुनौतियों का समाना करने का इरादा रखता है।

मैं तीन प्रमुख क्षेत्रों का जिक्र करना चाहूंगा। सबसे पहले, मैं भारत के आर्थिक विकास की चर्चा करूंगा। मैं कुछ प्रशासनिक और नीतिगत सुधारों के बारे में बताऊंगा कि जिन्होंने उस विकास का सृजन किया है और इसे सतत बनाए रखेंगे। मैं आर्थिक विकास के एक पहलू का खुलासा करूंगा जो रोजगारों के सृजन करने में मेरे लिए विशेष महत्व रखता है।

विशेषज्ञ इस बारे में एकमत हैं कि भारत विश्व की अर्थव्यवस्था के सबसे प्रतिभाशाली स्थलों में से एक है। हमारे यहां कम मुद्रास्फीति है, चालू खाता घाटे भुगतान का कम संतुलन है और विकास की एक उच्च दर है। यह अच्छी नीति का परिणाम है, अच्छे भाग्य का नहीं।

- 2008 और 2009 के बीच कच्चे तेल की कीमतों में भारी गिरावट आयी और कीमतें 147 डॉलर प्रति बैरल के उच्च स्तर से गिरकर 50 डॉलर प्रति बैरल से भी कम हो गई थीं। यह वर्ष 2014 और 2015 के मुकाबले बहुत अधिक गिरावट थी। फिर भी इनसे वर्ष 2009-10 में भारत का राजकोषीय घाटा, इसका चालू खाता घाटा और मुद्रास्फीति की दर पर बुरा प्रभाव पड़ा। लेकिन 2015-16 में इन तीनों में ही कम आधार से सुधार हुआ।
- अन्य कई उभरती अर्थव्यवस्थाएं भी आयातित तेल पर निर्भर हैं। अगर तेल की कीमतें ही सफलता की वाहक हैं तो वे अन्य देश भी इसी तरह के परिणाम दर्शाएंगे। लेकिन वे ऐसा नहीं कर रहे हैं।
- हम वैश्विक व्यापार और विकास के मामले में भाग्यशाली नहीं रहे हैं। दोनों ही कम हैं और निर्यात को प्रोत्साहित करने में हमारे मददगार नहीं रहे हैं।
- हम मौसम और मॉनसून के मामले में भाग्यशाली नहीं रहे हैं। वर्ष 2015 और 2014 दोनों ही सूखाग्रस्त वर्ष रहे हैं। बिन मौसम तूफानों ने सूखे की समस्या को और बढ़ा दिया है। बावजूद इसके अनाज का उत्पादन अच्छा रहा है, और सूखे वाले साल 2009-10 की तुलना में मंहगाई कम रही है।

वैश्विक विकास की सूचियों में भारत का अक्वल रहना एक असाधारण स्थिति है। स्पष्टतः कुछ लोगों के लिए यह पचाना मुश्किल है और वे इस उपलब्धि को कम करने के लिए कल्पित एवं अलबेले विचार सामने लेकर आते हैं। वास्तविकता यह है कि भारत की आर्थिक सफलता बुद्धिमानी, दृढ़ नीति और प्रभावी प्रबंधन के ज़रिए परिश्रम से उपार्जित है। हमारी कुछ

नीतियों के बारे में मैं बाद में सविस्तार बताऊंगा, किंतु फिलहाल मैं राजकोषीय समेकन पर जोर देता हूँ। हमने पिछले दोनों वित्तीय वर्षों में बड़े राजकोषीय लक्ष्यों को हासिल किया है। हमने पूंजीगत व्यय को बढ़ाते हुए घाटे को कम किया है। और चौदहवें वित्त आयोग में केंद्र की कर-आय में बेमिसाल तरीके से हुई तीव्र कमी के बावजूद ऐसा हुआ है। वर्ष 2016-17 के लिए राजकोषीय घाटे को हमने सकल घरेलू उत्पाद का 3.5 प्रतिशत रखना तय किया है। पिछले 40 सालों में यह दूसरा सर्वाधिक निम्न स्तर होगा।

बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में हमारी विकास दर उच्चतम मानी जाती है। कुछ लोग संशयग्रस्त रहते हैं और उन्होंने कहा है कि विकास दर सही प्रतीत नहीं होती है। शायद मैं उनके इस अहसास की जगह तथ्य पेश कर यह संशय कम कर पाने में मददगार हो पाऊंगा।

आइये पहले ऋण पर निगाह डालते हैं। सितम्बर 2015 के बाद ऋण वृद्धि में तीव्र बढ़ोतरी हुई है। फरवरी 2016 एवं फरवरी 2015 के मध्य ऋणदाय 11.5 प्रतिशत बढ़ा है। कॉर्पोरेट सेक्टर का घरेलू और विदेशी इक्विटी और विभिन्न प्रकार के ऋणों के द्वारा सकल ऋणदाय वर्ष 2015-16 की प्रथम तीन तिमाहियों में 30 प्रतिशत बढ़ा है।

क्रेडिट रेटिंग्स पर आंकड़े और अधिक रुचिकर हैं। वर्ष 2013 एवं 2014 में क्रेडिट रेटिंग घटने वाली फर्मों की संख्या उन फर्मों से अधिक थी जिनकी क्रेडिट रेटिंग बढ़ी थी। अब यह स्थिति निर्णायक रूप से बदली है। उन्नत क्रेडिट रेटिंग पाने वाली कम्पनियों की संख्या अधिक है और अवनत क्रेडिट रेटिंग पाने वाली कम्पनियों की संख्या कम हो रही है। वित्त वर्ष 2015-16 की प्रथम अर्द्धवार्षिकी के दौरान अवनत क्रेडिट रेटिंग पाने वाली प्रत्येक कम्पनी के विरुद्ध दो से अधिक कम्पनियों को उन्नत क्रेडिट रेटिंग मिली जो हाल के वर्षों में इस सम्बंध में सर्वश्रेष्ठ स्तर है।

उन फर्मों जिन्हें कम सहायता दी गई की स्थिति तो और भी बेहतर है। उन्नत स्थिति वाली फर्मों की संख्या अवनत स्थिति वाली फर्मों की अपेक्षा बहुत अधिक है। कम सहायता प्राप्त बड़ी फर्मों के संबंध में उन्नत फर्मों की संख्या अवनत फर्मों की संख्या की तुलना में 6.8 गुना अधिक है, मध्यम दर्जे की फर्मों में यह अनुपात 3.9 है और लघु फर्मों के सिलसिले में 6.3 है। यह आंकड़े असाधारण रूप से सुदृढ़ हैं। केवल अत्यधिक सहायता प्राप्त बड़ी फर्मों के मामले में ही अवनत स्तर में वृद्धि पाई गई है।

सरकार और रिज़र्व बैंक ने बड़े कॉर्पोरेट चूककर्ताओं से धन वापसी के लिए कड़े कदम उठाए हैं। इस क्षेत्र में हुए घटनाक्रमों ने मीडिया की समझ को प्रभावित किया है।

ऋण के बाद अब निवेश की बात करें तो मौजूदा वित्त वर्ष के तिमाही में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश एक सर्वकालिक रिकॉर्ड रहा है। किंतु मेरे लिए कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों में हुई नाटकीय वृद्धि ज्यादा दिलचस्प रही है। अक्टूबर 2014 से सितम्बर 2015 के बीच खाद पर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश 224 मिलियन डॉलर रहा, जबकि अक्टूबर 2013 से सितम्बर 2014 के मध्य यह 1 मिलियन डॉलर रहा था। इन्हीं कालखंडों में चीनी में यह 125 मिलियन डॉलर रहा, जबकि इससे पहले 4 मिलियन डॉलर रहा था। कृषि क्षेत्र से जुड़ी मशीनरी में यह 28 मिलियन डॉलर से बढ़ कर 57 मिलियन डॉलर हो गया। यह वो क्षेत्र हैं जिनका ग्रामीण अर्थव्यवस्था से करीबी वास्ता है। इनमें विदेशी निवेश का प्रवाह देख मैं रोमांचित हूँ।

सितम्बर 2015 तक वर्ष में निर्माण क्षेत्र की गतिविधियों में 316 प्रतिशत की वृद्धि हुई। कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर एवं हार्डवेयर के क्षेत्र में 285 प्रतिशत की वृद्धि हुई। ऑटोमोबाइल उद्योग में एफडीआई 71 प्रतिशत की गति से बढ़ा। यह ठोस प्रमाण है कि मेक-इन-इण्डिया नीति का रोजगार प्रदायक क्षेत्रों में प्रभाव पड़ रहा है।

निर्यात के लिए कठिन वैश्विक वातावरण में विनिर्माण क्षेत्र में उतार-चढ़ाव रहा है। हालांकि निर्माण क्षेत्र के कई अहम उप क्षेत्रों में तेजी से वृद्धि हो रही है। मोटर वाहनों का निर्माण, जो कि उपभोक्ता की खरीदने की क्षमता एवं आर्थिक क्रियाशीलता का मज़बूत सूचक है, 7.6 प्रतिशत की गति से बढ़ा है। रोजगार प्रदायक परिधान निर्माण क्षेत्र में 8.7 प्रतिशत की

दर से बढ़ोतरी हुई है। फर्नीचर के निर्माण में 57 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जो यह दर्शाता है कि फ्लैट और मकानों की खरीद में वृद्धि हुई है।

भविष्य की ओर देखते हुए, आइए कृषि की चर्चा करते हैं। पहले ज़ोर कृषि उत्पादन पर होता था न कि किसानों की आय पर। मैंने वर्ष 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने का निश्चय किया है। मैंने इसको एक चुनौती के तौर पर रखा है, परंतु यह मात्र एक चुनौती भर नहीं है। एक श्रेष्ठ रणनीति, ठीक से बनाए गए कार्यक्रमों, पर्याप्त संसाधनों और अच्छी तरह क्रियान्वित शासन प्रणाली से यह लक्ष्य प्राप्य है। और जैसा कि हमारी जनसंख्या का बड़ा वर्ग कृषि पर निर्भर है, किसानों की आय को दोगुना करने के प्रबल फायदे अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों पर भी होंगे।

हमारी रणनीति का प्रारूप यह है कि..

- सर्वप्रथम हमने सिंचाई में बजटीय आवंटन बढ़ा कर बड़ा ध्यान दिया है। हम समग्र दृष्टिकोण अपना रहे हैं जो सिंचाई और जल संरक्षण को मिलाता है। उद्देश्य 'प्रति बूंद अधिक फसल' पाना है।
- दूसरा, हम श्रेष्ठ बीजों एवं पोषकता पर ज़ोर दे रहे हैं। सोइल हेल्थ कार्ड्स का प्रावधान हर क्षेत्र के ज़रूरतों के सही आकलन में मदद करता है। इनसे उत्पादन की लागत कम होगी और आय में वृद्धि होगी।
- तीसरा, कृषि उपज का बड़ा हिस्सा उपभोक्ता तक पहुंचने से पहले ही नष्ट हो जाता है। विकारी खाद्य में नुकसान परिवहन के दौरान होता है, जबकि अविकारी खाद्य में भंडारण के दौरान होता है। हम भंडारण की अवसंरचना एवं शीतागार श्रृंखला खड़ी कर पैदावार के बाद होने वाले नुकसान को कम कर रहे हैं। हमने कृषि क्षेत्र में ढंचागत व्यवस्था के लिए खर्च में बड़ी वृद्धि की है।
- चौथा, हम खाद्य प्रक्रमण के माध्यम से गुणवत्ता को प्रोत्साहन दे रहे हैं। उदाहरण के तौर पर मेरे एक कॉल के बाद कोका कोला ने अपने कुछ वातित पेयों में फलों का रस मिलाना शुरू किया है।
- पांचवां, हम विकृतियां दूर कर एक राष्ट्रीय कृषि बाज़ार की रचना कर रहे हैं। 585 नियमित होलसेल बाज़ारों में एक सार्व इलेक्ट्रॉनिक मार्केट प्लेटफॉर्म बनाया जा रहा है। हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि मूल्य का बड़ा हिस्सा किसान तक पहुंचे और बिचौलियों की भूमिका कमतर हो। बजट में घरेलू खाद्य उत्पादों के क्रय विक्रय में विदेशी पूंजी निवेश इसी मंतव्य से रखा गया है।
- छठा, हमने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना शुरू की है। यह एक विस्तृत देशव्यापी फसल बीमा कार्यक्रम है जो एक वहन करने योग्य राशि में किसानों का उन खतरों से बचाव करता है जो उनके नियंत्रण में नहीं हैं। यह योजना खराब मौसमी हालात में किसानों की आय की रक्षा सुनिश्चित करेगी।
- सातवां, हम सहायक गतिविधियों से आय में बढ़ोतरी करेंगे। अशंत: यह मुर्गीपालन, मधु मक्खी उद्योग से एवं मत्स्यपालन के माध्यम से किया जाएगा। हम किसानों को उनकी भूमि के उस हिस्से का उपयोग करने का प्रोत्साहन दे रहे हैं जो जोता हुआ नहीं है, खास कर खेतों के बीच की सीमा वाला हिस्सा जिसका प्रयोग लकड़ियां उगाने एवं सौर सेल बनाने में किया जा सकता है।

निम्न तरीकों के साझा प्रयोग से

- उत्पादन में वृद्धि
- आगत के प्रभावी उपयोग से
- उपज के बाद नुकसान कम करके
- गुणवत्ता में वृद्धि कर

- संकट का शमन कर
- और सहायक गतिविधियों से

मुझे विश्वास है कि हम किसानों की आय को दोगुना करने का लक्ष्य हासिल कर लेंगे। मैं प्रसन्न हूँ कि भारत की कृषि के पुरोधा डॉक्टर एम एस स्वामीनाथन सहमत हैं। उन्होंने मुझे बजट के बाद किसान-केंद्रित बजट के लिए आभार जताती चिट्ठी लिखी। उन्होंने कृषि से होने वाली आय पर दिए गए ध्यान का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि, "कुल मिलाकर बजट को किसानों का हितकारी बनाने की कोशिश की गई है- जो संसाधनों की सीमितता का विषय है। कृषि क्षेत्र में रूपांतरण और युवाओं को कृषि में रोकने एवं आकर्षित करने के बीज बोए गए हैं। कृषि के क्षेत्र में एक नये युग का उदय नज़र आ रहा है।"

आइए अब हमारे विकास को आधार प्रदान करने वाले कुछ कार्यक्रमों एवं नीतियों का जिक्र करें। जैसा कि मैंने कहा कि मेरा लक्ष्य रिफॉर्म टू ट्रान्सफॉर्म है, सुधारों का उद्देश्य आम लोगों की ज़िंदगी में रूपांतरण करना है। आइए प्रशासनिक सुधारों और उनको क्रियान्वित करने पर हमारे फोकस की बात करें।

भारत जैसे देश में संसाधनों की कमी है, जबकि समस्याएं ढेरों हैं। क्रियान्वयन की सामर्थ्य में वृद्धि कर संसाधनों का अधिकतम प्रयोग करना एक कुशल रणनीति है। नीतियों की घोषणा करना, या तथाकथित नीतियों की घोषणा से ज़्यादा हासिल नहीं होता। यहां तक कि नीतियों में सुधार से ज़्यादा हमें रूपांतरित कार्य निष्पादन की आवश्यकता है। मैं व्याख्या करता हूँ। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 में पारित हुआ था लेकिन अधिकतर राज्यों में क्रियान्वित नहीं हुआ। महात्मा गांधी ग्रामीण रोज़गार गारंटी योजना में ज़्यादातर धन दलालों, बिचौलियों और गैर-निर्धनों में जा रहा था, जबकि कागज़ों में यह व्यय दर्ज हो जाता था।

हम अब खाद्य सुरक्षा एक्ट को देश भर में क्रियान्वित कर रहे हैं। हमने रोज़गार गारंटी योजना में गलत हाथों में धन जाने से रोका है और कोशिश की है कि यह उन हाथों में जाए जिनके लिए योजना बनी है। हमने टिकाउ सम्पत्तियां बनाने पर ध्यान दिया है जो जनता के लिए लाभकारी हों, न कि दलालों के लिए। और वित्तीय समावेशन के फायदों की चर्चा करने के बजाय, हमने लक्ष्य पूरा कर लिया है और 200 मिलियन लोगों को बैंकिंग प्रणाली के दायरे में लाए हैं।

आम तौर पर क्रियान्वयन के बारे में हमारा रिकॉर्ड, एवं खास कर भ्रष्टाचार घटाने के प्रति, सबकी समझ में आ चुका है। इसलिए मैं संक्षिप्त रहूंगा। कोयला, खनिज एवं स्पेक्ट्रम की नीलामी पारदर्शिता से हुई है जिससे सरकार को बड़ी मात्रा में धन की प्राप्ति हुई है। प्रबंधकीय सुधारों से बिजली की कमी को खत्म किया गया है, प्रति दिन राष्ट्रीय राजमार्गों का निर्माण एक रिकॉर्ड है। हमने विविध क्षेत्रों में कई नये कार्यक्रम शुरू किए हैं। परम्परा से जुड़े कई मुद्दों का समाधान किया है। रुकी हुई परियोजनाओं की संख्या घटी है। लंबे समय से बंद दाभोल विद्युत कारखाना हमारे समन्वित प्रयासों से दोबारा शुरू हुआ है, और यह विद्युत का उत्पादन कर रहा है, नौकरियां बचाए हुए हैं और बैंकों के फिजूल ऋण से दूर हैं। आइए अब नीतिगत सुधारों की बात करते हैं। मैंने सरकार के कार्यभार संभालने के बाद मंहगाई में स्थाई कमी की बात की थी। आंशिक रूप से यह मुद्रा संबंधी नीतियों को सुदृढ़ बनाने हेतु लिए गए साहसी निर्णयों से जुड़ा है। पिछले वर्ष हमारा रिज़र्व बैंक ऑफ इण्डिया के साथ मौद्रिक रूपरेखा करार हुआ था।

इस वर्ष हमने वित्त विधेयक में विधेयक में रिज़र्व बैंक ऑफ इण्डिया एक्ट में संशोधन शामिल किए हैं। इन संशोधनों के अंतर्गत रिज़र्व बैंक के पास मुद्रा स्फीति का लक्ष्य होगा और मौद्रिक नीति समिति के माध्यम से मौद्रिक नीति बनाई जाएगी। समिति में सरकार से कोई सदस्य नहीं होगा। इस सुधार से मौद्रिक नीति मुद्रा स्फीति केंद्रित रहेगी और उभरते हुए बाज़ारों में इसको विकसित देशों से भी ज़्यादा सांस्थानिक स्वायत्तता का स्तर प्राप्त होगा। राजकोषीय समेकन के मार्ग का पालन करते हुए यह स्थूल आर्थिक बुद्धिमत्ता और स्थायित्व के प्रति हमारे कड़े निश्चय का परिचायक है।

एक अन्य बड़ा नीतिगत सुधार पेट्रोलियम क्षेत्र में हुआ है। नई हाइड्रोकार्बन लाइसेंसिकरण नीति के तहत मूल्य निर्धारण एवं क्रय विक्रय की स्वतंत्रता एवं पारदर्शी राजस्व सहभाजन प्रक्रिया होगी। इससे नौकरशाही के नियंत्रण की कई तहें खत्म हो जाएंगी। ऐसी परियोजनाएं जो जारी हैं किंतु तैयार नहीं हुई हैं, के लिए भी हमने मूल्य निर्धारण एवं क्रय विक्रय की स्वतंत्रता प्रदान की है। मौजूदा प्रोडक्शन शेयरिंग अनुबंधों के नवीनीकरण के लिए हमने सरकार के लाभांश में एकसमान प्रतिशत वृद्धि कर एक पारदर्शी तरीका अपनाया है। यह अनिश्चितता का निवारण करता है।

संसद ने रीयल इस्टेट रेग्युलेशन अधिनियम को पारित कर दिया है जो कि भवन निर्माण बाजार का रूपांतरण करने की दिशा में, खरीदारों को सुरक्षा देने में एवं ईमानदार और स्वस्थ नीतियों को प्रोत्साहन देने में अहम होगा। लंबे समय से लंबित इस विधेयक को पारित करने के साथ हमने नव्य मध्यम वर्ग एवं निर्धनों के लिए मकान बनाने पर भवन निर्माताओं को टैक्स में छूट भी दी है।

ऊर्जा क्षेत्र की उदय योजना ने राज्य सरकारों के लिए प्रोत्साहन की परिपाटी में स्थाई रूप से परिवर्तन कर दिया है। महत्वाकांक्षी लक्ष्यों के लिए विश्वसनीय प्रोत्साहन दिया जाएगा। इस योजना के तहत राज्य सरकारों को चरणबद्ध तरीके से विद्युत वितरण कम्पनियों के घाटे को अपने राजकोषीय घाटे के लक्ष्यों के विरुद्ध दर्शाना होगा। इससे इन प्रदेशों को बजट निर्माण में काफी कठिनाई झेलनी पड़ेगी। इससे राज्यों को अपने विद्युत क्षेत्र का सुदृढ़ प्रबंधन करने का गहन प्रोत्साहन मिलेगा। इस सिलसिले में ऐसे नौ राज्यों, जो विद्युत वितरण कम्पनियों के 40 प्रतिशत ऋण का भार ग्रहण कर रहे हैं, ने केंद्र सरकार के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। नौ अन्य राज्य ऐसा करने पर सहमत हुए हैं।

नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में इस सरकार के नीतिगत सुधारों के बारे में आपको पता होगा। जब मैंने जलवायु परिवर्तन की रणनीति के तौर पर नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में 175 गीगावॉट के अपने लक्ष्य को बताया, तो कई लोगों को आश्चर्य हुआ और कुछ लोगों को संदेह भी हुआ। लेकिन इस महीने अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी ने बताया है कि नवीकरणीय ऊर्जा के प्रयोग में बढ़ोतरी ने कार्बन उत्सर्जन में कमी ला दी है।

संसद ने हाल ही में अंतर्देशीय जलमार्गों पर एक नये कानून को पारित किया है जिससे परिवहन के इस सक्षम तरीके का तीव्र विकास हो पाएगा। इससे जलमार्गों की संख्या मौजूदा 5 से 106 हो जाएगी।

प्रत्यक्ष विदेशी पूंजी निवेश की नीति का रूपांतरण बंद पड़े क्षेत्रों जैसे रेलवे और रक्षा में निवेश को अनुमति देकर, एवं बीमा समेत कई अन्य क्षेत्रों में निवेश की सीमा बढ़ा कर, किया गया है। इन सुधारों के परिणाम आने लगे हैं। जीई और एल्सटम की ओर से बिहार में 5 बिलियन की लागत से दो नई लोकोमोटिव फैक्ट्रियां लगाई जा रही हैं। बीमा क्षेत्र में विश्व की अग्रणी कंपनियों की ओर से 9600 करोड़ रुपए, लगभग 1500 मिलियन डॉलर, को पहले ही मंजूरी दी जा चुकी है।

हमने स्टॉक एक्सचेंजों में विदेशी निवेश की सीमा बढ़ाई है और उन्हें सूचीबद्ध करने की इजाजत दी है। मैं आश्वस्त हूँ कि आपको प्राइवेट इक्विटी वेंचर केपिटल को प्रोत्साहन देने के लिए हमारे सुधारों और स्टार्टअप्स के बारे में पता होगा। मैंने नोट किया है कि यह नई अर्थव्यवस्था आपकी पैनल चर्चा का अहम मुद्दा है।

अंत में बात करते हैं रोजगार उत्पन्न करने वाले हमारे बड़े कदमों के बारे में। यह मेरी सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है। भारत एक पूंजी वाला किंतु प्रचुर श्रमशक्ति से सम्पन्न देश है। इसके बावजूद कॉर्पोरेट कर संरचना ने पूंजीमूलक उत्पादन की ही सहायता की है। त्वरित अवमूल्यन तथा निवेशानुमति जैसे करलाभों से श्रम क्षेत्र के प्रति कृत्रिम पूर्वाग्रह सा उत्पन्न हो गया है। श्रम विनियमनों ने भी औपचारिक रोजगार की अपेक्षा सामाजिक संरक्षा विहीन अनौपचारिक रोजगार का ही संवर्धन किया है। इसमें बदलाव के लिए हमने दो महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं।

सर्वप्रथम यदि करसमपरीक्षा के अधीन आने वाली कोई फर्म अपने कर्मियों में वृद्धि करना चाहती है तो उसको तीन वर्ष के लिए उसकी अतिरिक्त मज़दूरी लागत पर 30 प्रतिशत अधिक कर कटौती मिलेगी। इसके पूर्व ऐसा लाभ केवल गिनी चुनी औद्योगिक फर्मों को ही उपलब्ध था और उसमें भी इतने अवरोध थे कि व्यवहारिक रूप से यह सुविधा प्रभावहीन सी हो

गई थी। अब यह सुविधा ऐसे सेवा क्षेत्रों जिनके कर्मचारियों का वेतन 25 हजार रुपए प्रतिमास तक है, सहित सभी क्षेत्रों को दी जाएगी।

दूसरा सरकार ने भविष्य निधि फंड के तहत नामांकित होने वाले नये लोगों को तीन वर्ष तक पेंशन देने की ज़िम्मेदारी उठाई है। यह उन सभी पर लागू होगा जिनका वेतन प्रतिमाह 15,000 रुपए तक है। हमें उम्मीद है कि इन कदमों से लाखों बेरोज़गार, और अनौपचारिक रोज़गार प्राप्त लोगों को फायदा होगा।

सरकारी नियुक्तियों में भ्रष्टाचार के की समाप्ति के लिए हमने निम्न एवं मध्य स्तरीय पदों के लिए साक्षात्कार को खत्म कर दिया है। इन पदों को अब पारदर्शी तरीके से परीक्षा परिणामों के आधार पर भरा जाएगा।

आप जानते हैं कि इंजीनियरिंग एवं मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश के लिए आयोजित प्रतियोगी परीक्षाओं के नतीजों का इस्तेमाल निजी कॉलेज भी करते हैं। मुझे बेरोज़गारों को लाभ देने वाली एक अन्य योजना की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है। सरकार और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम कई चयन परीक्षाएं आयोजित करते हैं। अब तक इन इम्तिहानों के परिणाम सरकार के पास ही होते थे। यहां से आगे हम अभ्यर्थी की स्वीकृति पर उससे जुड़ी सूचना एवं परीक्षा के परिणामों को सभी रोज़गार प्रदाताओं को दे देंगे। इससे एक सकारात्मक खुलापन आएगा। इससे निजी क्षेत्र के रोज़गार प्रदाताओं के पास वह निष्पक्ष तैयार डाटा उपलब्ध रहेगा जिसका इस्तेमाल वो स्क्रीनिंग की प्रक्रिया के लिए कर पाएंगे। इससे निजी क्षेत्र में नियोक्ता की कर्मचारी को ढूंढने में लगने वाली लागत में कमी आएगी। इससे अभ्यर्थियों की बढ़िया मैचिंग हो पाएगी।

आपको प्रधानमंत्री मुद्रा योजना की प्रगति के बारे में पता होगा। इस वर्ष लगभग 19 बिलियन डॉलर के 31 मिलियन से भी ज्यादा ऋण उद्मियों को दिए गए हैं। आपको यह जान कर खुशी होगी कि इनमें से 77 प्रतिशत महिलाएं हैं और 22 प्रतिशत अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति से हैं। यदि हम अनुदार ढंग से भी आकलन करें तो औसतन हर उपक्रम एक दीर्घकालिक जॉब देता है, इससे 31 मिलियन नये रोज़गारों के सृजन होने की बात पता चलती है। स्टैंडअप इण्डिया योजना महिलाओं एवं एससी एसटी वर्गों को 250,000 उद्यमिता ऋण भी उपलब्ध कराएगी।

कौशल विकास पर मेरी सरकार के कदम सभी जानते हैं। बजट में हमने शिक्षा क्षेत्र में दो पथ प्रदर्शक सुधार किए, जिनके बारे में मैं बताना चाहता हूं। हमारा उद्देश्य उच्च शिक्षण संस्थानों को मज़बूत बनाने का है ताकि उन्हें उच्च स्तरीय बनाया जा सके। शुरुआत में हम 10 सरकारी एवं 10 निजी संस्थानों के लिए नियमन का ढांचा खड़ा करेंगे, ताकि वे विश्व स्तरीय शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान बन सकें। इन संस्थानों के नियमन का ढांचा मौजूदा यूजीसी और एआईसीटीई से भिन्न होगा। उनके पास अकादमिक, प्रशासनिक और वित्तीय मामलों में पूर्ण स्वायत्तता होगी। हम 10 सरकारी विश्वविद्यालयों के लिए अगले पांच सालों तक अतिरिक्त संसाधन मुहैया कराएंगे। इससे साधारण भारतीयों को वहन करने योग्य विश्व स्तरीय शिक्षा का अवसर मिल जाएगा। यह कदम उच्च शिक्षा के नियमन की यात्रा की शुरुआत होगा।

इन संस्थानों को ऊपर से नीचे तक प्रभुत्व एवं नियंत्रण वाली संस्थाएं होने की बजाय स्व-प्रकटीकरण एवं पारदर्शिता के सिद्धांतों का समन्वयक एवं गाइड होना चाहिए। आखिरकार हम नियमन में सुधार के पीछे हमारी मंशा कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों को विश्व स्तरीय बनाने की है।

एक अन्य कदम स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में है। हमने छात्र-शिक्षक अनुपात में एवं शिक्षा की पहुंच के मामलों में बहुत परिमाणात्मक प्रगति की है। आज की ज्ञान अर्थव्यवस्था का आधार स्कूलों से शिक्षित होकर निकले छात्रों की गुणवत्ता पर है। हमने फैसला किया है कि यह गुणवत्ता सरकार का प्राथमिक लक्ष्य होगी। हम सर्व शिक्षा अभियान के तहत गुणवत्ता के लिए संसाधनों में वृद्धि करने के लिए धनराशि आवंटित करेंगे। इस धन का प्रयोग ज्ञान में गुणवत्ता की प्राप्ति हेतु स्थानिक कदमों एवं नवाचारों के लिए किया जाएगा। मैं आश्वस्त हूं कि आपमें सभी जो अभिभावक हैं एवं आपमें वो जो रोज़गार नियोक्ता हैं, उच्च एवं स्कूली शिक्षा में उठाए गए इन कदमों का स्वागत करेंगे।

अंत में देवियों और सज्जनों, हमने कई कदम उठाए हैं। कई उठाए जाने हैं। कुछ ने परिणाम देना शुरू कर दिया है। हमने अब तक जो हासिल किया है वह मुझे विश्वास देता है कि लोगों के समर्थन से हम भारत का रूपांतरण कर देंगे।

मैं जानता हूं यह मुश्किल होगा।

पर मैं जानता हूं कि यह साध्य है।

और मुझे विश्वास है कि यह किया जाएगा।

धन्यवाद।

एबी/जीआरएस-1680

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

12-मार्च-2016 14:26 IST

‘उन्नत एशिया: भविष्य के लिए निवेश’ पर एमओएफ-आईएमएफ के सम्मेलन में प्रधानमंत्री का संबोधन

महोदया लैगार्ड, मेरी कैबिनेट के साथी श्री अरुण जेटली, देवियाँ और सज्जनों,

मैं आप सभी का भारत और दिल्ली में स्वागत करता हूँ। दिल्ली एक संपन्न विरासत वाला शहर है और यहां कई ऐतिहासिक स्थल हैं। मुझे उम्मीद है कि आपमें से कुछ लोग इन्हें देखने का समय निकालेंगे।

मुझे खुशी है कि आईएमएफ ने इस सम्मेलन के लिए आयोजन में हमारे साथ भागीदारी की है। महोदया लैगार्ड यह कार्यक्रम भारत और एशिया के प्रति आपके अनुराग का एक और उदाहरण है। मैं आपको दूसरी बार इसका प्रबंध निदेशक नियुक्त किए जाने के लिए बधाई देता हूँ। इससे वैश्विक अर्थव्यवस्था के प्रति आपकी समझ और इस संस्थान की अगुआई करने की क्षमता में दुनिया का भरोसा जाहिर होता है। महोदया लैगार्ड लंबे समय से लंबित 2010 में मंजूर कोटा संशोधन आखिरकार लागू हो गया। विकासशील देशों को कोटा अब बेहतर तरीके से वैश्विक अर्थव्यवस्था में उनकी हिस्सेदारी के अनुरूप जाहिर होगा। इससे आईएमएफ में ज्यादा सामूहिक फैसले लिए जाएंगे। आपने विलंब के कारण होने वाले तनाव के प्रबंधन में शानदार नेतृत्व कौशल का प्रदर्शन किया है। कुल मिलाकर आपने 2010 के फैसलों को लागू कराने में सभी सदस्यों को राजी करने में अहम भूमिका निभाई है।

मुझे भरोसा है कि आईएमएफ इस सफलता पर खड़ा होने में कामयाब होगा। वैश्विक संस्थानों का सुधार एक जारी रहने वाली प्रक्रिया है। इसका असर वैश्विक अर्थव्यवस्था में होने वाले बदलावों में दिखना चाहिए और विकासशील देशों की हिस्सेदारी बढ़नी चाहिए। अभी तक आईएमएफ कोटा वैश्विक अर्थव्यवस्था में नजर नहीं आता है। कोटा में बदलाव कोई कुछ देशों की 'ताकत' में बढ़ोतरी का मुद्दा नहीं है। यह निष्पक्षता और ईमानदारी का मामला है। कोटा में बदलाव व्यवस्था की निष्पक्षता के लिए जरूरी है। गरीब राष्ट्रों के संदर्भ में ऐसे संस्थानों की ईमानदारी से वे महत्वाकांक्षी बनने और उम्मीदें बांधने में सक्षम होने चाहिए। इसीलिए मैं खुश हूँ कि आईएमएफ ने अक्टूबर, 2017 तक कोटा में बदलाव को अंतिम रूप देने का फैसला किया है।

भारत का हमेशा से बहुपक्षवाद में खासा भरोसा रहा है। हमारा मानना है कि जैसे-जैसे दुनिया ज्यादा जटिल होती जाएगी, वैसे-वैसे बहुपक्षवाद की भूमिका बढ़ती जाएगी। आपमें से कुछ को नहीं मालूम होगा कि भारत ने 1994 में हुई ब्रेटन वुड्स कांग्रेस में प्रतिनिधित्व किया था, जिसमें आईएमएफ का जन्म हुआ था। भारत के प्रतिनिधि श्री आर के शानमुखम शेट्टी थे, जो बाद में स्वतंत्र भारत के पहले वित्त मंत्री बने। इसलिए हमारे संबंध 70 साल से ज्यादा पुराने हैं। हम एशियाई बुनियादी ढांचा निवेश बैंक और नव विकास बैंक के संस्थापक सदस्य हैं। हमें भरोसा है कि ये बैंक एशिया के विकास में अहम भूमिका निभाएंगे।

कोष के पास खासी आर्थिक विशेषज्ञता है। इसके सभी सदस्यों को इसका फायदा उठाना चाहिए। हम सभी को ऐसी नीतियों पर काम करना चाहिए, जिससे व्यापक अर्थव्यवस्था में स्थायित्व आए, विकास में तेजी आए और समावेशन में बढ़ोतरी हो। कोष इसमें खासी सहायता दे सकता है।

परामर्श के अलावा आईएमएफ नीति निर्माण की क्षमता विकसित करने में मदद कर सकता है। मुझे बांग्लादेश, भूटान, मालदीव, नेपाल, श्रीलंका, भारत और आईएमएफ के साथ नई साझेदारी की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है। हम दक्षिण एशिया क्षेत्रीय प्रशिक्षण और प्रौद्योगिकी सहायता केंद्र की स्थापना पर सहमत हो गए हैं। केंद्र सरकारी और सार्वजनिक क्षेत्र के कर्मचारियों को प्रशिक्षण उपलब्ध कराएगा। इससे उनके कौशल में इजाफा होगा और नीति निर्माण में मदद मिलेगी। इससे सरकारी और सार्वजनिक संस्थानों को तकनीक मदद भी उपलब्ध कराई जाएगी।

चलिए मैं इस सम्मेलन के विषय पर बात करता हूँ। मैं दो मुद्दों पर बात करूंगा: पहला, 'एशिया क्यों?' और दूसरा, 'भारत कैसे?' एशिया ही क्यों अहम है और भारत कैसे योगदान कर सकता है?

कई जानी लोगों ने कहा है कि 20वीं सदी एशिया की है और होगी। दुनिया के पांच में तीन लोग एशिया में निवास करते हैं। वैश्विक उत्पादन और कारोबार में उसकी हिस्सेदारी एक-तिहाई है। वैश्विक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में उनकी हिस्सेदारी लगभग 40 फीसदी है। यह दुनिया के सबसे ज्यादा गतिशील क्षेत्रों में से एक भी है। भले ही एशिया में सुस्ती है, लेकिन यह क्षेत्र विकसित देशों की तुलना में तीन गुना तेजी से विकसित हो रहा है। इसलिए वैश्विक आर्थिक सुधार में उम्मीद की किरण है।

जब हम एशिया के बारे में सोचते हैं, तो हमें कई तरह से इसकी विशेषताओं को भी मानना चाहिए।

उदाहरण के लिए, इस सम्मेलन का विषय 'भविष्य के लिए निवेश' है। एशियाई परिवार स्वाभाविक तौर पर दुनिया के दूसरे हिस्सों की तुलना में ज्यादा बचत करते हैं। इसलिए वे भविष्य के लिए निवेश करते हैं। अर्थशास्त्रियों ने एशियाई देशों की बचत की सोच की सराहना की है। एशियाई लोग घर खरीदने के लिए उधार लेने के बजाय बचत करने के उत्सुक रहते हैं।

कई एशियाई देश पूंजी बाजारों की तुलना में विकासात्मक वित्तीय संस्थानों और बैंकों पर ज्यादा निर्भर रहे हैं। इससे वित्तीय क्षेत्र के लिए एक वैकल्पिक मॉडल मिलता है।

मजबूत परिवारिक सिद्धांत पर सामाजिक स्थायित्व पैदा होना एशिया के विकास की एक अन्य विशेषता है। एशियाई लोग कुछ बातों को अगली पीढ़ी के लिए छोड़ने के उत्सुक रहते हैं।

महोदया लैगार्ड आप दुनिया की शीर्ष महिला नेताओं में से एक हैं। आप एशिया की एक अन्य विशेषता में दिलचस्पी लेंगी, जिस पर कम ही टिप्पणी की जाती है: जो महिला नेताओं की ज्यादा संख्या है। भारत, श्रीलंका, बांग्लादेश, पाकिस्तान, इंडोनेशिया, थाईलैंड, कोरिया, म्यांमार और फिलीपींस: इन सभी देशों में महिलाएं राष्ट्रीय नेता रही हैं। एशिया ने कई अन्य देशों की तुलना में अच्छा काम किया है। आज भारत के चार बड़े राज्यों पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, गुजरात और राजस्थान की अगुआई लोकतांत्रिक तरीके से चुनी गई महिलाएं कर रही हैं। भारत में संसद के निचले सदन की सभापति भी महिला ही हैं।

भारत का एशिया में खास महत्व है। भारत ने ऐतिहासिक तौर पर एशिया के लिए कई तरीकों से योगदान किया है। भारत से बौद्ध धर्म चीन, जापान और दक्षिण-पूर्व एशिया के कई देशों में फैला। इससे महाद्वीप की संस्कृति व्यापक स्तर पर प्रभावित हुई। भारत के दक्षिण और पश्चिम के राज्य हजारों साल तक एशिया के दूसरे हिस्सों से व्यापक स्तर पर समुद्री कारोबार से जुड़े रहे। भारत के राष्ट्रीय आंदोलन का असर दूसरे एशियाई देशों पर भी दिखा, जिसमें अहिंसा के माध्यम से गुलामी से मुक्ति पाई जा सकी। इससे राष्ट्रीयता की भावना का भी प्रसार हुआ। इसे संकीर्ण भाषायी और क्षेत्रीय पहचानों से जोड़ने की जरूरत नहीं है। संस्कृति में कहा जाता है 'वसुधैव कुटुम्बकम्', इसका मतलब है कि पूरी दुनिया एक परिवार है। इससे सभी पहचानों में एकता की भावना का पता चलता है।

भारत ने इस मिथक को झुठला दिया है कि लोकतंत्र और आर्थिक विकास साथ-साथ नहीं चल सकते। भारत ने 7 प्रतिशत की विकास दर हासिल की है, हालांकि भारत एक मजबूत लोकतंत्र भी है। कभी कभार माना जाता है कि लोकतंत्र भारत के लिए औपनिवेशिक उपहार है। लेकिन

इतिहासकार हमें बताते हैं कि भारत ने कई साल पहले ही लोकतांत्रिक स्वशासन विकसित कर लिया था, जब दुनिया के कई हिस्सों में लोकतंत्र के बारे में कोई जानकारी भी नहीं थी।

भारत ने यह भी दिखाया है कि विविधतापूर्ण देश प्रबंधन के माध्यम से आर्थिक विकास को बढ़ावा दे सकता है और सामाजिक स्थायित्व को बरकरार रखा जा सकता है। एक तरह से हम 'सहकारी और प्रतिस्पर्धी संघवाद' के माध्यम से हम ऐसा कर रहे हैं। राज्य और केंद्र समान उद्देश्यों पर काम करने के लिए एक साथ आ सकते हैं। अच्छी नीतियों पर काम करने वाले और गरीबों के लिए जरूरी सेवाएं देने वाले राज्यों का दूसरे राज्य भी अनुसरण करते हैं।

हमारा तेज आर्थिक विकास एशिया में खास है। हमने अपने साझेदारों की कीमत पर कारोबार में बढ़त बनाने का कभी प्रयास नहीं किया। हम 'अपने आर्थिक फायदों के लिए पड़ोसियों की परवाह नहीं करना' जैसी आर्थिक नीतियों पर काम नहीं करते हैं। हमने अपनी मुद्रा को कभी कमजोर नहीं किया है। हमने चालू खाता घाटा बढ़ाकर दुनिया और एशिया के लिए मांग पैदा की है। इस प्रकार हम बेहतर एशियाई और वैश्विक आर्थिक नागरिक हैं और अपने कारोबारी साझेदारों के लिए मांग के स्रोत हैं।

हम सभी एशिया को सफल बनाना चाहते हैं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि भारत एशिया की संपन्नता और विकास में योगदान कर सकता है। वैश्विक समस्याओं के बीच मुझे यह कहते हुए खुशी है कि भारत में व्यापक आर्थिक स्थिरता है और उम्मीद, गतिशीलता व अवसरों की किरण बना हुआ है। महोदय लैंगार्ड आपने भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए 'सुनहरा स्थल' करार दिया है। मेरी राय में यह बड़ा सम्मान है और साथ ही बड़ी जिम्मेदारी भी है। बीते कुछ हमने कई उपलब्धियां हासिल की हैं और हमारी प्राथमिकताएं आगे रही हैं।

हमने महंगाई में कमी लाने, राजकोषीय मजबूती, भुगतान संतुलन और विदेशी मुद्रा भंडार को मजबूत बनाए रखने में कामयाबी हासिल की है। मुश्किल बाह्य परिदृश्य में और लगातार दूसरे साले कमजोर बारिश के बावजूद हमने 7.6 प्रतिशत की विकास दर हासिल की है, जो दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में सबसे ज्यादा है।

हमने अपने आर्थिक शासन में सुधार किया है। बैंकों और नियामकों के फैसलों में दखलंदाजी और भ्रष्टाचार गुजरे वक्त की बात हो गई हैं।

हमने सफल वित्तीय समावेशन कार्यक्रम चलाया है, जिससे बीते कुछ महीनों के दौरान बैंकिंग सुविधाओं से वंचित 20 करोड़ लोगों को जोड़ा जा चुका है।

हमारे वित्तीय समावेशन कार्यक्रम के चलते हमने रसोई गैस में प्रत्यक्ष नकदी हस्तांतरण के दुनिया के सबसे बड़े और सबसे ज्यादा सफल कार्यक्रम को चलाने में कामयाबी हासिल की है। हमारी इसे खादय पदार्थों, केरोसिन और उर्वरकों जैसे दूसरे क्षेत्रों में भी इसे बढ़ाने की योजना है। इससे लक्ष्य और सार्वजनिक व्यय की गुणवत्ता में भी सुधार हुआ है।

हमने एफडीआई के लिए लगभग सभी सेक्टरों को खोल दिया है।

भारत ने 2015 में विश्व बैंक के कारोबार करने के संकेतकों में सबसे ऊंची रैंक हासिल की।

भारत ने 2015 में कई भौतिक संकेतकों में उच्च स्थान हासिल किया है, जिसमें शामिल हैं

कोयला, बिजली, यूरिया, उर्वरक और मोटर वाहन उत्पादन;

बड़े बंदरगाहों पर कार्गो की हैंडलिंग और बंदरगाहों में सबसे तेज टर्नअराउंड;

नए राजमार्ग किलोमीटरों का आवंटन;

सॉफ्टवेयर निर्यात;

हमारे द्वारा उठाए गए कदमों के बाद उद्यमशीलता तेजी से बढ़ रही है। भारत तकनीक स्टार्टअप्स की संख्या के मामले में अमेरिका, ब्रिटेन और इजरायल के बाद चौथा बड़ा देश बन गया है। इकोनॉमिस्ट मैगजीन ने भारत को ई-कॉमर्स के लिए नया प्रदेश करार दिया है।

हमारा इरादा इन उपलब्धियों पर निर्भर रहने का नहीं है, क्योंकि मेरा एंजोडा 'बदलाव के लिए सुधार' का है। हमारे हाल के बजट में हमारी भविष्य की योजनाओं और महत्वाकांक्षाओं के लिए एक रोडमैप उपलब्ध कराया गया है। हमारी दर्शन स्पष्ट है: संपदा निर्माण के लिए माहौल तैयार करना और इस संपदा का सभी भारतीयों, विशेषकर गरीबों, कमजोर, किसानों और वंचित समुदायों के बीच प्रसार करना है।

हमने ग्रामीण और कृषि क्षेत्र में निवेश बढ़ाया है, क्योंकि अधिकांश भारत वहीं पर निवास करता है। लेकिन हमारी मदद किसानों को कुछ देने पर आधारित नहीं है। हम निम्नलिखित कदमों से किसानों की आय दोगुनी करना चाहते हैं:

- सिंचाई बढ़ाकर
- बेहतर जल प्रबंधन
- ग्रामीण संपदा तैयार करके
- उत्पादकता बढ़ाकर
- विपणन में सुधार
- बिचौलियों के मार्जिन में कमी

आय में नुकसान से बचाकर

हम कृषि विपणन में सुधार पेश कर रहे हैं और एक बड़ा कृषि बीमा कार्यक्रम पेश किया है।

कृषि के अलावा हमने सड़कों और रेलवे पर सार्वजनिक निवेश बढ़ाया है। इससे अर्थव्यवस्था की उत्पादकता में और हमारे लोगों के लिए संपर्क में सुधार होगा। सार्वजनिक निवेश इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि निजी निवेश कमजोर हो रहा है।

हमने कुछ अन्य सुधार भी किए हैं, जिससे संपदा के निर्माण और आर्थिक अवसरों को पैदा करने में मदद मिलेगी। देश में उदयमशीलता की संभावनाओं को देखते हुए मेरा लक्ष्य स्टार्टअप इंडिया और स्टैंडअप इंडिया है। बजट में स्टार्टअप्स के लिए माहौल में सुधार करने के लिए भी कदम उठाए गए हैं।

युवाओं की रोजगारपरकता सुनिश्चित करने के लिए मेक इन इंडिया अभियान की सफलता अहम है। भारत सरकार का अपने श्रमबल को कुशल बनाने का महत्वाकांक्षी एजेंडा भी है। कौशल विकास में संस्थानों का निर्माण भी शामिल है। अब हमारे पास एक कौशल विकास कार्यक्रम है, जो 29 क्षेत्रों में फैला है और इसके दायरे में पूरा देश आता है।

भारत इस ग्रह की रक्षा के लिहाज से एक जिम्मेदार वैश्विक नागरिक है। भारत ने सीओपी21 सम्मेलन में एक सकारात्मक भूमिका निभाई है। अब और 2030 के बीच हमारा तेजी से विकास और जीडीपी की तुलना में उत्सर्जन में 33 फीसदी तक कमी लाने का इरादा है। तब तक हमारी 40 फीसदी स्थापित बिजली क्षमता गैर जीवाश्म ईंधन से होगी। हम 2030 तक 2.5 अरब टन से ज्यादा कार्बन डाई ऑक्साइड के बराबर अतिरिक्त कार्बन सिक का निर्माण करेंगे, जो अतिरिक्त वन और वृक्ष लगाकर किया जाएगा। ये पहल एक ऐसे देश की तरफ से की जा रही हैं, जहां प्रति व्यक्ति भूमि की उपलब्धता कम है और प्रति व्यक्ति उत्सर्जन भी कम है। हमने अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन की शुरुआत करके बढ़त हासिल कर ली है, जिसमें कर्क रेखा और मकर रेखा के बीच आने वाले सौर संसाधन से संपन्न 121 देश आते हैं। इससे कई विकासशील देशों को फायदा होगा, जिसमें एशिया के भी तमाम देश शामिल हैं। भारत ने कार्बन सब्सिडी व्यवस्था की ओर भी रुख किया है। भारत ऐसे कुछ देशों में से एक है, जहां कोयले पर सेस के तौर पर कार्बन टैक्स लगाया गया है। 2016-17 के बजट में कोयला सेस को दोगुना कर दिया गया है।

भारत ने एशिया में कई भागीदारी पहल की हैं। हम 'पूर्व की ओर देखो नीति' को 'पूर्व के लिए करो नीति' में बदल रहे हैं। हमारी सोच लचीली है। हम दक्षिण एशिया के पड़ोसियों, आसियान में भागीदारों और सिंगापुर, जापान व कोरिया में अपने साझेदारों के साथ विभिन्न तरीकों और विभिन्न रफ्तारों से जुड़े हैं। हमारा आगे भी लगातार ऐसा ही करने का इरादा है।

मेरा सपना भारत में बदलाव लाने का है। इसके साथ ही हमारा समान सपना उन्नत एशिया है-ऐसा एशिया जहां दुनिया की आधी से ज्यादा आबादी खुशी और पूर्णता के साथ रहती हो। हमारी समान विरासत और परस्पर आदर, हमारे समान लक्ष्य और समान नीतियां टिकाऊ विकास व साझा संपन्नता का निर्माण कर सकती हैं और ऐसा करना चाहिए।

एक बार फिर से मैं आप सभी का भारत में स्वागत करता हूं। मैं सम्मेलन की सफलता की कामना करता हूं।

आपका धन्यवाद।

एमपी/एनआर- 1459

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

14-अप्रैल-2016 18:33 IST

मध्य प्रदेश के महु में "ग्राम उदय से भारत उदय" के शुभारंभ के अवसर पर प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

विशाल संख्या में पधारे हुए मेरे प्यारे भाइयों और बहनों। ये मेरा सौभाग्य है कि आज डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर की 125वीं जन्म जयंती निमित्त, जिस भूमि पर इस महा पुरुष ने जन्म लिया था, जिस धरती पर सबसे पहली बार जिसके चरण-कमल पड़े थे, उस धरती को नमन करने का मुझे अवसर मिला है।

मैं इस स्थान पर पहले भी आया हूँ। लेकिन उस समय के हाल और आज के हाल में आसमान-जमीन का अंतर है और मैं मध्य प्रदेश सरकार को, श्रीमान सुंदरलाल जी पटवा ने इसका आरंभ किया, बाद में श्रीमान शिवराज की सरकार ने इसको आगे बढ़ाया, परिपूर्ण किया। इसके लिए हृदय से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ उनका अभिनंदन करता हूँ।

बाबा साहेब अम्बेडकर एक व्यक्ति नहीं थे, वे एक संकल्प का दूसरा नाम थे। बाबा साहेब अम्बेडकर जीवन जीते नहीं थे वो जीवन को संघर्ष में जोड़ देते थे, जोत देते थे। बाबा साहेब अम्बेडकर अपने मान-सम्मान, मर्यादाओं के लिए नहीं लेकिन समाज की बुराईयों के खिलाफ जंग खेल करके आखिरी झोर पर बैठा हुआ दलित हो, पीड़ित हो, शोषित हो, वंचित हो। उनको बराबरी मिले, उनको सम्मान मिले, इसके लिए अपमानित हो करके भी अपने मार्ग से कभी विचलित नहीं हुए। जिस महापुरुष के पास इतनी बड़ी ज्ञान संपदा हो, जिस महापुरुष के युग में विश्व की गणमान्य यूनिवर्सिटिस की डिग्री हो, वो महापुरुष उस कालखंड में अपने व्यक्तिगत जीवन में लेने, पाने, बनने के लिए सारी दुनिया में अवसर उनके लिए खुले पड़े थे। लेकिन इस देश के दलित, पीड़ित, शोषित, वंचितों के लिए उनके दिल में जो आग थी, जो उनके दिल में कुछ कर गुजरने का इरादा था, संकल्प था। उन्होंने इन सारे अवसरों को छोड़ दिया और वह अवसरों को छोड़ करके, फिर एक बार भारत की मिट्टी से अपना नाता जोड़ करके अपने आप को खपा दिया।

आज 14 अप्रैल बाबा साहेब अम्बेडकर की जन्म जयंती हो और मुझे हमारे अखिल भारतीय भिक्षुक संघ के संघ नायक डॉ. धम्मवीरयो जी का सम्मान करने का अवसर मिला। वो भी इस पवित्र धरती पर अवसर मिला। बहुत कम लोगों को पता होगा कि कैसी बड़ी विभूति आज हमारे बीच में है।

कहते हैं 100 भाषाओं के वो जानकार हैं, 100 भाषाएं, Hundred Languages. और बर्मा में जन्मे बाबा साहेब अम्बेडकर उन्हें बर्मा में मिले थे और बाबा साहेब के कहने पर उन्होंने भारत को अपनी कर्म भूमि बनाया और उन्होंने भारत में बुद्ध सत्त्व से दुनिया को जोड़ने को प्रयास अविरत किया।

मेरा तो व्यक्तिगत नाता उनके इतना निकट रहा है, उनके इतने आशीर्वाद मुझे मिलते रहे हैं। मेरे लिए वो एक प्रेरणा को स्थान रहे हैं। लेकिन आज मुझे खुशी है कि मुझे उनका सम्मान करने का सौभाग्य मिला। बाबा साहेब अम्बेडकर के साथ उनका वो नाता और बाबा साहेब अम्बेडकर ने कहा तो पूरा जीवन भारत के लिए खपा दिया। और ज्ञान की उनकी कोई तुलना नहीं कर सकता, इतने विद्यमान हैं। वे आज हमारे मंच पर आए इस काम की शोभा बढ़ाई इसलिए मैं डॉ. धम्मवीरयो जी का, संघ नायक जी का हृदय से आभार करता हूँ। मैं फिर से एक बार प्रणाम करता हूँ।

आज 14 अप्रैल से आने वाली 24 अप्रैल तक भारत सरकार के द्वारा सभी राज्यों सरकारों के सहयोग के साथ “ग्राम उदय से भारत उदय”, एक व्यापक अभियान प्रारंभ हो रहा है और मुझे खुशी है कि बाबा साहेब अम्बेडकर ने हमें जो संविधान दिया। महात्मा गांधी ने ग्राम स्वराज की जो भावना हमें दी, ये सब अभी भी पूरा होना बाकी है। आजादी के इतने सालों के बाद जिस प्रकार से हमारे गांव के जीवन में परिवर्तन आना चाहिए था, जो बदलाव आना चाहिए था। बदले हुए युग के साथ ग्रामीण जीवन को भी आगे ले जाने का आवश्यक था। लेकिन ये दुख की बात है अभी भी बहुत कुछ करना बाकि है। भारत का आर्थिक विकास 5-50 बढ़े शहरों से होने वाला नहीं है। भारत का विकास 5-50 बढ़े उद्योगकारों से नहीं होने वाला। भारत का विकास अगर हमें सच्चे अर्थ में करना है और लंबे समय तक Sustainable Development करना है तो गांव की नींव को मजबूत करना होगा। तब जा करके उस पर विकास की इमारत हम Permanent बना सकते हैं।

और इसलिए इस बार आपने बजट में भी देखा होगा कि बजट पूरी तरह गांव को समर्पित है, किसान को समर्पित है। और एक लंबे समय तक देश के ग्रामीण अर्थकारण को नई ऊर्जा मिले, नई गति मिले, नई ताकत मिले उस पर बल दिया गया है। और मैं साफ देख रहा हूँ, जो भावना महात्मा गांधी की अभिव्यक्ति में आती थी, जो अपेक्षा बाबा साहेब अम्बेडकर

संविधान में प्रकट हुई है, उसको चरितार्थ करने के लिए, टुकड़ों में काम करने से चलने वाला नहीं है। हमें एक जितने भी विकास के स्रोत हैं, सारे विकास के स्रोत को गांव की ओर मोड़ना है।

मैं सरकार में आने के बाद अगल-अलग कामों का Review करता रहता हूं, बहुत बारिकी से पूछता रहता हूं। अभी कुछ महिने पहले मैं भारत में ऊर्जा की स्थिति का Review कर रहा था। मैंने अफसरों को पूछा कि आजादी के अब 70 साल होने वाले हैं कुछ ही समय के बाद। कितने गांव ऐसे हैं जहां आजादी के 70 साल होने आए, अभी भी बिजली का खंभा नहीं पहुंचा है, बिजली का तार नहीं पहुंचा है। आज भी वो गांव के लोग 18वीं शताब्दी की जिंदगी में जी रहे हैं, ऐसे कितने गांव हैं। मैं सोच रहा था 200-500 शायद, दूर-सुदूर कहीं ऐसी जगह पर होंगे जहां संभव नहीं होगा। लेकिन जब मुझे बताया गया कि आजादी के 70 साल होने को आए हैं लेकिन 18,000 गांव ऐसे जहां बिजली का खंभा भी नहीं पहुंचा है। अभी तक उन 18,000 हजार गांव के लोगों ने उजियारा देखा नहीं है।

20वीं सदी चली गई, 19वीं शताब्दी चली गई, 21वीं शताब्दी के 15-16 साल बीत गए, लेकिन उनके नसीब में एक लट्टू भी नहीं था। मेरा बैचन होना स्वाभाविक था। जिस बाबा साहेब अम्बेडकर ने वंचितों के लिए जिंदगी गुजारने का संदेश दिया हो, उस शासन में 18,000 गांव अंधेरे में गुजारा करते हों, ये कैसे मंजूर हो सकता है।

मैंने अफसरों को कहा कितने दिन मैं पूरा करूँगे, उन्होंने न जवाब मुझे दिन में दिया, न जवाब महिनों में दिया, उन्होंने जवाब मुझे सालों में दिया। बोले साहब सात साल तो कम से कम लग जाएंगे। मैंने सुन लिया मैंने कहा भई देखिए सात साल तक तो देश इंतजार नहीं कर सकता, वक्त बदल चुका है। हमने हमारी गति तेज करनी होगी। खैर उनकी कठिनाईयां थी वो उलझन में थे कि प्रधानमंत्री कह रहे हैं कि सात साल तो बहुत हो गया कम करो। तो बराबर मार-पीट करके वो कहने लगे साहब बहुत जोर लगाये तो 6 साल में हो सकता है।

खैर मैंने सारी जानकारीयां ली अभ्यास करना शुरू किया और लाल किले पर से 15 अगस्त को जब भाषण करना था, बिना पूछे मैंने बोल दिया कि हम 1000 दिन में 18,000 गांव में बिजली पहुंचा देंगे। मैंने देश के सामने तिरंगे झंडे की साक्षी में लाल किले पर से देश को वादा कर दिया। अब सरकार दोड़ने लगी और आज मुझे खुशी के साथ कहना है कि शायद ये सपना मैं 1000 दिन से भी कम समय में पूरा कर दूंगा। जिस काम के लिए 70 साल लगे, 7 साल और इंतजार मुझे मंजूर नहीं है। मैंने हजार दिन में काम पूरा करने का बड़ा उठाया पूरी सरकार को लगाया है। राज्य सरकारों को साथ देने के लिए आग्रह किया है और तेज गति से काम चल रहा है।

और व्यवस्था भी इतनी Transparent है। कि आपने अपने मोबाइल पर 'गर्व' - 'GARV' ये अगर App लांच करेंगे तो आपको Daily किस गांव में खंभा पहुंचा, किस गांव में तार पहुंचा, कहां बिजली पहुंची, इसका Report आपकी हथेली में मोबाइल फोन पर यहां पर कोई भी देख सकता है। ये देश की जनता को हिसाब देने वाली सरकार है, पल-पल का हिसाब देने वाली सरकार है, पाई-पाई का हिसाब देने वाली सरकार है और हिन्दुस्तान के सामान्य मानवी के सपनों को पूरा करने के लिए तेज गति से कदम आगे बढ़ाने वाली सरकार है। और उसी का परिणाम है कि आज जिस गांव में इतने सालों के बाद बिजली पहुंची है उन गांवों में ऊर्जा उत्सव मनाए जा रहे हैं, हफ्ते भर नाच-गान चल रहे हैं। लोग खुशियां मना रहे हैं कि चलो गांव में बिजली आई, अब घर में भी आ जाएंगी ये mood बना है।

हमारी दुनिया बिजली की बात तो दुनिया के लिए 18वीं, 19वीं शताब्दी की बात है। आज विश्व को optical fiber चाहिए, आज विश्व को digital network से जुड़ना है। जो दुनिया में है वो सारा उसकी हथेली पर होना चाहिए। ये आज सामान्य-सामान्य नागरिक भी चाहता है। अगर दुनिया के हर नागरिक के हाथ में उसके मोबाइल फोन में पूरा विश्व उपलब्ध है तो मेरे हिन्दुस्तान के गांव के लोगों के हाथ में क्यों नहीं होना चाहिए। ढाई लाख गांव जिसको digital connectivity देनी है, optical fiber network लगाना है। कई वर्षों से सपने देखें गए, काम सोचा गया लेकिन कहीं कोई काम नजर नहीं आया। मैं जानता हूं ढाई लाख गांवों में optical fiber network करना कितना कठिन है, लेकिन कठिन है तो हाथ पर हाथ रख करके बैठे थोड़े रहना चाहिए। कहीं से तो शुरू करना चाहिए और एक बार शुरू करेंगे तो गति भी आएगी और सपने पूरे भी

होंगे। आखिरकर बाबा साहेब अम्बेडकर जैसे संकल्प के लिए जीने वाले महापुरुष हमारी प्रेरणा हो तो गांव का भला क्यों नहीं हो सकता है।

हमारा देश का किसान, किसान कुछ नहीं मांग रहा है। किसान को अगर पानी मिल जाए तो मिट्टी में से सोना पैदा कर सकता है। बाकि सब चीजें वो कर सकता है। उसके पास वो हुनर है, उसके पास वो सामर्थ्य है, वो मेहनतकश है वो कभी पीछे मुड़ करके देखता नहीं है। और किसान, किसान अपनी जेब भरे तब संतुष्ट होता है वो स्वभाव का नहीं है, सामने वाले का पेट भर जाए तो किसान संतुष्ट हो जाता है ये उसका चरित्र होता है। और जिसे दूसरे का पेट भरने से संतोष मिलता है वो परिश्रम में कभी कमी नहीं करता है, कभी कटौती नहीं करता है।

और इसलिए हमने देश के किसानों के सामने एक संकल्प रखा है। गांव के अर्थ कारण को बदलना है। 2022 में किसान की income double करना बड़े-बड़े बुद्धिमान लोगों, बड़े-बड़े अनुभवी लोगों ने, बड़े-बड़े अर्थशास्त्रियों ने कहा है कि मोदी जी ये बहुत मुश्किल काम है। मुश्किल है तो मैं भी जानता हूं। अगर सरल होता तो ये देश की जनता मुझे काम न देती, देश की जनता ने काम मुझे इसलिए दिया है कि कठिन का ही तो मेरे नसीब में आए। काम कठिन होगा लेकिन इरादा उतना ही संकल्पबद्ध हो तो फिर रास्ते भी निकलते हैं और रास्ते मिल रहे हैं।

मैं शिवराज जी को बधाई देता हूं उन्होंने पूरी डिजाइन बनाई है, मध्य प्रदेश में 2022 तक किसानों की आय double करने का रास्ता क्या-क्या हो सकता है, initiative क्या हो सकते हैं, तरीके क्या हो सकते हैं, पूरा detail मैं उन्होंने बनाया। मैंने सभी राज्य सरकारों से आग्रह किया कि आप भी अपने तरीके से सोचिए। आपके पार जो उपलब्ध resource है, उसके आधार पर देखिए।

लेकिन ग्रामीण अर्थकारण भारत की अर्थनीति को ताकत देने वाला है। जब तक गांव के व्यक्ति का Purchasing Power बढ़ेगा नहीं और हम सोचें कि नगर के अंदर कोई माल खरीदने आएंगा और नगर की economy चलेगी, तो चलने वाली नहीं है। इंदौर का बाजार भी तेज तब होगा, जब मऊ के गांव में लोगों की खरीद शक्ति बढ़ी होगी, तब जा करके इंदौर जा करके खरीदी करेगा और इसलिए ग्रामीण अर्थकारण की मजबूती ये भारत में आर्थिक चक्र को तेज गति देने का सबसे बड़ा Powerful engine है। और हमारी सारी विकास की जो दिशा है वो दिशा यही है।

बाबा साहेब अम्बेडकर जैसे एक प्रकार कहते थे कि शिक्षित बनो, संगठित बनो, संघर्ष करो। साथ-साथ उनका सपना ये भी था कि भारत आर्थिक रूप से समृद्ध हो, सामाजिक रूप से empowered हो और Technologically के लिए upgraded हो। वे सामाजिक समता, सामाजिक न्याय के पक्षकार थे, वे आर्थिक समृद्धि के पक्षकार थे और वे आधुनिक विज्ञान के पक्षकार थे आधुनिक Technology के पक्षकार थे। और इसलिए सरकार ने भी ये 14 अप्रैल से 24 अप्रैल, 14 अप्रैल बाबा अम्बेडकर साहेब की 125वीं जन्म जन्म जयंती और 24 अप्रैल पंचायती राज दिवस इन दोनों का मेल करके बाबा साहेब अम्बेडकर से सामाजिक-आर्थिक कल्याण का संदेश लेता हुए गांव-गांव जा करके गांव के एक ताकत का निर्णय लिया है।

आज सरकारी खजाने से, भारत सरकार के खजाने से एक गांव को करीब-करीब 75 लाख रुपये से ज्यादा रकम उसके गांव में हाथ में आती है। अगर योजनाबद्ध दीर्घ दृष्टि के साथ हमारा गांव का व्यक्ति करें काम, तो कितना बड़ा परिणाम ला सकता है ये हम जानते हैं।

हमारी ग्राम पंचायत की संस्था है। देश संविधान की मर्यादाओं से चलता है, कानून व्यवस्था, नियमों से चलता है। ग्राम पंचायत के अंदर उस भावना को प्रज्ज्वलित रखना आवश्यक है, वो निरंतर चेतना जगाए रखना आवश्यक है और इसलिए गांव के अंदर पंचायत व्यवस्था अधिक सक्रिय कैसे हो, अधिक मजबूत कैसे हो, दीर्घ दृष्टि वाली कैसे बने, उस दिशा में प्रयत्न करने की आवश्यकता, गांव-गांव में एक चेतना जगाकर के हो सकती है। बाबा साहेब अम्बेडकर का व्यक्तित्व ऐसा

है कि गांव के अंदर वो चेतना जगा सकता है। गांव को संविधान की मर्यादा में आगे ले जाने के रास्ते उपलब्ध है। उसका पूरा इस्तेमाल करने का रास्ता उसको दिखा सकता है। अगर एक बार हम निर्णय करें।

मैं आज इंदौर जिले को भी हृदय से बधाई देना चाहता हूं और मैं मानता हूं कि इंदौर जिले ने जो काम किया है। पूरे जिले को खुले में शौच जाने से मुक्त करा दिया। यह बहुत उत्तम काम.. अगर 21वीं सदी में भी मेरी माँ-बहनों को खुले में शौच के लिए जाना पड़े, तो इससे बड़ी हम लोगों के लिए शर्मिन्दगी नहीं हो सकती। लेकिन इंदौर जिले ने, यहां की सरकार की टीम ने, यहां के राजनीतिक नेताओं ने, यहां के सामाजिक आगेवानों ने, यहां के नागरिकों ने, यह जो एक सपना पूरा किया, मैं समझता हूं बाबा साहेब अम्बेडकर को एक उत्तम श्रद्धांजलि इंदौर जिले ने दी है। मैं इंदौर जिले को बधाई देता हूं। और पूरे देश में एक माहौल बना है। हर जिले को लग रहा है Open defecation-free होने के लिए हर जिले में यह स्पर्धा शुरू हुई है। भारत को स्वच्छ बनाना है तो हमें सबसे पहले हमारी माँ-बहनों को शौचालय के लिए खुले में जाना न पड़ रहा है, इससे मुक्ति दिलानी होगी। उसके लिए बहुत बड़ी मात्रा में हर किसी को मिलकर के काम करना पड़ेगा। ये करे, वो न करे; ये credit ले, वो न ले; इसके लिए काम नहीं है, यह तो एक सेवा भाव से करने वाला काम है, जिम्मेवारी से करने वाला काम है। इस "ग्रामोदय से भारत उदय" का जो पूरा मंत्र है, उसमें इस बात पर भी बल दिया गया है।

मेरे प्यारे भाइयो-बहनों, हमारे देश में हम कभी-कभी सुनते तो बहुत है। कई लोग छह-छह दशक से अपने आप को गरीबों के मसीहा के रूप में प्रस्तुत करते रहे हैं। जिनकी जुबां पर दिन-रात गरीब-गरीब-गरीब हुआ करता है। वे गरीबों के लिए क्या कर पाए, इसका हिसाब-किताब चौंकाने वाला है। मैं अपना समय बर्बाद नहीं करता। लेकिन क्या कर रहा हूं जो गरीबों की जिन्दगी में बदलाव ला सकता है। अभी आपने देखा मध्य प्रदेश के गरीबों के लिए, दलितों के लिए, पिछड़ों के लिए जो योजनाएं थी, उसके लोकार्पण का कार्यक्रम हुआ। कई लाभार्थियों को उनकी चीजें दी गईं। इन सब में उस बात का संदेश है कि Empowerment of People. उनको आगे बढ़ने का सामर्थ्य दिया जा रहा है। जो मेरे दिव्यांग भाई-बहन हैं, किसी न किसी कारण शरीर का एक अंग उनको साथ नहीं दे रहा है। उनको आज Jaipur Foot का फायदा मिला और यह आंदोलन चलता रहने वाला है। यहां तो एक टोकन कार्यक्रम हुआ है और बाबा साहेब अम्बेडकर की जन्मभूमि पर यह कार्यक्रम अपने आप को एक समाधान देता है।

भाइयो-बहनों, आपको जानकर के हैरानी होगी। आज भी हमारे करोड़ों-करोड़ों गरीब भाई-बहन, जो झुग्गी-झोपड़ी में, छोटे घर में, कच्चे घर में गुजारा करते हैं, वे लकड़ी का चूल्हा जलाकर के खाना पकाते हैं। विज्ञान कहता है कि जब माँ लकड़ी का चूल्हा जलाकर खाना पकाती है। एक दिन में 400 सिगरेट जितना धुँआ उस माँ के शरीर में जाता है। आप कल्पना कर सकते हो, जिस माँ के शरीर में 400 सिगरेट जितना धुँआ जाएगा, वो माँ बीमार होगी कि नहीं होगी? उसके बच्चे बीमार होंगे कि नहीं होंगे और समाज के ऐसे कोटि-कोटि परिवार बीमारी से ग्रस्त हो जाए, तो भारत स्वस्थ बनाने का सपने कैसे पूरे होंगे?

पिछले एक वर्ष में, हमने trial basis पर काम चालू किया। मैंने समाज को कहा कि भाई, आप अपने गैस सिलेंडर की सब्सिडी छोड़ दीजिए और मुझे आज संतोष के साथ कहना है कि मैंने तो ऐसे ही चलते-चलते कह दिया था, लेकिन करीब-करीब 90 लाख परिवार और जो ज्यादातर मध्यम वर्गीय है, कोई स्कूल में टीचर है, कोई टीचर रिटायर्ड हुई माँ है, पेंशन पर गुजारा करती है लेकिन मोदी जी ने कहा तो छोड़ दो। करीब 90 लाख लोगों ने अपने गैस सिलेंडर की सब्सिडी छोड़ दी और पिछले एक वर्ष में आजादी के बाद, एक वर्ष में इतने गैस सिलेंडर का कनेक्शन कभी नहीं दिया गया। पिछले वर्ष एक करोड़ गरीब परिवारों को गैस सिलेंडर का कनेक्शन दे दिया गया और उनको चूल्हे के धुँआ से मुक्ति दिलाने का काम हो गया। जब ये मेरा 'पायलट प्रोजेक्ट' सफलतापूर्वक हुआ और मैंने कोई घोषणा नहीं की थी, कर रहा था, चुपचाप उसको कर रहा था। जब सफलता मिली तो इस बजट में हमने घोषित किया है कि आने वाले तीन वर्ष में हम भारत के पाँच करोड़ परिवार, आज देश में कुल परिवार है 25 करोड़ और थोड़े ज्यादा; कुल परिवार है 25 करोड़। संख्या है सवा सौ करोड़, परिवार है 25 करोड़ से ज्यादा। पाँच करोड़ परिवार, जिनको गैस सिलेंडर का कनेक्शन देना है, गैस सिलेंडर देना है और उन पाँच करोड़ परिवार में लकड़ी के चूल्हे से, धुँए में गुजारा कर रही मेरी गरीब माताओं-बहनों को मुक्ति दिलाने का अभियान चलाया है।

गरीब का भला कैसे होता है? प्रधानमंत्री जन-धन योजना! हम जानते हैं, अखबारों में पढ़ते हैं। कभी कोई शारदा चिट फंड की बात आती है, कभी और चिट फंड की बात आती है। लोगों की आंख में धूल झाँककर के बड़ी-बड़ी कंपनियाँ बनाकर के, लोगों से पैसा लेने वाले लोग बाद में छूमंतर हो जाते हैं। गरीब ने बेचारे ने बेटी की शादी के लिए पैसे रखे हैं, ज्यादा ब्याज मिलने वाला है इस सपने से; लेकिन बेटी कुंवारी रह जाती है क्योंकि पैसे जहाँ रखे, वो भाग जाता है। ये क्यों हुआ? गरीब को ये चिट फंड वालों के पास क्यों जाना पड़ा? क्योंकि बैंक के दरवाजे गरीबों के लिए खुलते नहीं थे। हमने प्रधानमंत्री जन-धन योजना के द्वारा हिन्दुस्तान के हर गरीब के लिए बैंक में खाते खोल दिए और आज गरीब आदमी को साहूकारों के पास जाकर के ब्याज के चक्कर में पड़ना नहीं पड़ रहा है। गरीब को अपने पैसे रखने के लिए किसी चिट फंड के पास जाना नहीं पड़ रहा है और गरीब को एक आर्थिक सुरक्षा देने का काम हुआ और उसके साथ उसको रुपये कार्ड दिया गया। उसके परिवार में कोई आपत्ति आ जाए तो दो लाख रुपये का बीमा दे दिया और मेरे पास जानकारी है, कई परिवार मुझे मिले कि अभी तो जन-धन एकाउंट खोला था और 15 दिन के भीतर-भीतर उनके घर में कोई नुकसान हो गया तो उनके पास दो लाख रुपये आ गए। परिवार ने कभी सोचा भी नहीं था कि दो लाख रुपये सीधे-सीधे उनके घर में पहुँच जाएंगे।

गरीब के लिए काम कैसे होता है? प्रधानमंत्री जन-धन योजना के द्वारा सिर्फ बैंक में खाता खुला, ऐसा नहीं है। वो भारत की आर्थिक व्यवस्था की मुख्यधारा में हिन्दुस्तान के गरीब को जगह मिली है, जो पिछले 70 साल में हम नहीं कर पाए थे। उसको पूरा करने से भारत की आर्थिक ताकत को बढ़ावा मिलेगा। आज दुनिया के अंदर हिन्दुस्तान के आर्थिक विकास का जय-जयकार हो रहा है। विश्व की सभी संस्थाएँ कह रही हैं कि भारत बहुत तेज गति से आगे बढ़ रहा है। उसका मूल कारण देश के गरीब से गरीब व्यक्ति को साथ लेकर के चलने का हमने एक संकल्प किया, योजना बनाई और चल रहे हैं। जिसका परिणाम है कि आज आर्थिक संकटों के बावजूद भी भारत आर्थिक ऊँचाइयों पर जा रहा है। दुनिया आर्थिक संकटों को झेल रही है, हम नए-नए अवसर खोज रहे हैं।

अभी मैं मुम्बई से आ रहा था। आज मुम्बई में एक बड़ा महत्वपूर्ण कार्यक्रम था। बहुत कम लोगों को अम्बेडकर साहेब को पूरी तरह समझने का अवसर मिला है। ज्यादातर लोगों को तो यही लगता है कि बाबा साहेब अम्बेडकर यानी दलितों के देवता। लेकिन बहुत कम लोगों को मालूम है कि बाबा साहेब अम्बेडकर दीर्घदृष्टा थे। उनके पास भारत कैसा बने, उसका vision था। आज मैंने मुम्बई में एक maritime को लेकर के, सामुद्रिक शक्ति को लेकर के एक अंतर्राष्ट्रीय बड़े कार्यक्रम का उद्घाटन किया। वो 14 अप्रैल को इसलिए रखा था कि भारत में बाबा साहेब अम्बेडकर पहले व्यक्ति थे जिन्होंने maritime, navigation, use of water पर दीर्घदृष्टि से उन्होंने vision रखा था। उन्होंने ऐसी संस्थाओं का निर्माण किया था उस समय, जब वे सरकार में थे, जिसके आधार पर आज भी हिन्दुस्तान में पानी वाली, maritime वाली, navigation वाली संस्थाएँ काम कर रही हैं। लेकिन बाबा साहेब अम्बेडकर को भुला दिया। हमने आज जानबूझ करके 14 अप्रैल को बाबा साहेब अम्बेडकर ने जो vision दिया था, उनके जन्मदिन 14 अप्रैल को, उसको साकार करने की दिशा में आज मुम्बई में एक समारोह करके मैं आ रहा हूँ, आज उसका मैंने प्रारम्भ किया। लाखों-करोड़ों समुद्री तट पर रहने वाले लोग, हमारे मछुआरे भाई, हमारे नौजवान, उनको रोजगार के अवसर उपलब्ध होने वाले हैं, जो बाबा साहेब अम्बेडकर का vision था। इतने सालों तक उसको आँखों से ओझल कर दिया गया था। उसको आज चरितार्थ करने की दिशा में, एक तेज गति से आगे बढ़ने का प्रयास अभी-अभी मुम्बई जाकर के मैं करके आया हूँ।

अभी हमारे दोनों पूर्व वक्ताओं ने पंचतीर्थ की बात कही है। कुछ लोग इसलिए परेशान है कि मोदी ये सब क्यों कर रहे हैं? ये हमारे श्रद्धा का विषय है, ये हमारे conviction का विषय है। हम श्रद्धा और conviction से मानते हैं कि बाबा साहेब अम्बेडकर ने सामाजिक एकता के लिए बहुत उच्च मूल्यों का प्रस्थापन किया है। सामाजिक एकता, सामाजिक न्याय, सामाजिक समरसता, बाबा साहेब अम्बेडकर ने जो रास्ता दिखाया है उसी से प्राप्त हो सकती है इसलिए हम बाबा साहेब अम्बेडकर के चरणों में बैठकर के काम करने में गर्व अनुभव करते हैं।

सरकारें बहुत आई.. ये 26-अलीपुर, बाबा साहेब अम्बेडकर की मृत्यु के 60 साल के बाद उसका स्मारक बनाने का सौभाग्य हमें मिला। क्या 60 साल तक हमने रोका था किसी को क्या? और आज हम कर रहे हैं तो आपको परेशानी हो रही है। पश्चाताप होना चाहिए कि आपने किया क्यों नहीं? परेशान होने की जरूरत नहीं है, आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देने के

लिए यही तो सामाजिक आंदोलन काम आने वाला है। और इसलिए मेरे भाइयो-बहनों एक श्रद्धा के साथ.. और मैं बड़े गर्व के साथ कहता हूँ कि ऐसा व्यक्ति जिसकी माँ बचपन में अड़ोस-पड़ोस के घरों में बर्तन साफ करती हो, पानी भरती हो, उसका बेटा आज प्रधानमंत्री बन पाया, उसका credit अगर किसी को जाता है तो बाबा साहेब अम्बेडकर को जाता है, इस संविधान को जाता है। और इसलिए श्रद्धा के साथ, एक अपार, अटूट श्रद्धा के साथ इस काम को हम करने लगे हैं। और आज से कर रहे हैं, ऐसा नहीं। हमने तो जीवन इन चीजों के लिए खपाया हुआ है। लेकिन वोट बैंक की राजनीति करने वालों ने समाज को टुकड़ों में बांटने के सिवाए कुछ सोचा नहीं है।

बाबा साहेब अम्बेडकर, उन पर जो बीतती थी, शिक्षा में उनके साथ अपमान, जीवन के हर कदम पर अपमान, कितना जहर पीया होगा इस महापुरुष ने, कितना जहर पीया होगा जीवन भर और जब संविधान लिखने की नौबत आई, अगर वो सामान्य मानव होते, हम जैसे सामान्य मानव होते तो उनकी कलम से संविधान के अंदर कहीं तो कहीं उस जहर की एक-आध बिन्दु तो निकल पाती। लेकिन ऐसे महापुरुष थे जिसने जहर पचा दिया। अपमानों को झेलने के बाद भी जब संविधान बनाया तो किसी के प्रति कटुता का नामो-निशान नहीं था, बदले का भाव नहीं था। वैर भाव नहीं था, इससे बड़ी महानता क्या हो सकती है? लेकिन दुर्भाग्य से देश के सामने इस महापुरुष की महानताओं को ओझल कर दिया गया है। तब ऐसे महापुरुष के चरणों में बैठकर के कुछ अच्छा करने का इरादा जो रखते हैं, उनके लिए यही रास्ता है। उस रास्ते पर जाने के लिए हम आए हैं। मुझे गर्व है कि आज 14 अप्रैल को पूरे देश में “ग्राम उदय से भारत उदय” के आंदोलन का प्रारंभ इस धरती से हो रहा है। सामाजिक न्याय के लिए हो रहा है, सामाजिक समरसता के लिए हो रहा है।

मैं हर गांव से कहूंगा कि आप भी इस पवित्रता के साथ अपने गांव का भविष्य बदलने का संकल्प कीजिए। बाबा साहेब की 125वीं जयंती की अच्छी श्रद्धांजलि वही होगी कि हम हमारे गांव में कोई बदलाव लाए। वहां के जीवन में बदलाव लाए। सरकारी योजनाओं का व्यय न करते हुए, पाई-पाई का सदुपयोग करते हुए चीजों को करने लगे तो अपने आप बदलाव आना शुरू हो जाएगा।

मैं फिर एक बार मध्यप्रदेश सरकार का, इतनी विशाल संख्या में आकर के आपने हमें आशीर्वाद दिया। इसलिए जनता-जनार्दन का हृदय से बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ।

जय भीम, जय भीम। दोनों मुट्ठी पूरी ऊपर करके बोलिए जय भीम, जय भीम, जय भीम, जय भीम।

अतुल कुमार तिवारी/ अमित कुमार/ लक्ष्मी/ मनीषा -2023

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

05-अप्रैल-2016 20:48 IST

उत्तर प्रदेश के नोएडा में "स्टैंड अप इंडिया" पहल का शुभारंभ करने के अवसर पर प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

विशाल संख्या में पधारे हुए मेरे प्यारे भाइयो और बहनों!

आज बाबू जगजीवन राम जी की जन्मजयंती है। अनेक वर्षों तक राष्ट्र की सेवा में उन्होंने अपना पूरा जीवन खपा दिया। उनके जन्म दिवस को समता दिवस के रूप में भी याद किया जाता है। दलित परिवार में पैदा होकर के राष्ट्र के गौरव को बढ़ाने में उन्होंने जो अथार्त पुरुषार्थ किया, परिश्रम किया। उन्होंने सामाजिक स्थितियों को कभी अपने आड़े नहीं आने दिया। ऐसे बाबू जगजीवन राम जी की जन्मजयंती पर आज भारत सरकार 'Stand Up India' कार्यक्रम को launch कर रही है।

बाबू जगजीवन राम जी की एक विशेषता रही किवे हमेशा merit के आग्रही रहे। scholarship भी वो merit पर लेने के आग्रही रहते थे। Merit पर जो न मिले, उसको लेने से इंकार करते थे और बहुत कम लोगों को याद होगा किभारत ने जो प्रथम कृषिक्रान्तिकी, agriculture revolution किया, तब हमारे देश के कृषिमंत्री बाबू जगजीवन राम थे। बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि 1971 की लड़ाई में भारत ने जो विजय प्राप्त की, उस समय भारत के रक्षा मंत्री बाबू जगजीवन राम थे। लेकिन ऐसे कारण रहे देश में किइस प्रकार की सेवाओं को, ऐसे महापुरुषों के योगदान को करीब-करीब इतिहास में भुला दिया गया है। हम इस मत के हैं कि राजनीतिक विचारधाराएं कुछ भी हो, दल कोई भी हो, लेकिन देश के लिए जीने-मरने वाले हम सबके लिए आदरणीय होते हैं, हम सबके लिए प्रेरक होते हैं।

शायद बाबू जगजीवन राम जी की जन्मजयंती पर पहले कभी भारत सरकार ने कोई कार्यक्रम launch किया हो, कम से कम मेरी स्मृतिमें नहीं है लेकिन मुझे आज गौरव हो रहा है और इसका बहुत बड़ा ताल्लुक भी है, क्योंकि हमने एक योजना बनाई। योजना यह बनाई कि हमारे जो आदिवासी भाई-बहन हैं, हमारे जो दलित भाई-बहन हैं, वे कब तक नौकरी का इंतजार करते रहेंगे और सरकार भी कितनों को नौकरी दे पाएगी और अगर यही स्थितिही तो समाज के दलित, पीड़ित, शोषित, वंचित, इन मेरे भाइयों का क्या होगा, उन नौजवानों का क्या होगा? मेरा यह विश्वास है कि परमात्मा ने जो शक्ति और सामर्थ्य, जो समझ और हुनर ईश्वर ने हमें दिया है, वैसा ही मेरे इन दलित परिवारों को भी दिया है और मेरे आदिवासी परिवारों को भी दिया है। लेकिन हम लोग वो हैं जिन्हें अवसर मिला, वो लोग हैं जिन्हें अवसर नहीं मिला। अगर अवसर मिलने पर हम कुछ कर सकते हैं, तो अवसर मिलने पर मेरे दलित और आदिवासी भाई-बहन भी उतना ही उत्तम काम कर सकते हैं और देश को बहुत योगदान दे सकते हैं।

और इसलिए, जीवन के हर क्षेत्र में समाज के आखिरी छोर पर बैठा हुआ जो व्यक्ति है, उसको आगे आने का अवसर मिलना चाहिए। उसको किसी की कृपा पर जीने के लिए मजबूर नहीं होना चाहिए। अगर वो अपने पुरुषार्थ से, अपने परिश्रम से, साहस करने को तैयार है, बुद्धि है, क्षमता है। अगर थोड़ी-सी भी सुविधा हो जाए तो वो एक नई, भव्य, स्वप्नों को साकार करने वाली अपनी जिन्दगी को आगे बढ़ा सकता है और उसी एक विचार में से ये 'Stand Up India' की कल्पना आई।

15 अगस्त को लालकिले पर से मैंने घोषणा की थी - 'Start Up India, Stand Up India'. 'Stand Up India' योजना के तहत 15 अगस्त को लालकिले से घोषणा की थी किभारत के हर बैंक की ब्रांच अपने क्षेत्र में एक दलित को और अगर वहां दलित बस्ती नहीं है तो आदिवासी को और एक महिला को बैंक की तरफ

से लोन देंगे। आज देश में सवा लाख बैंक हैं। एक लाख से ज्यादा स्थानों पर फैले हुए हैं। आम तौर पर कोई उद्योग या व्यापार शुरू होता है, तो जो established शहर होते हैं वहीं पर बढ़ोतरी होती है। हमारी इस योजना के तहत सवा लाख बैंक जब पैसे देंगे तो सवा लाख स्थानों पर कोई न कोई उपक्रम शुरू होगा और ढाई लाख लोगों के द्वारा ढाई लाख उपक्रम शुरू होंगे। एक जिले में, एक जगह पर, एक जहां प्रगति हो रही है वहीं नहीं, एक फैला हुआ काम और इसलिए हर ब्रांच को कहा है कि आपकी जिम्मेवारी होगी कि आपकी ब्रांच जिस इलाके में है, उस इलाके के किसी नौजवान, जो किलित हो, या आदिवासी हो और एक महिला, दो लोगों को आपको लोन देना होगा और उनको नया उद्योग, नया व्यवसाय करने के लिए मदद करनी होगी।

आप कल्पना कर सकते हैं कि आज जो Job seeker है, वो Job creator बन जाएगा। जो आज नौकरी तलाशता है, वो नौकरी देने वाला बन जाएगा। अगर ऐसे ढाई लाख यूनिट शुरू होते हैं, कोई एक को रोजगार दे, कोई दो को दे, कोई पाँच को दे, हमारे देश के नौजवानों के लिए एक रोजगार का नया अवसर प्राप्त होगा।

यह जो 'Stand Up' योजना है। मुद्रा योजना और 'Stand Up' योजना में एक बहुत बड़ा फर्क है। मुद्रा योजना में भी गारंटी के बिना उद्योगकार बैंक से, कुछ आगे बढ़ना है, तो पैसे ले सकता है। अखबार बेचने वाला, कमाना है तो ले सकता है पैसे। चाय बेचने वाला हो, चना बेचने वाला हुआ, धोबी हो, नाई हो, छोटे-छोटे लोग जिनको बेचारे को पैसे बड़ी ब्याज से लेने पड़ते हैं। साहूकार लोग उनको लूट लेते हैं। वो एक बार पैसे लेता है तो ब्याज देने के चक्कर से बाहर ही नहीं आता है। जीवनभर वो कर्जदार रहता है और देश में 6 करोड़ से ज्यादा लोग ऐसे कुछ न कुछ काम करते हैं जो देश की आर्थिक गतिविधिको चलाते हैं। छोटे-छोटे लोग हैं, छोटे दुकानदार हैं। किसी को पाँच हजार चाहिए, किसी को दस हजार चाहिए, किसी को पचास हजार चाहिए। बैंक के दरवाजे उनके लिए बंद थे और ये इतने गरीब थे कि कोई उनके लिए गारंटी नहीं देता था। हमने मुद्रा योजना के तहत बिना कोई गारंटी ऐसे लोगों को लोन मुहैया कराया। अभी अरुण जी बता रहे थे कि हमारा लक्ष्य तो सवा लाख करोड़ से भी कम था, लेकिन हम उससे भी आगे निकल गए और करीब-करीब सवा तीन करोड़ से ज्यादा लोगों को ये पैसे दिए। आज वो अपना कारोबार चला रहे हैं। अपने व्यवसाय का विकास कर रहे हैं और ब्याज के चंगुल से बच गए हैं लेकिन मुद्रा में 10 लाख रुपए तक की रकम मिलती है।

यह जो दलित परिवारों के लिए योजना बनाई है, आदिवासी परिवारों के लिए योजना बनाई है, महिलाओं को उद्यमी बनाने के लिए जो योजना बनाई है, उसके तहत 10 लाख से लेकर के एक करोड़ रुपए तक की राशि बैंक उनको देगी और उस ब्रांच के इलाके में होगा ताकि हिन्दुस्तान में एक लाख रुपए से अधिक जगह पर कोई न कोई नया काम शुरू होगा। अकेला उत्तर प्रदेश में हो, अकेला दिल्ली में हो, अकेला जयपुर, मुम्बई, अहमदाबाद में हो, नहीं। छोटे-छोटे स्थान पर काम शुरू होना चाहिए। इस देश को आगे बढ़ाना है और इसलिए बैंक की ब्रांच को . . कोई एक बैंक, उसकी सौ ब्रांच है और बैंक दो सौ लोगों को एक जगह पर दे दे, वो हमें मंजूर नहीं है। अगर सौ ब्रांच है तो जहां ब्रांच होगी, वहीं पर उनको देना होगा, ताकि उस पिछड़े इलाके का भी विकास हो। इस योजना के तहत यह किया गया है।

आज आपने देखा होगा। सामान्य परिवार के लोग, उनको एक योजना के तहत सहभागी बनाया है और मैं

भाई मिलिन्द को अभिनन्दन देता हूँ कि उन्होंने दलित युवकों में एक नई चेतना जगायी है। स्वयं तो उद्योगकार हैं, लेकिन उन्होंने तय किया कि वे दलित युवकों को आत्मसम्मान के साथ जीने वाले, अपने पैरों पर खड़े रहकर काम करने वाले और देश के विकास में योगदान देने वाले बनाना चाहते हैं। मैं तो हैरान था, दलित महिलाओं का भी उन्होंने एक संगठन खड़ा किया। मैं उस दिन जब गया था, 300 महिला उद्यमी दलित, वो सैंकड़ों-करोड़ों का कारोबार कर रही हैं, अगर यह ताकत है तो उस ताकत को ध्यान में लेकर के योजना बनाई जाए तो देश को विकास की ऊंचाइयों पर कैसे ले जा सकते हैं, इसका हम उत्तम उदाहरण दे सकते हैं। मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से आज का कार्यक्रम मैं उत्तम से उत्तम कार्यक्रम मानता हूँ क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि मेरे दलित भाइयों के, मेरे आदिवासी भाइयों के जीवन में वो बदलाव आने वाला है और समाज में वो सम्मान के साथ जीएंगे और नई पीढ़ी को रोजगार देने की उनमें ताकत आएगी। इस प्रकार की रचना होना, यह अपने आप में समाज में एक बहुत बड़ा बदलाव लाने का कारण बन रहा है।

आज एक और कार्यक्रम भी इसके साथ जोड़ दिया। प्रमुख कार्यक्रम तो मेरा 'Stand Up India' का था लेकिन हमारे महेश शर्मा जी, अपने इस क्षेत्र में ई-रिक्शा के लिए कितने दिनों से काम पर लगे हुए थे। तो उनका आग्रह था कि इस कार्यक्रम को भी इसके साथ जोड़ दिया जाए। मैंने कहा, जरूर जोड़ देंगे और मुझे अभी रिक्शा वाले परिवारों के साथ चाय पर चर्चा करने का मौका मिला। मैं उनकी बातें सुन रहा था। वे वो लोग थे जो पहले किराये की रिक्शा लेकर के, दिनभर मेहनत करके, अपने परिवार का गुजारा चलाते थे लेकिन ज्यादातर पैसे किराये पर, जिससे किराये पर लिया है रिक्शा, उसी पर चला जाता था। अपनी जेब में बहुत कम आता था और मेहनत भी इतनी करनी पड़ती कि एक उम्र से ज्यादा काम नहीं कर सकता था। मेहनत भी इतनी पड़ती थी कि ग्राहक खड़ा हो तो भी थक जाते थे, खींचने की ताकत नहीं रहती थी। यह जो अवस्था उन्होंने अपनी जिन्दगी में जी. .

भारत सरकार ने एक योजना बनाई। इस योजना के तहत, मेरे मित्र भाई ब्रिजेश इस काम को बखूबी निभाते रहते हैं और पाँच हजार से ज्यादा, 5100 ई-रिक्शा आज देने का कार्यक्रम हो रहा है। अब ये अपनी ई-रिक्शा के मालिक बन जाएंगे, जो कल तक किराये की रिक्शा पर गुजारा करते थे। योजना ऐसी बनी है कि दिन भर की कमाई में से, थोड़े पैसे डालकर के वो उसके मालिक बन जाएंगे। दूसरा, ई-रिक्शा होने के कारण शरीर को जो मजदूरी करनी पड़ती थी वो कम हो जाएगी। दिन में ज्यादा सफर कर पाएंगे, ज्यादा काम कर पाएंगे।

आज एक Mobile application को भी launch किया है, Ola. मोबाइल फोन पर जो Ola के application को download करेगा, वो उस पर एक क्लिक करेगा सिर्फ तो नज़दीक में ये जो ई-रिक्शा वाला खड़ा होगा, उसके मोबाइल फोन पर सूचना जाएगी कि फलानी जगह पर कोई रिक्शा के लिए खड़ा है। दो-तीन-चार मिनट में रिक्शा आकर के खड़ा हो जाएगा। अभी मैं रिक्शा में बैठकर के आया। उसी technology से रिक्शा को बुलाया और उसी रिक्शा में बैठकर के आया। जेब में पैसों की भी जरूरत नहीं, अगर आपका जन-धन account है, रुपये कार्ड है तो आप मोबाइल फोन से ही अपना पाँच रुपया - सात रुपया - दस रुपया, जो भी किराया होगा, वो आप मोबाइल से उसको दे सकते हैं, आराम से। पहले तो चार लोग हाथ ऊपर करे, कोई ऑटो रिक्शा वाले देखे न दिखे, आज आप मोबाइल फोन से ऑटो रिक्शा, ई-रिक्शा को बुला सकते हैं और ई-रिक्शा में बैठकर के आप आगे जा सकते हैं। इस व्यवस्था के कारण उनको ग्राहक ढूँढ़ने के लिए घूमना नहीं पड़ेगा, वरना वो तो इधर-उधर देखते रहते हैं कि कोई मिल जाता है - कोई मिल जाता है, अब जरूरत नहीं है।

वो एक जगह पर खड़े हैं, जैसा ही अपने मोबाइल फोन पर सूचना आई, वो दौड़ेगा और लेकर आगे जाएगा।

उसके कारण जो fuel का खर्चा होता है, वो भी नहीं होता और इसमें fuel battery है। इसकी भी व्यवस्था है कि जिस प्रकार से ये पाँच हजार ई-रिक्शाएं मिली हैं उसी प्रकार से इन रिक्शाओं को charging करने के लिए Energy Bank भी बनाए गए हैं। जहां पर solar energy से battery charge होगी। आपकी ई-रिक्शा की battery down हो गई है, आप वहां जाएंगे, अपनी battery वहां छोड़ दीजिए, दूसरी battery ले लीजिए, charging का पैसा दे दीजिए, आप गाड़ी दिन भर चलाते रहिए। इसके कारण सैकड़ों लोगों को ये solar energy से battery charging की दुकानें भी चलाने का मौका मिलेगा और आग्रह यह रखा है किये ई-रिक्शा उनको मिलेगी जो रिक्शा के मालिक नहीं है। जो सिर्फ ड्राइवर है और किराये की रिक्शा चलाते थे, यानी कि गरीब को मिलेगा और गरीब, पीड़ित, शोषित, इनको अपने पैरों पर खड़े रखने की ताकत कैसे मिले उस दिशा में हमारी सारी योजनाएं आज काम कर रही हैं। और उसका नतीजा है कि आज यहां 5100 ई-रिक्शाएं गरीब परिवार के हाथ में जा रही हैं और मैं उनके चेहरे को देख रहा था और उनको सब मालूम था बोले हमारी ट्रेनिंग हो गई है। कुछ काम रिपेयर करना हो तो रिपेयरिंग करना हमको सिखा दिया गया है, हमको ई-रिक्शा कैसे चलानी उसका ड्राइविंग सिखा दिया गया है, बैंक के साथ कैसे कारोबार करना, वो सिखा दिया गया है। हमें app के द्वारा कोई सूचना आए तो कैसे जाना वो सिखा दिया गया है, यानी एक प्रकार से skill development का पूरा काम इन परिवारों का हो चुका है। आज ये दोनों चीजें ई-रिक्शा के द्वारा environment को भी फायदा है। आज पूरी दुनिया global warming से परेशान है। हम लोगों को विदेशों से तेल लाना पड़ता है, अरबों-खरबों रुपया जाता है। अब वो तेल में भी बचत होगी, क्योंकि सूरज से, सूरज की गर्मी से तैयार होने वाली बैटरी से ये ई-रिक्शाएं चलने वाली हैं। धुआं भी नहीं होने वाला है, environment का problem नहीं होने वाला है, और इसके कारण सामान्य मानवी के आरोग्य को भी इसके कारण फायदा तो होगा ही होगा, लेकिन दुनिया में भी जो global warming की चिंता है, उसका उपाय भी इसी से प्रस्तुत होगा और ये काम भी आज आपकी इस नगरी में प्रारंभ हो रहा है।

मैं वित्त मंत्री श्रीमान अरुण जेटली जी का अभिनंदन करना चाहता हूं, उन्होंने Banking Sector को, आपने देखा होगा, हमारे देश में वित्त मंत्रालय यानी office, file, बिल पास करना, न करना, उसके आगे देश को वित्त मंत्रालय क्या होता है ये कभी पता ही नहीं था। ज्यादा से ज्यादा वित्त मंत्रालय से कौन जुड़ते थे तो शेयर मार्केट वाले आएंगे, बड़े उद्योगकार आएंगे। पहली बार आप देखते होंगे कि वित्त मंत्रालय द्वारा जनता के बीच जा करके कभी जन-धन योजना, कभी जीवन बीमा योजना, कभी जीवन ज्योति योजना, कभी मुद्रा योजना, कभी Stand Up योजना, कभी RuPay Card की योजना, गरीब व्यक्ति के साथ देश का वित्त मंत्रालय जुड़ा हुआ हो, वो 21वीं सदी की पहली घटना है भाइयो-बहनों। एक-एक department को गरीबों के काम के लिए कैसे लाया जा सकता है, गरीबों की भलाई के लिए कैसे लाया जा सकता है, इसका एक जीता-जागता उदाहरण है।

हमारे देश में बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ था, गरीबों के नाम पर। लेकिन मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि आजादी के 70 साल होंगे, इस देश के 40 प्रतिशत लोग ऐसे थे कि जिनको कभी बैंक का दरवाजा देखने को सौभाग्य नहीं मिला आज तक। हमने बीड़ा उठाया। पिछली बार मैंने 15 अगस्त को कहा था और कुछ ही दिनों के भीतर-भीतर सभी बैंक के कर्मचारी, मैं सार्वजनिक रूप से बैंक के सभी कर्मचारियों का, सर्वजनिक

रूप से फिर से अभिनंदन करना चाहता हूँ, उनका धन्यवाद करना चाहता हूँ कि वो घर-घर गए, banking hours के बाद भी काम किया, Saturday, Sunday को काम किया, और देश के गरीब लोगों को Bank के खाते से जोड़ दिया। और हमने तो कहा था कि zero balance से बैंक का खाता खुलेगा। आपको एक रुपया नहीं होगा, अरे वो फोन का stationary का जो खर्चा होता है, आठ आना, रुपया, वो भी नहीं होगा। बस आप खाता खुलवा दीजिए। अपना Bank account खुलवा दीजिए। हमने गरीबों से कहा था आपके पैसों की जरूरत नहीं है, बस आप जुड़ जाइए। लेकिन मेरे देश के गरीबों की अमीरी देखिए, मेरे देश के गरीबों की अमीरी देखिए, देश ने अमीरों की गरीबी देख ली है, बैंको से रुपये ले करके भागना कैसा, इसको रास्ते लोग खोज रहे हैं। लेकिन एक गरीब देखिए, जिसको तो हमने कहा था कि zero balance से तुम account खुलाओ लेकिन उसकी ईमानदारी देखिए, उसकी अमीरी देखिए, उसने कहा नहीं-नहीं मोदीजी हम ऐसे तो नहीं करेंगे, हम कुछ देना चाहेंगे। और आज मैं गर्व के साथ कहता हूँ कि प्रधानमंत्री जन-धन योजना के अंतर्गत गरीबों ने जो बैंक एकाउंट खुलवाए, उसमें किसी ने पचास रुपये, किसी ने सौ रुपये, किसी ने दो सौ रुपये डाला। वो रकम 35 हजार करोड़ रुपये से भी ज्यादा हुई, 35 हजार करोड़। ये है मेरे देश के गरीबों की अमीरी। और जिस देश के गरीबों की अमीरी देखते हैं, तो सरकार का भी मन करता है कि उन गरीबों के लिए खप जाना चाहिए। पूरी सरकार गरीबों के लिए स्व-स्वाहा कर देनी पड़े तो कर देनी चाहिए, इस मिजाज से मैं काम कर रहा हूँ। और मैं मानता हूँ देश आगे तब बढ़ेगा जब देश के गरीब के द्वारा देश की विकास यात्रा में भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी।

हमारी सारी योजनाएं देश के गरीबों को देश की विकास यात्रा में भागीदार बनाने की एक सुनिश्चित रणनीति के तहत चल रही है। एक के बाद दूसरी योजना, पहली योजना से दूसरी जुड़ी हुई होती है। और इन सारी योजनाओं के तहत एक ऐसा आर्थिक क्षेत्र जो अनछुआ था, किसी ने कभी सोचा तक नहीं था, ऐसे क्षेत्र में प्रवेश करने की दिशा में हम प्रयास कर रहे हैं।

मैं फिर एक बार वित्त मंत्रालय को हृदय से बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ। वित्त मंत्रालय के सभी अधिकारियों की टीम को अभिनंदन करता हूँ कि देश को उन्होंने उत्तम बजट तो दिया लेकिन देश के गरीबों के लिए एक के बाद एक योजनाएं दे करके देश के गरीबों को ताकत देने का काम किया है इसलिए वे भी बहुत-बहुत बधाई के पात्र हैं।

आज जिन परिवारों को ई-रिक्शा मिली है, उनको मैं जब बैठा था, मैंने कहा था लेकिन बाकी लोग वहां नहीं थे, उनसे मैं कहना चाहता हूँ। और ये ई-रिक्शा वाले मेरा एक काम करेंगे? करेंगे? पक्का करेंगे? आप मुझे वादा कीजिए आप अपने बच्चों को पढ़ाएंगे। और राजनेताओं आपसे वोट मांगने आते होंगे, मैं आपसे आपके बच्चों की शिक्षा की भीख मांगने आया हूँ। और उसमें भी आप अपनी बेटियों को तो अवश्य पढ़ाएंगे। आप देखिए कुछ ही सालों में आपको ई-रिक्शा भी नहीं चलाने पड़ेगी, आपके बच्चे, आपके परिवार को नई ऊंचाइयों पर ले जाएंगे। और इसलिए इस सरकार की योजनाओं का लाभ आपके बच्चों को सबसे पहले मिलना चाहिए और वो शिक्षा के रूप में मिलना चाहिए। आप देखिए आपकी तो जिंदगी बदल जाएगी, भारत का भविष्य बदल जाएगा और इसलिए मैं आज इन ई-रिक्शा वालों को भी शुभकामनाएं देता हूँ। मेरे दलित परिवारों को आज से जो 'Stand-up India' से loan मिलना शुरू हो रहा है, सवा लाख branches, आगे आए वहां के नौजवान, इस opportunity का फायदा उठाएं और वे भी समाज में एक अग्रिम कक्षा के उद्योगकार, व्यापारी,

साहसिक बन करके आएं और देश को नए सिरे से आपको मदद करें इसी एक अपेक्षा के साथ आप सबको बहुत-बहुत धन्यवाद।

1846- अतुल कुमार तिवारी / अमित कुमार/ मनीषा/ निर्मल शर्मा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

26-अगस्त-2016 18:57 IST

प्रधानमंत्री का 'ट्रांसफॉर्मिंग इंडिया' व्याख्यानमाला के उद्घाटन समारोह के अवसर पर भाषण

श्रीमान थर्मन शनमुगरत्नम, सिंगापुर के उप प्रधानमंत्री

मेरे साथी मंत्रियों

मुख्यमंत्रियों

आमंत्रित वक्ताओं और दोस्तों,

एक समय था जब विकास को पूंजी और श्रम की मात्रा पर निर्भर माना जाता था। आज हम जानते हैं कि यह संस्थाओं और विचारों की गुणवत्ता पर अधिक निर्भर करता है। पिछले वर्ष की शुरुआत में, भारत के रूपांतरण के लिए एक नई संस्था अर्थात् राष्ट्रीय संस्थान या नीति (NITI) को बनाया गया था। नीति का निर्माण भारत के रूपांतरण में मार्गदर्शन देने के लिए साक्ष्य आधारित थिंक टैंक के रूप में किया गया था।

नीति के मुख्य कार्यों में से कुछ कार्य हैं :-

- राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों के साथ सहयोग के माध्यम से सरकार की नीतियों की मुख्यधारा में बाहरी विचारों को शामिल करना;
- बाहर की दुनिया, बाहर के विशेषज्ञों और पेशेवरों और सरकार के बीच सेतू बनना;
- एक ऐसा साधन बनना जिसके माध्यम से बाहर के विचारों को नीति निर्माण में सम्मिलित किया जा सके;

भारत सरकार और राज्य सरकारों की एक लंबी प्रशासनिक परंपरा रही है। यह परंपरा भारत के अतीत को स्वदेशी और बाहरी विचारों से जोड़ती है। इस प्रशासनिक परंपरा ने भारत की कई मायनों में अच्छी तरह से सेवा की है। इससे भी अधिक, इस प्रशासनिक परंपरा ने शानदार विविधता के इस देश में लोकतंत्र और संघवाद, एकता और अखंडता को संरक्षित रखा है। ये छोटी उपलब्धियां नहीं हैं। फिर भी, हम अब एक ऐसे युग में रह रहे हैं जहां परिवर्तन सतत है और हम घटक हैं।

हम आंतरिक और बाह्य दोनों कारणों के लिए कारणों से बदलना ही होगा। प्रत्येक देश के पास उसके स्वयं के अनुभव, संसाधन और अपनी ताकत होती है। तीस साल पहले, एक देश अपने अंदर की ओर देखने के लिए और अपने स्वयं के समाधान खोजने के लिए सक्षम हो सकता था। आज, सभी देश एक दूसरे पर निर्भर हैं और एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। अब कोई भी देश अलग-थलग होकर अपना विकास नहीं कर सकता है। हर देश अपने क्रियाकलापों को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाना होता है या पीछे रह जाना पड़ता है।

आंतरिक कारणों के लिए भी बदलाव आवश्यक है। हमारे अपने देश में युवा पीढ़ी पूरी तरह से अलग सोच और महत्वकांक्षाएं रख रही है कि सरकार अब लंबे समय तक अतीत के आधार पर नहीं चल सकती। यहां तक परिवारों में भी, युवाओं और वृद्धों के बीच रिश्ता बदल गया है। एक समय था जब परिवार के बड़े लोग छोटे लोगों से अधिक जानकारी रखते थे। आज, नई तकनीक के प्रसार के साथ स्थिति उलट हो गई है। यह स्थिति सरकार के लिए संवाद स्थापित करने और बढ़ती अपेक्षाओं को पूरा करने में सरकार के लिए चुनौतियां बढ़ाती हैं।

यदि भारत को परिवर्तन की चुनौती का सामना करना है तो इसके लिए क्रमिक विकास पर्याप्त नहीं है बल्कि एक कायापलट की जरूरत है।

यही कारण है कि मेरी सोच भारत के लिए तीव्र रूपांतरण विकास की है न कि क्रमिक विकास की

- भारत का रूपांतरण शासन प्रणाली में परिवर्तन के बिना नहीं हो सकता है।
- शासन प्रणाली का रूपांतरण मानसिकता में परिवर्तन के बिना नहीं हो सकता है।
- मानसिकता में परिवर्तन परिवर्तनकारी विचारों के बिना संभव नहीं हो सकता है।

हमें कानूनों को बदलना, अनावश्यक प्रक्रियाओं को समाप्त करना, प्रक्रियाओं में तेजी लाना और प्रौद्योगिकी को अपनाना है। हम उन्नीसवीं सदी की प्रशासनिक व्यवस्था के साथ इक्कीसवीं सदी में नहीं चल सकते।

प्रशासनिक मानसिकता में मौलिक परिवर्तन आमतौर पर अचानक झटके या संकट के माध्यम से होते हैं। भारत को एक स्थिर लोकतांत्रिक राजव्यवस्था होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इस तरह के झटकों के अभाव में, हमें रूपांतरकारी बदलाव करने के लिए अपने आप को मजबूर करने के लिए विशेष प्रयास करना होगा। व्यक्तियों के रूप में, हम किताबों या लेखों को पढ़कर के द्वारा नए विचारों को ग्रहण कर सकते हैं। पुस्तकें हमारे मस्तिष्क की खिड़कियां खोलती हैं। बहरहाल, जब तक हम सामूहिक मंथन नहीं करते, विचार कुछ व्यक्तियों के मस्तिष्क तक ही सीमित रहते हैं। हम अक्सर नए विचारों के बारे में सुनते हैं और उन्हें समझते हैं। लेकिन हम उन पर कार्य नहीं करते हैं, क्योंकि यह हमारे व्यक्तिगत क्षमता से परे है। अगर हम एक साथ बैठते हैं, तो हमारे पास विचारों को कार्यों में परिवर्तित करने का सामूहिक बल होगा। नए वैश्विक परिदृश्य में जाने के लिए हमें सामूहिक तौर पर हमारे दिमागों को खोलने की जरूरत है। ऐसा करने के लिए, हमें नए विचारों को सामूहिक रूप से अवशोषित करना है न कि व्यक्तिगत तौर पर। इसके लिए एक ठोस प्रयास की आवश्यकता है।

जैसा कि आप में से कई लोग जानते हैं, जब से मैंने कार्यालय संभाला है, तब से मैंने बैंकों, पुलिस अधिकारियों, सरकार के सचिवों और अन्य लोगों के साथ व्यक्तिगत तौर पर सुसंरचित विचार-विमर्श कार्यक्रमों में भागीदारी की है। इन सत्रों से आने वाले विचारों को सरकारी नीतियों में शामिल किया जा रहा है।

ये प्रयास अंदर से विचारों का दोहन करने के लिए किए गए हैं। अगला कदम बाहर से विचारों को अंदर लाने के लिए है। सांस्कृतिक तौर पर, भारतीय लोग हमेशा कहीं से भी विचारों को स्वीकार करने में सक्षम रहे हैं। यह ऋग्वेद में कहा गया है - "आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः", जिसका अर्थ है, सभी दिशाओं से आ रहे महान विचारों का स्वागत है।

यही भारत रूपांतरण व्याख्यानमाला का उद्देश्य है। यह एक ऐसी व्याख्यानमाला है जिसमें हम व्यक्तिगत तौर पर नहीं बल्कि एक टीम के हिस्से की तरह भाग लेंगे, जो सामूहिक तौर पर परिवर्तन को संभव बना सकता है।

हम ऐसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों की सर्वश्रेष्ठ बुद्धि और ज्ञान से सिखेंगे, जिन्होंने अपने देश को दुनिया में सर्वश्रेष्ठ स्थान बनाने के लिए अनेक लोगों का जीवन परिवर्तन किया होगा या अनेक लोगों को जीवन परिवर्तन के लिए प्रभावित किया।

यह व्याख्यान इस श्रृंखला का पहला व्याख्यान होगा। आप सभी को एक Feedback form दिया गया है। इस प्रक्रिया को बेहतर बनाने में मदद करने के लिए मैं आपसे विस्तृत और खुली प्रतिक्रिया की उम्मीद करता हूँ। मैं भारत के अंदर और भारत के बाहर से विशेषज्ञों और पैनल के नामों पर सुझाव देने का आपसे अनुरोध करता हूँ। मैं सरकार के सभी सचिवों से भी उनके मंत्रालयों से प्रतिभागियों के साथ एक सप्ताह के समय में आगे एक अनुवर्ती चर्चा के संचालन का अनुरोध करता हूँ। इसका उद्देश्य आज के सत्र में सभी संबंधित समूहों से उभर कर आए विचारों को विशिष्ट कार्ययोजना में परिवर्तित करना है। जहाँ भी संभव हो, मैं मंत्रियों से भी इन सत्रों में भाग लेने का अनुरोध करता हूँ।

हमारे समय के सबसे बड़े सुधारकों और प्रशासकों में ली कुआन यू थे, जिन्होंने सिंगापुर को आज के सिंगापुर में बदल डाला था। इसलिए यह संयोग ही है कि हम श्री थर्मन शनमुगरत्नम, सिंगापुर के उप प्रधानमंत्री के साथ इस व्याख्यानमाला का उद्घाटन कर रहे हैं। श्री थर्मन एक सफल विद्वान और सार्वजनिक नीति निर्माता हैं। उप प्रधानमंत्री होने के अलावा, वह आर्थिक और सामाजिक नीतियों के लिए समन्वय मंत्री, वित्त मंत्री और सिंगापुर के मौद्रिक प्राधिकरण के अध्यक्ष भी हैं। इससे पहले, इन्होंने श्रमशक्तिमंत्री, द्वितीयवित्त मंत्री और शिक्षा मंत्री के रूप में भी कार्य किया है।

श्री शनमुगरत्नम का जन्म 1957 में हुआ था और वह श्रीलंकाई तमिल मूल के हैं। इन्होंने लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से अर्थशास्त्र में अपनी स्नातक की डिग्री प्राप्त की है। उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में मास्टर डिग्री प्राप्त

की है। उन्होंने हार्वर्ड विश्वविद्यालय से लोक प्रशासन में एक और मास्टर डिग्री प्राप्त की है। हार्वर्ड में इन्हें इनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए Littauer Fellow Award से सम्मानित किया गया था।

श्रीशनमुगरत्नम दुनिया के अग्रणी बुद्धिजीवियों में से एक हैं। मैं आपको उनके विचारों की व्याप्ति और प्रभाव क्षेत्र का एक उदाहरण देना चाहूंगा। आज, सिंगापुर की अर्थव्यवस्था काफी हद तक Transshipment पर निर्भर करती है। लेकिन अगर ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव से ध्रुवीय बर्फ टोपियां जलमग्न हो जाती हैं तो नए नेविगेशन मार्गों को खोल सकती है और संभवतः सिंगापुर की प्रासंगिकता को कम कर सकती है। मुझे बताया गया है कि उन्होंने पहले से ही इस संभावना और इसके लिए योजना बनाने के बारे में सोचना शुरू कर दिया है।

दोस्तों। श्री शनमुगरत्नम जी को प्राप्त उपलब्धियों और सम्मान की सूची काफी लंबी है। लेकिन हम उन्हें सुनने के लिए उत्सुक हैं। इसलिए, आगे बिना किसी देरी के, ये बहुत खुशी की बात है कि मैं इस मंच पर श्री थर्मन शनमुगरत्नम का स्वागत करता हूं और अनुरोध करता हूं कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत विषय पर हमें अपने विचारों से अभिभूत करें।

अतुल कुमार तिवारी/शाहबाज़ हसीबी/ हरीश जैन/ रचना वर्मा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

24-दिसंबर-2016 14:42 IST

पातालगंगा में राष्ट्रीय प्रतिभूति बाजार संस्थान (एनआईएसएम) परिसर के उद्घाटन पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

इस नए परिसर के उद्घाटन के लिए आज यहां उपस्थित होना मेरे लिए प्रसन्नता की बात है। यह वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए मंदी का दौर है। विकसित देश और उभरते बाजार, दोनों के ही विकास की रफ्तार धीमी पड़ी है। इसके बावजूद, भारत को एक चमकते सितारे की तरह देखा जा रहा है। दुनिया में ऊंची विकास दर वाले देशों में भारत के होने का अनुमान लगाया गया है।

उभरती हुई बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में भारत का स्थान दुर्घटनावश शामिल नहीं हुआ है। यह देखने के लिए कि हमने कितना लंबा सफर तय किया है, हमें 2012-13 से देखना होगा। राजकोषीय घाटा खतरे के निशान तक पहुंच गया था। मुद्रा तेजी से गिर रही थी। मुद्रास्फीति काफी ऊपर थी। चालू खाते का घाटा बढ़ गया था। आत्मविश्वास काफी नीचे आ गया था और विदेशी निवेशकों ने भारत से मुंह फेर लिया था। ब्रिक्स देशों में भारत को कमजोर राष्ट्र के रूप में देखा जाता था।

तीन साल से कम समय में, यह सरकार देश की अर्थव्यवस्था में परिवर्तन लाई है। हम राजकोषीय घाटे के अनुमान को प्रत्येक वर्ष नीचे लाते जा रहे हैं और हर साल इसे हासिल भी कर रहे हैं। चालू खाते का मौजूदा घाटा भी नीचे आ गया है। यहां तक कि 2013 में विशेष मुद्रा विनिमय के तहत कर्ज से छुटकारे के बावजूद विदेशी मुद्रा भंडार उच्च स्तर पर है। इस समय मुद्रास्फीति निचले स्तर पर है। यह इस समय चार प्रतिशत पर है जबकि पिछली सरकार के दौरान यह दोहरे अंकों में थी। सार्वजनिक निवेश में बड़े पैमाने पर वृद्धि हुई है जबकि समग्र राजकोषीय घाटे में कमी की गई है। कानून द्वारा मुद्रास्फीति के लक्ष्य के साथ एक नई मौद्रिक नीति का ढांचा लाया गया है। वस्तु एवं सेवा कर पर संविधान संशोधन वर्षों से लंबित पड़े हुए थे। इन्हें पास किया गया है और बहुप्रतीक्षित जीएसटी जल्द ही हकीकत होगा। हमने कारोबारी सुगमता में सुधार पर प्रगति की है। इन सभी नीतियों के परिणामस्वरूप, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश रिकॉर्ड स्तर तक पहुंच गया है। विमुद्रीकरण ने एक तेज चलती हुई कार को रोक दिया, ऐसा कहने वाले हमारे आलोचक भी हमारी प्रगति की गति को स्वीकार करते हैं।

मैं एक चीज बिल्कुल स्पष्ट कर देता हूँ कि यह सरकार मजबूत और विवेकपूर्ण आर्थिक नीतियों का अनुसरण करना जारी रखेगी, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि लंबे समय में भारत का भविष्य उज्ज्वल है। हम छोटे-छोटे राजनीतिक लाभ लेने के लिए कोई फैसले नहीं करेंगे। हम राष्ट्रहित में कठिन फैसले लेने से भी नहीं हिचकेंगे। विमुद्रीकरण इसका एक उदाहरण है। इससे तात्कालिक दिक्कत हो सकती है लेकिन लंबी अवधि में इसके फायदे होंगे।

आधुनिक अर्थव्यवस्था में वित्तीय बाजार एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। वे बचत को गतिमान बनाए रखने में मदद करते हैं। वे बचत को उत्पादक निवेश की ओर ले जाते हैं।

हालांकि, इतिहास बताता है कि ठीक से विनियमित न होने पर वित्तीय बाजार नुकसान भी पहुंचा सकते हैं। सही विनियमन सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) की स्थापना की गई। सेबी की एक भूमिका स्वस्थ प्रतिभूति बाजार के विकास को प्रोत्साहन देना भी है।

हाल ही में, वायदा बाजार आयोग को खत्म कर दिया गया। सेबी को जिसों के नियमन का जिम्मा भी दिया गया है। यह एक बड़ी चुनौती है। जिस बाजार में स्पॉट बाजार को सेबी विनियमित नहीं करता है। कृषि बाजारों का विनियमन राज्यों द्वारा किया जाता है। बहुत से जिसों की खरीद सीधे गरीबों और जरूरतमंदों द्वारा की जाती है, न कि निवेशकों द्वारा। इसलिए जिस यौगिकों का आर्थिक और सामाजिक असर ज्यादा संवेदनशील है।

वित्त बाजार के सफल संचालन के लिए प्रतिभागियों के पास अच्छी जानकारी होना आवश्यक है। मुझे यह जानकर हर्ष हुआ है कि राष्ट्रीय प्रतिभूति बाजार संस्थान विभिन्न प्रतिभागियों को इस बारे में शिक्षित करने और उन्हें कौशल प्रमाणपत्र उपलब्ध कराने की भूमिका निभा रहा है। आज हमारा मिशन 'कशल भारत' है। भारतीय युवाओं को दुनिया के किसी भी कोने में अपने समकक्षों से मुकाबला करने में सक्षम होना चाहिए। इस तरह के क्षमता निर्माण में यह संस्थान अहम भूमिका निभा सकता है। मुझे बताया गया है कि एनआईएसएम द्वारा कराए जाने वाली परीक्षा में हर वर्ष लगभग 1.5 लाख उम्मीदवार सम्मिलित होते हैं। अभी तक एनआईएसएम द्वारा पांच लाख से अधिक लोगों को प्रमाणपत्र दिया जा चुका है।

भारत ने अच्छी तरह से विनियमित प्रतिभूति बाजार होने के कारण नाम कमाया है। व्यापार के इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के विस्तार और डिपॉजिटरीज के उपयोग ने हमारे बाजार को और पारदर्शी बनाया है। एक संस्था के रूप में सेबी इस पर गर्व कर सकता है।

हालांकि हमारे प्रतिभूति एवं जिस बाजारों को अभी एक लंबा सफर तय करना है। जब भी मैं आर्थिक अखबारों को देखता हूं, मुझे आईपीओ की सफलता के बारे में पढ़ने को मिलता है। यह जानने को मिलता है कि अचानक से कुछ समझदार आंत्रप्रेन्योर कैसे करोड़पति बन गए। आप सभी जानते हैं, मेरी सरकार स्टार्ट-अप को प्रोत्साहित करने की पक्षधर है। स्टार्ट-अप इको सिस्टम के लिए स्टॉक मार्केट बहुत आवश्यक है। हालांकि यह तब तक पर्याप्त नहीं है जब तक कि प्रतिभूति बाजारों को अंतरराष्ट्रीय निवेशकों और वित्तीय विशेषज्ञों द्वारा सफल न मान लिया जाए। पैसा बनाना अच्छी बात है, लेकिन मेरे अनुसार यह मुख्य उद्देश्य नहीं होना चाहिए। हमारे प्रतिभूति बाजारों का वास्तविक मूल्य उनके योगदान में छिपा है

- राष्ट्र के विकास के लिए
- सभी क्षेत्रों में सुधार के लिए और
- नागरिकों के बड़े हिस्से के कल्याण के लिए

इसलिए, वित्तीय बाजारों के पूरी तरह सफल होने पर मेरे विचार करने से पहले, उन्हें तीन चुनौतियों का सामना करना होगा।

पहला, हमारे स्टॉक मार्केट का प्राथमिक लक्ष्य उत्पादक उद्देश्यों के लिए पूंजी जुटाने में मदद करना होना चाहिए। खतरे को टालने के लिए दूसरे उपायों का इस्तेमाल होता है। लेकिन बहुत से लोग यह महसूस करते हैं कि ये उपाय बाजार पर प्रभाव डालते हैं और सब चीजों को नियंत्रित करने लगते हैं। हमें यह विचार करना चाहिए कि पूंजी बाजार अपने मुख्य काम पूंजी जुटाने के लिए कितना अच्छा प्रदर्शन कर रहा है।

हमारे बाजार को भी यह दिखाना चाहिए कि वे हमारी जनसंख्या के बड़े हिस्से को लाभ पहुंचाने वाली परियोजनाओं के लिए सफलतापूर्वक पूंजी जुटाने में सक्षम हैं। खासतौर पर, मैं बुनियादी सुविधाओं की बात कर रहा हूं। आज आधारभूत ढांचे से जुड़ी हमारी अधिकतर परियोजनाओं का वित्तपोषण सरकार अथवा बैंकों द्वारा हो रहा है। आधारभूत ढांचे के वित्तपोषण के

लिए पूंजी बाजार का उपयोग दुर्लभ होता है। आधारभूत ढांचे की परियोजनाएं व्यवहार्य बनीं रहे इसके लिए यह बहुत जरूरी है कि उधार लंबी अवधि के लिए लिया जाना चाहिए। यह कहा जाता है कि हमें एक लंबी अवधि के तरल बांड बाजार की जरूरत नहीं है। इसके लिए विभिन्न कारण दिए जाते हैं। लेकिन निश्चित रूप से यह एक समस्या है, जिसे इस कमरे में बैठे वित्तीय जानकार हल कर सकते हैं, अगर आप अपना दिमाग इसमें लगाते हैं तो। मेरा आपसे आग्रह है कि ऐसे तरीके खोजें जिनसे पूंजी बाजार बुनियादी ढांचे के लिए लंबी अवधि तक पूंजी उपलब्ध कराने में सक्षम हो सकते। आज, सिर्फ सरकार अथवा विश्व बैंक या जेआईसीए जैसे बाहरी कर्जदाता बुनियादी ढांचे के लिए लंबी अवधि तक धन उपलब्ध कराते हैं। हमें इससे आगे बढ़ना होगा। बांड बाजार को बुनियादी ढांचे के लिए दीर्घकालिक वित्तपोषण का स्रोत बनना होगा।

आप सभी जानते हैं कि शहरों में आधारभूत ढांचे को सुधारने के लिए बड़े पैमाने पर पूंजी की आवश्यकता है। इस सरकार ने महत्वकांक्षी स्मार्ट सिटी कार्यक्रम शुरू किया है। इस संदर्भ में, मैं इस बात को लेकर निराश हूं कि हमारे पास कोई नगर निगम बांड बाजार नहीं है। इस तरह के बाजार को बनाने के लिए दिक्कतें एवं कठिनाइयां हैं। लेकिन एक वास्तविक विशेषज्ञ के इनोवेशन की असली परीक्षा तभी होती है जब वह एक जटिल समस्या का समाधान करता है। क्या सेबी और आर्थिक मामलों का विभाग यह सुनिश्चित कर सकता है कि एक साल के भीतर कम से कम 10 शहर नगर निगम बांड जारी कर देंगे?

दूसरा, बाजार को समाज के सबसे बड़े तबके को लाभ जरूर पहुंचाना चाहिए- खासतौर पर हमारे किसानों को। सफलता का वास्तविक पैमाना गांवों में पड़ने वाला असर होता है, न कि दलाल स्ट्रीट अथवा लुटियन दिल्ली पर पड़ा असर। इस तरह से, हमें लंबा सफर तय करना है। हमारे स्टॉक मार्केट को कृषि क्षेत्र की परियोजनाओं के लिए नवीनतम तरीकों से पूंजी जुटानी चाहिए। हमारे जिस बाजार को हमारे किसानों के लिए उपयोगी बनना चाहिए, न कि सिर्फ अटकलों के रास्ते पर चलना चाहिए। लोग कहते हैं कि किसान खतरे कम करने के लिए दूसरे उपायों का इस्तेमाल कर सकते हैं। लेकिन अभ्यास में भारत में कोई किसान बमुश्किल दूसरे उपायों का इस्तेमाल करता है। यही वास्तविकता है। जब तक जिस बाजार को सीधे किसानों के लिए उपयोगी नहीं बनाते, वे हमारी अर्थव्यवस्था में एक महंगे गहने की तरह हैं। न कि एक उपयोगी उपकरण की तरह। इस सरकार ने ई-एनएएम - इलेक्ट्रॉनिक नेशनल एग्रीकल्चर मार्केट की शुरुआत की है। सेबी को किसानों को लाभ पहुंचाने के लिए ई-एनएएम जैसे स्पॉट मार्केट और यौगिक मार्केट (डेरिवेटिव्स) को करीब से जोड़ने के लिए काम करना चाहिए।

तीसरा, जो लोग वित्त बाजार से लाभ कमाते हैं उन्हें राष्ट्र निर्माण के लिए टैक्स के जरिए निष्पक्ष योगदान करना चाहिए। कई कारणों से, बाजार से पैसा बनाने वाले लोगों का टैक्स में योगदान काफी कम है। काफी हद तक, टैक्स में कम योगदान के लिए हमारे टैक्स कानून का ढांचा भी जिम्मेदार है। कई तरह की वित्तीय कमाई पर काफी कम या जीरो टैक्स होता है। सरकारी खजाने में बाजार के प्रतिभागियों के योगदान के बारे में सोचने के लिए मैं आप सभी का आह्वान करता हूं। हम सभी को एक निष्पक्ष, कुशल और पारदर्शी तरीके से इसमें बढ़ोतरी के तरीकों पर विचार करना चाहिए। इससे पहले, ऐसा महसूस किया जाता था कि कुछ निवेशक कुछ कर संधियों का उपयोग कर अनुचित सौदा प्राप्त कर रहे हैं। आप सभी जानते हैं, इस सरकार ने उन संधियों में संशोधन कर दिया है। अब समय दोबारा सोचने और साधारण एवं पारदर्शी डिजाइन के साथ आगे आने का है। लेकिन यह निष्पक्ष और प्रगतिशील होना चाहिए।

मित्रों,

मैं जानता हूं कि वित्तीय बाजार बजट को बहुत महत्व देते हैं। बजट चक्र का वास्तविक अर्थव्यवस्था पर असर पड़ता है। हमारे मौजूदा बजट कैलेंडर में व्यय की अनुमति मानसून की शुरुआत के साथ मिलती है। सरकार के कार्यक्रम मानसून से पहले के उत्पादक महीनों में शुरू नहीं हो पाते हैं। इसलिए, इस साल, हमने बजट की तारीख को पहले कर दिया ताकि व्यय का अनुमोदन नए वित्तीय वर्ष की शुरुआत में हो सके। यह उत्पादकता और उत्पादन में वृद्धि करेगा।

मित्रों,

मेरा लक्ष्य एक पीढ़ी में ही भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना है। भारत विश्वस्तरीय प्रतिभूति और जिंसाँ के बिना एक विकसित राष्ट्र नहीं बन सकता है। इसलिए, मैं इस नए युग में वित्तीय बाजारों को और प्रासंगिक बनाने के लिए आप सभी के बढ़ते योगदान को देखने के लिए तत्पर हूँ। मैं एनआईएसएम की सफलता की कामना करता हूँ। मैं सभी को क्रिसमस और नए वर्ष की शुभकामनाएं देता हूँ।

AD/SH/AS

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

30-दिसंबर-2016 23:50 IST

30 दिसम्बर 2016 को तालकाटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली में आयोजित डिजिधन मेला में प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

क्रिसमस के दिन भारत सरकार ने एक गिफ्ट की शुरुआत की थी और उसके तहत आने वाले 100 दिन तक प्रतिदिन 15 हजार लोगों को Lucky Draw के माध्यम से 1000 रुपया इनाम में मिलने की योजना और ये उसके लाभार्थी वो लोग हैं, जो Digital Technology का उपयोग करते हुए एक ग्राहक के बतौर खरीदी करते हैं 50 रुपये से ज्यादा और 3 हजार रुपये से कम; ताकि इनाम गरीबों को मिले।

100 दिन में लाखों परिवारों में इनाम जाने वाला है और Draw होने के तीन दिन के बाद बैंक के लोग उसमें से नाम कौन हैं को निकाल देते हैं, जो पहले दिन Draw हुआ था, उसमें जिनको इनाम लगा था उसमें से चार लोगों को मुझे आज अपने हाथों से इनाम देने का अवसर मिला।

आज 30 तारीख को लक्की ग्राहक योजना के साथ-साथ डिजिटल व्यापार योजना का भी Draw हुआ है। ये सप्ताह में एक दिन हो रहा है, आज पहला था; और उसमें उन व्यापारियों को प्रोत्साहन देने की योजना है कि जो अपनी दुकान में ग्राहकों को Digital Payment के लिए प्रेरित करें, उनको समझाएं, वो व्यवस्था दें और 14 अप्रैल, बाबासाहेब अम्बेडकर जी की जयंती पर एक Mega Draw होगा जिसमें करोड़ों रुपयों के इनाम दिए जाएंगे। जिन लोगों को इस लक्की ड्रॉ में इनाम मिला है उनका मैं अभिनंदन करता हूँ, लेकिन मैं उनका आभार भी व्यक्त करता हूँ क्योंकि उन्होंने झारखंड जैसे छोटे गांव में रहने वाले किसी छोटे नौजवान ने इस Technology को आत्मसात किया, इस Technology का उपयोग किया; महिलाओं ने उपयोग किया। और इसलिए देश में जो लोग इसके साथ जुड़ रहे हैं वो एक प्रकार से उज्ज्वल भारत की नींव मजबूत करने का काम कर रहे हैं, और इसलिए मैं इन सबका अभिनंदन करता हूँ, उनको बधाई देता हूँ।

आज एक और काम हुआ, मेरी दृष्टि से ये सबसे महत्वपूर्ण काम हुआ है और वो है एक नई App Launch की गई है जिसका नाम रखा है BHIM . बहुत कम लोगों को मालूम होगा जिस महापुरुष ने हमें संविधान दिया, वो डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर, अर्थशास्त्र में उनकी निपुणता, ये उनकी सच्ची पहचान थी। और उन्होंने आज से करीब 80-90 साल पहले भारत का रुपया, उस पर Thesis लिखी थी और मुद्रा नीति कैसी हो; उस समय जब अंग्रेजों का शासन था; भीमराव अम्बेडकर ने विश्व के सामने भारत की मुद्रा नीति के संबंध में एक नयेपन से अपने विचारों को प्रस्तुत किया था। और आज हम लोग जिस रिजर्व बैंक की चर्चा करते हैं, RBI की बात करते हैं, डॉक्टर बाबासाहेब अम्बेडकर ने जो Thesis लिखी थी, उसी के प्रकाश में से विचार ले करके ये रिजर्व बैंक का जन्म हुआ था। इतना ही नहीं, आजाद भारत में हमारे जो Federal Structure हैं राज्यों और केन्द्र के बीच आर्थिक व्यवस्था कैसे चले, पैसों का बंटवारा कैसे हो, इसके लिए Finance Commission की कल्पना हुई है यह भी बाबा साहेब अम्बेडकर भीमराव अम्बेडकर के विचारों का परिणाम है।

कहने का तात्पर्य ये है कि भारत की मुद्रा व्यवस्था में, भारत की Central Bank की कल्पना में, भारत के Federal Structure में अर्थव्यवस्था के संबंध में किसी एक महापुरुष का स्पष्ट दर्शन था। उत्तम से उत्तम योगदान था, उस महापुरुष का नाम है डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर। और इसलिए आज जो App और आनेवाले दिनों में देखना कि सारा कारोबार जैसे हम पहले नोट या सिक्कों से करते थे वो दिन दूर नहीं होगा जब ये सारा कारोबार इस BHIM App के द्वारा चलने वाला है। यानी एक प्रकार से बाबा साहेब अम्बेडकर का नाम सारी अर्थव्यवस्था के अंदर ये BHIM App के द्वारा Central Stage में आने वाला है। उसका प्रारंभ इस कार्यक्रम के तहत किया है।

बहुत ही सरल है, इसे आप download करने के बाद Smart Phone हो, 1000-1200 वाला मामूली feature phone हो इससे उसका उपयोग कर सकते हैं आप। Internet होना ही चाहिए जरूरी नहीं है, और आने वाले दो सप्ताह के भीतर-भीतर एक और काम हो रहा है जिसकी Security की Checking की व्यवस्था चल रही है इन दिनों। वो आने के बाद तो ये BHIM की ताकत ऐसी होगी, ऐसी होगी कि आपको न Mobile Phone की जरूरत पड़ेगी, न Smart Phone की जरूरत पड़ेगी, न Feature Phone की जरूरत पड़ेगी, न Internet की जरूरत पड़ेगी; सिर्फ आपका अंगूठा काफी है, आपका अंगूठा काफी है। कोई कल्पना कर सकता है, एक जमाना था अनपढ़ को अंगूठा छाप कहा जाता था, वक्त बदल चुका है; अंगूठा! आप ही का अंगूठा! आप आपकी बैंक, आप ही का अंगूठा आपकी पहचान! आप ही का अंगूठा आपको कारोबार।

कितना बड़ा revolution आ रहा है और दो सप्ताह के बाद ये व्यवस्था जब आरंभ होगी, मैं बहुत साफ देख रहा हूँ, ये BHIM दुनिया के लिए सबसे बड़ा अजूबा होगा। देश में आधार कार्ड, 100 करोड़ से ज्यादा लोगों को आधार नम्बर मिल चुका है, जो 12-15 साल से छोटी आयु के हैं उनका बाकी है, काम चल रहा है, लेकिन जो बड़ी आयु के हैं 14 से ऊपर; करीब करीब उसमें से अधिकतम लोगों का हो गया है, कुछ छुटपुट कुछ रह गये होंगे तो काम चल रहा है। दूसरी तरफ देश में 100 करोड़ से ज्यादा Phone हैं, Mobile Phone. जिस देश के पास 65 प्रतिशत नौजवान 35 साल से कम आयु के हों, जिस देश के लोगों के हाथ में Mobile Phone हो, जिस देश के लोगों के अंगूठे में उनका भविष्य सुनिश्चित कर दिया गया हो वो देश एक बार अगर Digital Connectivity कर दें तो कितना बड़ा नया इतिहास बना सकता है, ये इसके अंदर आपको दिखाई देगा। विश्व के किसी भी देश के लिए Technology के क्षेत्र में कितना ही आगे गया हुआ देश होगा, उनके लिए भी, और इसलिए फिर वे Google के पास जाएंगे, Google Guru को पूछेंगे ये BHIM है क्या है? तो शुरुआत में तो उनको महाभारत वाला भीम दिखाई देगा, और ज्यादा गहरे जाएंगे तो उनको पता चलेगा हिंदुस्तान की धरती पर कोई भीमराव अम्बेडकर नाम के महापुरुष हो

गए, भारत रत्न भीमराव अम्बेडकर। भीमराव अम्बेडकर के जीवन का मंत्र यही था “बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय।” वे दलित, पीडित, शोषित, वंचितों के मसीहा थे। ये Technology उसकी सबसे बड़ी ताकत; गरीब से गरीब को Empower करने की ताकत इसमें पड़ी हुई है। ये भ्रम है कि ये पढ़े-लिखे अमीरों का खजाना है; जी नहीं, ये गरीबों का खजाना है। ये ताकत गरीब को देने वाला है, छोटे व्यापारी को देने वाला है, दूर-सुदूर गांव में रहने वाले किसान को देने वाला है, जंगलों में जिंदगी गुजारने वाले आदिवासी को देने वाला है, और इसलिए इसका नाम उस महापुरुष के साथ जोड़ा है, जिन्होंने अपनी जिंदगी दलित, पीडित, शोषित, वंचित आदिवासियों के लिए खपा दी।

शुरू में कभी-कभी लगता है, आज भी दुनिया के कई समृद्ध देश हैं, पढ़े-लिखे Forward Country हैं, उनको जब पता चलता है कि हिन्दुस्तान में करोड़ों लोग बटन दबा करके वोटिंग करते हैं और जब counting होता है तो दो घंटे में तो रिजल्ट आना शुरू हो जाते हैं, तो दुनिया के कई देशों को अचरज होता है कि अभी तक हम जो चुनाव होता है तो मतपत्र प्रिंट करते हैं, गांव गांव मतदान करने लोग आते हैं, ठप्पा मारते हैं, फिर बक्से में डालते हैं, फिर हम लोग उसका Division करते हैं, Separation करते हैं, उसके बाद counting करते हैं, हमारे यहां तो हफ्ता-हफ्ता लग जाता है। जिस देश को अनपढ़ कहा जाता है, जिस देश के नागरिकों को; उनकी समझ पर कुछ लोग सवालिया निशान उठाते हैं, वो देश दुनिया के सामने गर्व कर सकता है कि Electronic Voting Machine के द्वारा दुनिया में revolution लाने वाले हम लोग हैं और हम इतनी बड़ी मात्रा में सफलतापूर्वक करते हैं।

कभी-कभी मैं हैरान हूं, कुछ लोग होते हैं, कुछ लोग होते हैं जिनके दिलो दिमाग में निराशा से ही उनका जीवन आरंभ होता है, उनका सुबह भी निराशा से होती है। ऐसे निराशावादी लोगों के लिए अभी तो कोई औषध available नहीं है। तो ये निराशावादी लोगों को उनकी निराशा उनको मुबारक। कोई कल्पना कर सकता है, हिन्दुस्तान में एक जमाना था; आप लोगों ने पुराने जमाने की movie देखी होगी, तो share market में व्यापारी इकट्ठे हो करके चिल्लाते थे, ऐसे-ऐसे अंगुलियां कर करके वो अपना शेयर बाजार में दाम बोलते थे और उसको लिखने वाले फिर दूर से Tie करते हैं, ये वो बोली बोल रहा है, वो ये बोली बोल रहा है; एक जमाना ऐसा था।

आपने देखा होगा पहले share market के अंदर कोई Investment करते थे तो बड़े बड़े Share certificate आते थे, उसको संभालना पड़ता था, घर में कोई ध्यान रखता था कि देखो share लिए थे तो क्या हुआ कोई दाम बढ़ा, कम हुआ? आज हिन्दुस्तान किस प्रकार से बदल को स्वीकार कर चुका है, करोड़ों करोड़ों लोग Stock Market से De mat Account से अपना पूरा कारोबार Online करते हैं, मध्यम और निम्न मध्यम वर्ग के लोग उसमें अपना Investment करते हैं, और वे कोई कागज का टुकड़ा नहीं, अरबों-खरबों रुपयों का कारोबार चल रहा है, लेकिन इस देश के अंदर; शायद हो सकता है आज मैंने कहा तो कुछ लोग जाग जायेंगे, खोजने के लिए जायेंगे कि मोदी जो कह रहा था सच है कि गलत है। क्या सचमुच में, सचमुच में शेयर बाजार के अंदर सब Online होता है क्या? क्योंकि अब तक किसी का ध्यान ही नहीं गया, ये हो चुका है, ये हो चुका है, लेकिन ध्यान नहीं गया। लेकिन इन दिनों जब मैं कहता हूं कि E-payment के लिए तो लोगों को लगता है ये कुछ नया लाया है मोदी, गड़बड़ लगता है। और इसलिए बड़े-बड़े लोग, ऊंचे-ऊंचे पदों पर रहे हुए लोग, वे भी अपने; बड़ी मृदु भाषा में बोलते हैं, Softly बोलते हैं, कि ये कैसे हो सकता है, देश अनपढ़ है, Mobile Phone कहाँ है; ऐसा बोलते हैं। इसलिए ये निराशा में पले-बढ़े लोगों के लिए मेरे पास कोई औषध नहीं है, लेकिन आशावादी लोगों के लिए मेरे पास हजारों अवसर हैं।

भाइयो, बहनों, आज कोई धोबी सोच सकता है क्या कि वो बैंक से लोन ले सकता है? कोई छोटा सा हज्जाम की दुकान चलाने वाला बाल काटने वाला व्यक्ति, वो सोच सकता है कि मुझे बैंक से लोन मिल सकता है? कोई अखबार की पस्ती इकट्ठी करने वाला या अखबार बेचने वाला सोच सकता है? वो कल्पना ही नहीं कर सकता कि बैंक में मैं जाऊंगा, पैसे मिल सकते हैं। सोच ही नहीं सकता, क्योंकि हमने हालत ऐसे बनाकर रख दिए हैं।

ये जो मैं Digital Payment की बात करता हूं, वो कैसा revolution लायेगा और जब ये BHIM, ये BHIM सामान नहीं है, आपके परिवार की वो आर्थिक महासत्ता बनने वाला है, कैसे? मान लीजिए धोबी आज, उसके पास लोग आते हैं, कपड़े drycleaning, ढिंगड़ा, फलाना कराके जाते हैं, शाम को वो 500-1000 रुपया कमा लेता है, घर ले जाता है अपना गल्ला, लेकिन जिस दिन वो Digital Payment लेना शुरू करेगा, तो उसका पूरा Track Record तैयार हो जाएगा, उसका Mobile Phone बोलेगा कि रोज का 800-1000 रुपये आते हैं, 100-200 रुपये बचते हैं, फिर उसको अगर बैंक से लोन लेगा होगा तो बैंक को कहेगा देखा भाई मेरे Mobile को चैक कर लीजिए, मेरे Account में इतना पैसों की लेन-देन चलती है। अब मुझे जरूरत है एक पांच हजार रुपया चाहिए, दे दीजिए। ये व्यवस्था ऐसी होगी कि आज उसको साहूकार के पास ऊंचे ब्याज से पांच हजार रुपया लेना पड़ता है, वो अपने Mobile Phone से वो दिन दूर नहीं होगा; 5 मिनट के भीतर-भीतर 5 हजार रुपये उसके खाते में मिल जायेंगे। ये E-banking की व्यवस्था develop होने वाली है, ये दिन दूर नहीं होगा दोस्तो। ये होने वाला है। और इस काम को आगे बढ़ाने के लिए एक Common Platform आज BHIM के रूप में देशवासियों को 2016 के साल के आखिर में जब मैं गया हूं तो एक प्रकार से 2017 का ये उत्तम से उत्तम ये नजराना मैं दे रहा हूं।

भाइयो, बहनों आज से तीन साल पहले के अखबार उठा लीजिए, पुराने अगर You tube पर जायेंगे, जो पुराने TV News के Clipping पड़े हों जो वो देख लीजिए, क्या आता है, कितना गया, कोयले में कितना गया, 2 G में कितना गया, हैं खबर यही रहती थी कितना गया। आज लोग देखें यार आज कितना आया। देखिए वक्त-वक्त की बात है। यही देश, यही लोग, यही कानून, यही सरकार, यही फाइलें, यही

नियम; वो भी एक वक्त था जब गए की चर्चा होती थी, ये भी एक वक्त है आने की चर्चा हो रही है; लोग हिसाब लगा रहे हैं Monday को इतना आया Tuesday को कितना आया।

अगर भाइयो, बहनों देश के गरीबों के लिए अगर जज्बा हो, उनके प्रति समर्पण हो तो सब चीज अच्छी करने के लिए ईश्वर भी ताकत देता है। मैं हैरान हूँ एक नेता ने बयान दिया, उन्होंने कहा खोदा डूंगर और निकाली चुहिया, भाई मुझे चुहिया ही निकालनी थी; वो ही तो सब खा जाती है चोरी-छुपी से। किसान मेहनत करके, किसान मेहनत करके अनाज का ढेर करे, दो चुहियां आ जाएं साहब, सब खत्म कर जाती हैं। तो जिस नेताजी ने जो कहा मैं उनका धन्यवाद करता हूँ कि कम से कम सच तो बोले, ये चुहियां पकड़ने का ही काम है जो देश का, गरीब का धन खा जाते थे; वो चुहियां पकड़ने का ही काम है वो चल रहा है और तेज गति से चल रहा है।

भाइयो, बहनों, मैं इस समय Media के मित्रों का भी आभार व्यक्त करना चाहता हूँ। आपको मालूम होगा जो चीज Media के लोग ठान लें तो उसका एक असर पैदा होता है। जब लोग लाल लाइट वाली गाड़ियों में घूमने के शौकीन हुआ करते थे तो Media वाले पीछे पड़ गए। कैमरा ले गए, अच्छा ये लाल लाइट लगा के बैठा है। धीरे-धीरे जिसको लाल लाइट का हक था ना वो भी डरने लगा यार छोड़ो। बहुत लोग थे सरकार कहे, कानून कहे Seat belt लगाओ, Seat Belt लगाओ, कोई नहीं लगाता था। Media वाले पीछे पड़ गए, कोई कार में बैठा है बड़ा आदमी; तो तुरंत निकालते थे, इसने Seat Belt नहीं लगाया, फिर दूसरे दिन टीवी पर दिखाते थे, तो उसकी मुंडी इतनी हो जाती थी। वो Seat belt का awareness आया।

कभी Helmet के लिए सरकार कहती है कि भाई जिंदगी बचाने के लिए जरा Helmet लगाओ, ये करो, सुनते नहीं; लेकिन Media के लोग कोई पुलिसवाला बिना Helmet जाता था तो पकड़ते थे टीवी पे और दिखाते थे तो वो फिर कांपने लगते थे। लोग भी जाते थे, दिखाई देखो ये जा रहा है। सरकार भी जागती थी, पुलिस भी जागती। ये, ये सेवा कम नहीं है जी, ये सेवा बहुत बड़ी है।

एक ऐसी जागरूकता आई, Even स्वच्छता का अभियान, कोई Media के लोग स्वच्छता रखनी चाहिए ये कहें अलग बात है, लेकिन मैंने देखा वो सुबह शाम उनके कैमरा के लोग उन जगह पर घूमते थे और कोई डालता था तुरंत पकड़ करके फिर उसका इंटरव्यू करते थे। तो फिर वो ऐसे भागता नहीं, नहीं मेरा इरादा नहीं था, मैंने देखा नहीं था। वो कहते थे देख दिखता है कि नहीं दिखता है; तो भागता था। देखिए मैं मानता हूँ हमारे देश के Electronic Media ने, ऐसे तो मैं ढेर सारी चीजें गिना सकता हूँ क्योंकि मैं आशावादी सोच वाला इंसान हूँ तो मुझे उसमें से अच्छा-अच्छा दिखता है। कुछ लोगों को शिकायत करने का मन करता है कि ऐसा क्यों करते हैं; मुझे नहीं करता है। मुझे लगता है अच्छा करते हैं। और इसलिए आने वाले दिनों में Media बहुत बड़ी सेवा कर सकता है।

पिछले 50 दिनों देखा होगा आपने, मैं भाषण करता था कि Digital करना चाहिए, Mobile करना चाहिए तो मुझे दिखाते थे और बगल में कोई Pedal Rickshaw वाले को पूछते थे कि तेरे पास Mobile है? वो कहता था नहीं है। तुम Cashless जानते हो, बोले नहीं। फिर वो मुझे... ए मोदी! और उसके कारण सरकार को भी सोचना पड़ा कि हां भाई Feature Phone में भी किया जाना चाहिए, अंगूठे में भी banking आना चाहिए। आया कि नहीं आया? तो बोले Media को मैं Thank You कहूँ कि ना कहूँ? इसीलिए मैं उनको Thank You कहता हूँ। लेकिन मुझे विश्वास है आप लोग चेत करके रहिए। अब Media वाले एक तारीख के बाद आपके हाथ में Mobile देखेंगे, कैमरा खड़ा करके पूछेंगे तेरे पास Mobile है; है। BHIM है Cash लेके क्यों घूम रहा है? पढ़े लिखे हो क्या कर रहे हो? आप देखना 2017 में Media के लोग आपको पूछने वाले हैं। सब हिन्दुस्तान वालों को पूछने वाले हैं कि दो-दो Mobile Phone ले करके घूम रहे हो, फिर भी तुम Cashless नहीं हो रहे हो? इसी से revolution आता है, क्रांति इसी से होती है। और मुझे विश्वास है कि देश विश्व के आधुनिक देशों की तुलना में technology के क्षेत्र में और technology के साथ Common man की connectivity, ये होके रहने वाला है।

भाइयो, बहनों! मैं साफ मत का हूँ। हमारा देश ऐसे ही सोने की चिड़िया नहीं था। हमारा देश ऐसे ही सोने की चिड़िया मैं से गरीब नहीं बना है। हमारी अपनी कमियों के कारण, अपनी गलतियों के कारण, अपने गलत आचरण के कारण सोने की चिड़िया कहा जाने वाला देश गरीब देश की गिनती में आकर खड़ा हो गया। लेकिन इसका मतलब ये है कि आज भी इस देश में फिर एक बार सोने की चिड़िया बनने का Potential पड़ा हुआ है। इस सपने के साथ, इस विश्वास के साथ क्यों न हम, क्यों न हम देश के गरीबों को उनका हक दिलाएं, मध्यमवर्गीय लोगों का जो शोषण हो रहा है उसको रोके। ईमानदारी के रास्ते पर देश चलना चाहता है, उसको हम बल दें।

भाइयो, बहनों! मैं जानता हूँ, आज लोग इसका मूल्यांकन करने की न हिम्मत करेंगे, न ही शायद उतना सामर्थ्य होगा, लेकिन वो दिन दूर नहीं होगा जब इस सारे घटनाक्रम का मूल्यांकन होगा, इतिहास की तारीखों में जब मढ़ा जायेगा तब एक बात उजागर होने वाली है, हमारा देश; कभी कहा जाता था यूनान, मिस्र मिट गए, लेकिन क्या बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी! ये वो कौन सी बात है? ये कौन सी बात है कि हस्ती हमारी मिटती नहीं!

भाइयो, बहनों! आप अपने कार्यकाल में भी देखा होगा, जो छोटी आयु के हैं उन्होंने भी देखा होगा, जब भी हमारे देश में कोई बाहरी हमला होता है, कोई बाहरी जुलूम होता है, कोई बाहर से कुछ कह देता है तो पूरा हिन्दुस्तान एकजुट हो करके उसके खिलाफ मुकाबला करने के लिए तैयार हो जाता है; ये हमने कई बार देखा है। लेकिन पहली बार इस देश ने इस बात को अनुभव किया है और जो इतिहास में स्वर्णिम

अक्षरों से लिखा जाएगा। ये देश अपनी अंदर की बुराइयों को खत्म करने के लिए एक हुआ दोस्तो! अपने आप से लड़ने के लिए एक हुआ! अपने आप से लड़ने के लिए आगे आया, अपनी बुराइयों को परास्त करने के लिए सवा सौ करोड़ देशवासी इतना कष्ट झेलने के लिए आए, तकलीफ के बाद भी हंसते हुए कहें।

भाइयो, बहनों! यही तो इस देश की ताकत है कि हम अपनी बुराइयों को खत्म करने के लिए खुद हो करके आगे आते हैं, समय मिलते ही निकल पड़ते हैं और करके रहते हैं। ये आठ तारीख के बाद देश ने इस का ताकत का दर्शन कराया है, जो देश की अनमोल ताकत है। अपनी बुराइयों के खिलाफ लड़ना ये सामान्य बात नहीं है। सवा सौ करोड़ देशवासी और ये भी सही है कि बुराईयां कुछ लोगों ने स्वेच्छा से स्वीकार की होंगी, कुछ लोग मजबूरन उसके शिकार हुए होंगे, लेकिन इच्छा-अनिच्छा से भी ये दीमक की तरह फैल गई है। और इसलिए दीमक की तरह फैली हुई बेईमानी की बीमारी समाज में भी कभी तो ऐसा लगता था कि लोग शायद इसे जीने की आदत बना लेंगे लेकिन आठ नवम्बर के बाद मैंने देखा कि लोग मौके की तलाश में थे। ऐसी जिंदगी उनको नहीं चाहिए। उनको ईमानदारी की जिंदगी चाहिए, उनको ईमानदारी का रास्ता चाहिए और ये देशवासियों ने, ये देशवासियों ने करके दिखाया है।

और भाइयो, बहनों! मैं विश्वास से कहता हूँ ये जो सारी मेहनत हो रही है, और ये काम छोटा नहीं है; दुनिया को अचरज हो रहा है कि 86 percent currency एकदम से व्यवहार से निकल जाए, दुनिया आज इस पर सोच नहीं सकती, देश कैसा है! कैसे लोग हैं! और देखो जी रहे हैं! सोच रहे हैं आगे बढ़ना है। ये देश की कोई सामान्य ताकत नहीं है; और ये ताकत देशवासियों ने दिखाई है। और यही ताकत है जो आने वाले दिनों में देश को आगे ले जाने वाली है।

भाइयो, बहनों! और मेरा मत है, इस देश, इस देश के धन पर, इस देश की संपदा पर इस देश के गरीब का हक सबसे पहले होना चाहिए। गरीबी के खिलाफ लड़ाई नारों से नहीं होती है। आप देखिए, मैंने देशवासियों से एक प्रार्थना की थी, कहा था कि आप अगर आर्थिक रूप से अगर आपको ज्यादा नुकसान नहीं होता तो आप LPG की Subsidy छोड़ दीजिए।

ये देश जो कभी 9 सिलेंडर और 12 सिलेंडर पर 2014 के चुनाव का Agenda लेकर चल रहा था, एक पार्टी इस बात के मुद्दे पर चुनाव लड़ रही थी कि 9 सिलेंडर देंगे कि 12 सिलेंडर देंगे। जिस देश में पूरा चुनाव सिलेंडर की संख्या पर लड़ा गया हो, इस देश के अंदर एक सरकार आ करके लोगों को ये कहे कि Subsidy छोड़ दो, कितना बड़ा Contrast! हम आपको 12 सिलेंडर दे दो वोट दे दो, ये दूसरा ऐसा आया वो कहता है सिलेंडर की Subsidy छोड़ दो!

और मैं आज सिर झुका करके मेरे देशवासियों के सामने नमन करते हुए कहना चाहता हूँ एक करोड़ बीस लाख लोगों से ज्यादा परिवारों ने अपनी Subsidy छोड़ दी। और मैंने वादा किया था कि आप जो Subsidy छोड़ रहे हैं, मैं उस गरीब मां को दूंगा, जिस गरीब मां को लकड़ी के चूल्हे से, धुएँ के आग में अपने बच्चों के साथ गुजारा करना पड़ता है। उस गरीब मां को एक दिन में 400 सिगरेट का धुआँ अपने शरीर में लेना पड़ता है। उस मां के स्वास्थ्य का क्या होता होगा; आप अपनी Subsidy छोड़ दीजिए, मैं ये सिलेंडर उस गरीब मां को देना चाहता हूँ जो लकड़ी का चूल्हा जला करके खाना पकाती है। और आज, आज मैं देशवासियों को कहना चाहता हूँ कि एक करोड़ बीस लाख लोगों ने Subsidy छोड़ी; अब तक डेढ़ करोड़ गरीब माताओं को गैस सिलेंडर हम दे चुके हैं। कहने का तात्पर्य ये है कि जो भी आ रहा है, अब जा नहीं रहा है। ये जो भी आ रहा है, गरीब के काम आने वाला है; गरीब की भलाई के लिए काम आने वाला है।

देश को बदलना है दोस्तों! देश के सामान्य मानवी की जिंदगी बदलेगी, तब देश बदलने वाला है। और जब मैं आज पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जन्म शताब्दी मना रहा हूँ, और भारत सरकार ने गरीब कल्याण वर्ष के रूप में इसको मनाना तय किया है तब ये सारा परिश्रम गरीबों को समर्पित है; उनके कल्याण को समर्पित है; मध्यम वर्ग के व्यक्ति को उसका हक दिलाने के लिए समर्पित है; उनके शोषण से मुक्ति दिलाने के लिए समर्पित है और मुझे विश्वास है कि देश ने जिस प्रकार से आशीर्वाद दिए हैं, कष्ट झेल करके आशीर्वाद दिए हैं; आने वाले दिनों में इस बदलाव के हकदार भी वही होने वाले हैं।

मैं फिर एक बार फिर उस ईनाम को प्राप्त करने वालों को बधाई देता हूँ, मैं देशवासियों से आग्रह करता हूँ कि 2017 के पहली जनवरी को आप कम से कम एक जनवरी से शुरू करिए, अगर आपके पास Mobile Phone है, Smart Phone है, कम से कम पांच लेनदेन तो करिए। हर हिन्दुस्तानी एक बार पांच लेनदेन करना देखें तो फिर उसको आदत हो जाएगी और देश Digital Moment को Lead कर जाएगा। मैं फिर एक बार सबको बहुत-बहुत बधाई देता हूँ, बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ।

हिमांशु सिंह/ निर्मल शर्मा

